शर्मा हार्डवेयर
SHARMA HARDWARE
Sharma Gali, SJ Road
Athgaon, Guwahati-01
98648-02947

E-Paper : www.goodluckpublications.com, • www.vbslive.in
हिंदी दैनिक
गुवाहाटी, नई दिल्ली, शिमला और जम्मू से एकसाथ प्रकाशित

विकसित भारत समाचार

राष्ट्र निर्माण में प्रयत्नशील

वर्ष : 11 | अंक : 101 | गुवाहाटी | शनिवार, 9 नवंबर, 2024 | मूल्य : 10 रुपए | पृष्ठ : 8 | VIKSIT BHARAT SAMACHAR | Regd. RNI No. ASSHIN/2014/56526

भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए व्यापक दृष्टिकोण अपनाना होगा : राष्ट्रपति — पेज 2
राज्यपाल ने माजुली सांस्कृतिक विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत... — पेज 3
हरियाणा में दो लाख लोगों को मिलेंगे सौ-सौ गज के प्लॉट : मुख्यमंत्री — पेज 5
हैदराबाद में तेलुगु टाइटन्स के प्रशंसकों के सामने खेलना याद रहेगा : पवन सेहरावत — पेज 7

Door graphy
S.S. Traders
Suppliers in : All kinds of Door Fittings Modular Kitchen & Accessories, etc.
D. Neog Path, Near Dona Planet ABC, G.S. Road, Guwahati - 05
97079-99344

सुप्रभात

आग में आग नहीं डालनी चाहिए। अर्थात क्रोधी व्यक्ति को अधिक क्रोध नहीं दिलाना चाहिए।

– आचार्य चाणक्य

अनुच्छेद 370 कभी वापस नहीं आएगा

कश्मीर में लागू रहेगा बाबा साहेब का संविधान : मोदी

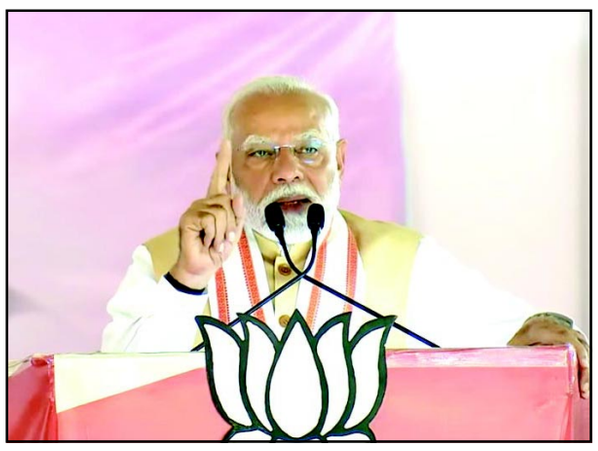

नई दिल्ली (हि.स.)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कश्मीर विधानसभा में अनुच्छेद-370 को लेकर छिड़े विवाद पर कहा कि अनुच्छेद-370 कभी वापस नहीं आएगा। उन्होंने कहा कि कश्मीर में बाबा साहेब का संविधान लागू रहेगा और कोई भी ताकत इसे बदल नहीं सकती। प्रधानमंत्री ने महाराष्ट्र के धुले में भाजपा की एक चुनावी जनसभा में महात्मा गांधी के विजन को याद करते हुए कहा कि आजादी के बाद, गांधीजी चाहते थे कि कांग्रेस भंग हो जाए, क्योंकि उन्होंने इसकी विभाजनकारी प्रकृति को देखा था। कांग्रेस पर हमला तेज करते हुए मोदी ने कहा कि कांग्रेस हमेशा से ही राष्ट्र-विरोधी षड्यंत्रों का हिस्सा रही है। इसका एक प्रमुख उदाहरण जम्मू और कश्मीर है, जहां कांग्रेस ने अनुच्छेद-370 के साथ इसे देश से अलग कर दिया, दलितों और हाशिए के समुदायों को उनके अधिकारों से वंचित किया और आतंकवाद और अलगाववाद का समर्थन किया। हमने अनुच्छेद 370 को निरस्त करके इसे समाप्त कर दिया, जो भारत के सबसे महान निर्णयों में से एक था। लेकिन अब, कांग्रेस और उसके सहयोगी इसे वापस लाने की साजिश कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कांग्रेस पर दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों को विभाजित करने का आरोप लगाते हुए कहा कि कांग्रेस ने हमेशा इन समुदायों की प्रगति का विरोध किया और उनकी एकता को कमजोर करने की कोशिश की है। मोदी ने कहा कि आजादी के दौरान, डॉ. अंबेडकर ने शोषितों के लिए आरक्षण की लड़ाई लड़ी, लेकिन नेहरू ने इसका विरोध किया। आरक्षण पाने के लिए लंबा संघर्ष करना पड़ा। नेहरू के बाद भी इंदिरा गांधी और राजीव गांधी इसका विरोध करते रहे। उनका लक्ष्य एससी, एसटी और ओबीसी समुदायों को कमजोर रखना था। प्रधानमंत्री मोदी ने कांग्रेस पर भील, कोकना, वारली और अन्य आदिवासी समुदायों को विभाजित करने और उनकी एकता को कमजोर करने का प्रयास करने का आरोप लगाते हुए कहा कि उनके विभाजनकारी एजेंडे का उद्देश्य आदिवासी समुदायों की सामूहिक ताकत को नष्ट करना है। कांग्रेस की योजना का मुकाबला करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने दोहराया एक हैं तो सेफ हैं। मोदी ने कहा कि महाराष्ट्र आर्थिक विकास के पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। महायुति सरकार महिलाओं, युवाओं और आदिवासियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए हर वर्ग के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। निरंतर प्रगति के लिए आपका समर्थन महत्वपूर्ण है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि जब महिलाएं आगे बढ़ती हैं, तो समाज भी आगे बढ़ता है। पिछले एक दशक में हमारी सरकार ने सभी बड़े फैसलों में महिलाओं को प्राथमिकता दी है। प्रधानमंत्री ने कहा कि कुछ लोग केवल शोषण करने के लिए राजनीति में प्रवेश करते हैं। महा-अघाड़ी के शासन ने विकास को रोक दिया, हर परियोजना को भ्रष्टाचार से भर दिया और मेट्रो परियोजनाओं, वधावन बंदरगाह और समृद्धि महामार्ग जैसी महत्वपूर्ण पहलों को अवरुद्ध कर दिया है। उन्होंने आश्वासन देते हुए कहा कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे -शेष पृष्ठ दो पर

कांग्रेस को वोट देना देश को पीछे ले जाना है : सोनोवाल

सिडली/बंगाईगांव (हि.स.)। केंद्रीय मंत्री सर्वानंद सोनोवाल ने आज सिडली विधानसभा क्षेत्र के बसुगांव और विद्यापुर में मैराथन अभियान चलाया और असम विधानसभा उपचुनाव के मद्देनजर लोगों से व्यापक उत्साह और प्रतिक्रिया देखी। उन्होंने सिडली विधानसभा क्षेत्र में एनडीए समर्थित यूपीपीएल उम्मीदवार निर्मल कुमार ब्रह्म और बंगाईगांव विधानसभा क्षेत्र में एनडीए समर्थित असम गण परिषद उम्मीदवार दीप्तिमय चौधरी के समर्थन में चुनावी रैलियों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि भारत के राजनीतिक इतिहास में केवल भारतीय जनता पार्टी और गठबंधन ने ही सभी वर्गों के लोगों के लिए व्यापक विकास, समानता, समृद्धि, समानता, शांति, सुधार और सद्भाव हासिल किया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सशक्त नेतृत्व में एनडीए सरकार -शेष पृष्ठ दो पर

लोकपाल ने सेबी प्रमुख से मांगा जवाब

नई दिल्ली। लोकपाल ने शुक्रवार को सेबी प्रमुख माधबी पुरी बुच से उन पर लगे आरोपों पर जवाब मांगा है। आरोप हैं कि बुच ने अपनी स्थिति का दुरुपयोग किया और उनके निजी हितों और सेबी के कामों के बीच टकराव था। हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट के आधार पर एक लोकसभा सदस्य और दो अन्य ने बुच के खिलाफ शिकायतें दर्ज कराई हैं। जिस पर लोकपाल ने बुच से स्पष्टीकरण मांगा है। एक आधिकारिक आदेश में यह जानकारी दी गई। हालांकि, लोकपाल ने यह भी स्पष्ट किया -शेष पृष्ठ दो पर

राहुल पर हिमंत ने लगाया हिंदू समाज को बांटने का आरोप

रांची। असम के सीएम और झारखंड भाजपा के सह-प्रभारी हिमंत विश्व शर्मा ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर पलटवार किया है। हिमंत विश्व शर्मा ने आरोप लगाया कि राहुल गांधी ने हिंदू समाज को बांटने की जो साजिश रची है, ऐसा तो अंग्रेजों ने भी नहीं किया था। उन्होंने कहा कि हमारे समाज के दुश्मन राहुल गांधी समाज को बांटना चाहते हैं। शर्मा ने दावा किया कि हेमंत सोरेन घुसपैठियों के लिए काम करते हैं। वह आदिवासी समाज के कल्याण के लिए काम नहीं करते। राहुल पर अपना हमला जारी रखते हुए हिमंत विश्व शर्मा ने कहा कि वह -शेष पृष्ठ दो पर

न्यूज गैलरी

केजरीवाल वीवीआईपी कल्चर के सबसे बड़े प्रतीक : भाजपा

नई दिल्ली (हि.स.)। भारतीय जनता पार्टी ने शुक्रवार को आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल पर भ्रष्टाचार करने और वीवीआईपी कल्चर अपनाने का आरोप लगाया है। पार्टी का कहना है कि साइज में बड़े कपड़े पहनकर आम आदमी होने का दावा करने वाले आआपा नेता रहते आलीशान -शेष पृष्ठ दो पर

पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में धुंध को आपदा घोषित किया गया

लाहौर (हि.स.)। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत का बड़ा हिस्सा इस समय दूषित (जहरीली) हवा की गिरफ्त में है। प्रांत की राजधानी लाहौर भी इससे अछूती नहीं है। हाल यह है कि 24 घंटे पहले कुछ जगह वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 1,000 के स्तर को पार कर गया। प्रांतीय सरकार ने गंभीरता को देखते हुए आज कड़े प्रतिबंध की घोषणा की। स्कूल तो पहले ही बंद किए जा चुके हैं। -शेष पृष्ठ दो पर

हेमंत सरकार को आदिवासी समाज कभी माफ नहीं करेगा : हिमंत

सिमडेगा (हि.स.)। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने शुक्रवार को झारखंड के सिमडेगा में भाजपा प्रत्याशी श्रद्धानंद बेसरा और सुजान जोजो के लिए जनता का समर्थन मांगा। इस दौरान उन्होंने हेमंत सरकार पर जमकर निशाना साधा। साथ ही कहा कि हेमंत सरकार न आदिवासियों के लिए काम कर रही है, न यहां की जनता के लिए। कांग्रेस, जेएमएम की सरकार केवल आलमगीर आलम और इरफान अंसारी के लिए काम कर रही है। शर्मा ने कहा कि झारखंड के आदिवासी समाज जेएमएम और कांग्रेस को कभी माफ नहीं करेगा। इसलिए हेमंत सरकार का परिवर्तन कर झारखंड में भाजपा की सरकार बनानी जरूरी है। उन्होंने कहा कि 2019 में चुनाव के समय हेमंत सोरेन ने अपने पिता का कसम खाकर युवाओं को नौकरी देने का वादा किया था, वह झूठा साबित हुआ। जेएमएम सरकार ने किसी युवा को नौकरी नहीं दी। हेमंत सोरेन ने यूजी और पीजी के युवाओं को नौकरी नहीं मिलने तक 5000 -शेष पृष्ठ दो पर

उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ छठ महापर्व का समापन

पटना (हि.स.)। देश-दुनिया में लोक आस्था के छठ महापर्व का चौथे दिन आज सुबह छठवर्तियों के उगते सूर्य भगवान को अर्घ्य देने के साथ समापन हो गया। इसके बाद सभी छठ व्रतियों ने व्रत का पारण किया। मान्यता है कि सूर्योदय के समय अर्घ्य देने से सुख-समृद्धि, सौभाग्य, संतान प्राप्ति की मनोकामना और संतान की रक्षा का वरदान मिलता है। छठ महापर्व के आखिरी दिन सूर्योदय के दौरान अर्घ्य देते समय मंत्र-ओम एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पते, अनुकंपय माम् भक्तया गृहाणार्घ्यम् दिवाकर का जाप किया गया। महापर्व छठ का चार दिवसीय अनुष्ठान मंगलवार को नहाय-खाय के साथ आरंभ हुआ था। पहले दिन व्रतियों ने यहां गंगा स्नान के साथ सूर्यदेव को जल से अर्घ्य दिया। इसके बाद पूरी पवित्रता के साथ अरवा चावल, चना दाल, कद्दू की सब्जी और आंवले की चटनी आदि का भोग लगाकर प्रसाद तैयार किया। बुधवार को खरना पूजन के दिन व्रतियों ने पूरे दिन उपवास कर शाम में भगवान का भोग लगाकर प्रसाद ग्रहण किया। इसके बाद 36 घंटे का निर्जला उपवास शुरू हुआ। गुरुवार को व्रतियों ने डूबते सूर्य को अर्घ्य दिया। आज उदीयमान सूर्य को नदी-तालाब या अन्य जल स्रोतों के बीच खड़े होकर अर्घ्य देने के साथ ही छठ का चार दिवसीय अनुष्ठान पूरा हो गया। छठ व्रतियों ने अनुष्ठान के समापन की पूर्व संध्या पर अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य दिया। इस दिन षष्ठी तिथि को छठी मैया का पूजन विधि-विधान के साथ हुआ। सात नवंबर को -शेष पृष्ठ दो पर

चीफ जस्टिस ने अपने विदाई समारोह में कहा-

मैं ट्रोल किए जाने वाले जजों में से एक

नई दिल्ली (हि.स.)। चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन की ओर से आयोजित अपने विदाई समारोह में कहा कि मैं सबसे अधिक ट्रोल किए जाने वाले जजों में से एक हूं। उन्होंने कहा कि सवाल तो अब उन ट्रोल करने वालों के लिए है, जो 11 नवंबर से क्या करेंगे। इस मौके पर सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष कपिल सिब्बल ने सीजेआई के कार्यकाल में किये गए अहम फैसलों का उल्लेख करते हुए धन्यवाद दिया। इसके बाद सीजेआई को बार एसोसिएशन की तरफ से सम्मानित किया गया। चीफ जस्टिस ने बशीर बद्र का एक शेर पढ़कर ट्रोल करने वालों को जवाब दिया। उन्होंने जो शेर पढ़ा वो है मुखालिफत से मेरी शख्सियत संवरती है मैं दुश्मनों का बड़ा एहतराम करता हूं। अपने विदाई समारोह को संबोधित करते हुए भारत के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा कि सूर्य का प्रकाश सबसे अच्छा कीटाणुनाशक है। मैं जानता हूं कि मैंने कई तरीकों से अपने निजी जीवन को सार्वजनिक -शेष पृष्ठ दो पर

महिलाओं के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी

सीईसी ने अधिकारियों को दिए सख्ती से निपटने के निर्देश

मुंबई। मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) राजीव कुमार ने चुनाव प्रचार के दौरान महिलाओं के खिलाफ की गई नेताओं की अपमानजनक टिप्पणियों की निंदा की। उन्होंने अधिकारियों को ऐसी टिप्पणियों के खिलाफ समय पर सख्त कार्रवाई करने का निर्देश दिया। महाराष्ट्र के मुख्य चुनाव कार्यालय के सूत्रों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। सूत्रों ने बताया कि एक समीक्षा बैठक के दौरान कुमार ने महिलाओं के सम्मान और गरिमा के खिलाफ की गई अपमानजनक -शेष पृष्ठ दो पर

पाकिस्तान हिंदुओं पर कर रहा जुल्म, पत्रकारों को दी जा रहीं यातनाएं, एनएचआरसी ने जताई चिंता

जिनेवा। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार समिति (यूएनएचआरसी) की ओर से जारी एक रिपोर्ट में पाकिस्तान में मानवाधिकार की स्थिति को लेकर गंभीर चिंता जताई गई है। साथ ही कहा गया है कि भेदभाव, हिंसा और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबंधों को लेकर सुधारों की तुरंत जरूरत है। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार समिति ने पाकिस्तान में हिंदुओं, ईसाइयों और अहमदियों सहित अन्य धार्मिक अल्पसंख्यकों को निशाना बनाए जाने, उनके साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार करने और उनके खिलाफ घृणा अपराधों में वृद्धि को बेहद चिंताजनक बताया है। इसके साथ ही समिति ने पूजा स्थलों को निशाना बनाने के साथ ही भीड़ हिंसा और उत्पीड़न की बढ़ती घटनाओं के को लेकर भी चेताया गया है। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार समिति ने कहा कि ईशनिंदा कानून के कारण जेल में -शेष पृष्ठ दो पर

गुजरात में 12 साल पुरानी कार का अंतिम संस्कार, चार लाख खर्च कर बनाई समाधि

अमरेली। अपनी किसी वस्तु से गहरा भावनात्मक लगाव होने की ऐसी मिसाल देखने को नहीं मिलती। गुजरात के अमरेली जिले के एक किसान परिवार ने अपनी पुरानी पर लकी कार को स्क्रैप में डालने की अनिच्छा के चलते उससे बिछड़ने की प्रक्रिया को एक खूबसूरत मोड़ दे दिया। उन्होंने पूरे विधि-विधान से अपनी 12 साल पुरानी वैगन आर कार का अंतिम संस्कार कर दिया। भोज के इस आयोजन में उन्होंने चार लाख रुपए से अधिक की रकम खर्च की। गुजरात के अमरेली जिले के लाठी तालुका के पादरशिंगा गांव के संजय पोलारा और उनके परिवार ने गुरुवार को अपने खेत में अपनी -शेष पृष्ठ दो पर

एक ओके से स्टेशन मास्टर की जिंदगी बनी नर्क

पत्नी से तलाक तक पहुंची बात, रेलवे को हुआ तीन करोड़ का नुकसान

नई दिल्ली। कर्मचारियों की लापरवाही के कारण रेलवे को वित्तीय नुकसान होने के मामले असामान्य नहीं हैं। हालांकि, एक मामले में, एक कर्मचारी और उसकी पत्नी के बीच एक सहज फोन कॉल असाधारण रूप से महंगी साबित हुई, जिसके परिणामस्वरूप रेलवे को 3 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। काम के घंटों के दौरान अपनी पत्नी से बात करते समय, स्टेशन मास्टर ने एक प्रश्न का आकस्मिक रूप से *ओके* जवाब दिया। इसे एक लोको पायलट द्वारा हरी झंडी के रूप में गलत समझा गया, जिसने फिर ट्रेन को माओवाद प्रभावित क्षेत्र में प्रतिबंधित रास्ते पर रवाना करने के लिए हरी झंडी समझ लिया। यह रात के समय उस इलाके में जाने पर लगे प्रतिबंधों का उल्लंघन था। इसकी वजह से रेलवे को 3 करोड़ रुपए का नुकसान उठाना पड़ा। विभाग ने त्वरित कार्रवाई करते हुए निर्णय में चूक के लिए स्टेशन मास्टर को निलंबित कर दिया। स्टेशन मास्टर द्वारा अपनी पत्नी के साथ तीखी फोन कॉल को ओके शब्द का उपयोग करके समाप्त करने के प्रयास के अप्रत्याशित परिणाम हुए। उनके शब्द को गलती से नक्सल प्रभावित क्षेत्र में ट्रेन भेजने के लिए प्राधिकरण के रूप में समझा गया, -शेष पृष्ठ दो पर

ट्रंप की जीत से भड़कीं अमेरिकी महिलाएं, शुरू किया 4बी मूवमेंट

वाशिंगटन। अमेरिका में एक बार फिर ट्रंप कार्ड चल गया है। 2024 के राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप ने जीत हासिल की है। लेकिन अमेरिका की महिलाएं ट्रंप की वापसी से बिल्कुल खुश नजर नहीं आ रही हैं। इन महिलाओं ने अब उन पुरुषों का बहिष्कार करना शुरू कर दिया है, जिन्होंने ट्रंप को वोट किया था। दरअसल, इन महिलाओं ने दक्षिण कोरिया के एक फेमनिस्ट मूवमेंट की तर्ज पर ऐसे पुरुषों का बहिष्कार करना शुरू किया है, जिन्होंने चुनाव में ट्रंप को वोट दिया। अमेरिका में इसे फोर बी मूवमेंट का नाम दिया गया। टेलीग्राफ की रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका में कई महिलाओं ने ट्रंप को व्हाइट हाउस -शेष पृष्ठ दो पर

CLASSIFIED

For all kinds of classified advertisements please contact

97070-14771
86382-00107

MURTI AVAILABLE

Available all kinds of Marble & White Metal Murties, Ganesh Laxmi, Radha Krishna, Bishnu-Laxmi, Hanuman, Maa Durga, Saraswati, Shivling, Nandi etc. **ARTCLE WORLD,** S-29, 2nd Floor, Shoppers Point, Fancy Bazar, Guwahati-01, **Ph. : 94350-48866, 94018-06952**

भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए व्यापक दृष्टिकोण अपनाना होगा : राष्ट्रपति

नई दिल्ली (हि.स.)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने शुक्रवार को भ्रष्टाचार को आर्थिक प्रगति में बाधक बताया और कहा कि इसका व्यापक प्रभाव देश की एकता और अखंडता पर भी पड़ता है। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार के उन्मूलन के लिए व्यापक दृष्टिकोण अपनाना होगा। इस बीमारी की जड़ तक जाना होगा। केवल लक्षणों के जरिये इसे ठीक करना प्रभावी नहीं होगा। उन्होंने विश्वास जताया कि भारत सरकार की *भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस* की नीति भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म कर देगी। राष्ट्रपति आज नई दिल्ली के विज्ञान भवन में केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) के सतर्कता जागरुकता सप्ताह समारोह को संबोधित कर रही थीं। सीवीसी हर वर्ष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में सतर्कता जागरुकता सप्ताह मनाता है। उन्होंने कहा कि सतर्कता जागरुकता सप्ताह का इस वर्ष का सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि विषय अत्यंत उपयोगी है। इस मौके पर राष्ट्रपति के साथ मंच पर सेंट्रल विजिलेंस कमिश्नर (सीवीसी) पीके श्रीवास्तव, विजिलेंस कमिश्नर ए.एस. राजीव और सीवीसी सचिव पी. डेनियल उपस्थित थे। राष्ट्रपति ने कहा कि अगर कोई भी काम सही भावना और दृढ़ संकल्प के साथ किया जाए तो सफलता निश्चित है। कुछ लोग गंदगी को ही हमारे देश की नियति मानते थे लेकिन मजबूत नेतृत्व, राजनीतिक इच्छाशक्ति और नागरिकों के योगदान से स्वच्छता के क्षेत्र में अच्छे परिणाम सामने आए हैं। राष्ट्रपति ने कहा कि इसी तरह कुछ लोगों द्वारा भ्रष्टाचार के उन्मूलन को असाध्य मान लेना एक निराशावादी दृष्टिकोण है। पिछले 10 वर्षों में भ्रष्टाचार उन्मूलन की दिशा में केंद्र सरकार द्वारा उठाये गये कदमों का हवाला देते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर से कल्याणकारी सहायता के वितरण में पारदर्शिता आई है। उन्होंने सार्वजनिक खरीद में ई-टेंडरिंग के प्रावधान और ई-मार्केट प्लेस का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि पिछले 10 वर्षों में धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत सरकार ने 12 अरब डॉलर से अधिक की संपत्तियां जब्त की हैं। राष्ट्रपति ने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि भारत सरकार की भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टोलरेंस की नीति से भ्रष्टाचार जड़ से समाप्त हो जाएगा। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार से मुक्ति का कार्य भी देश की स्वच्छता के अभियान का ही एक रूप है। राष्ट्रपति ने कहा कि भ्रष्ट व्यक्तियों के विरुद्ध त्वरित कानूनी कार्रवाई अत्यंत आवश्यक है।

तेरह मवेशी समेत 6 पशु तस्कर गिरफ्तार

गुवाहाटी (हिंस)। गुवाहाटी के जोराबाट पुलिस चौकी की पुलिस ने पशु तस्करी मामले में शामिल 6 तस्करों को गिरफ्तार करते हुए उनके पास से 13 मवेशियों को बरामद किया है। पुलिस ने बताया कि शुक्रवार की तड़के सुबह गुप्त सूचना के आधार पर चलाए गए अभियान के दौरान पिकअप वाहन (एए-01क्यूसी-6402) को जब्त किया गया। जिसमें 13 मवेशियों को मेघालय के पशु बाजार तक ले जाया जा रहा था। वहीं पिकअप को सुरक्षा प्रदान कर बरपेटा से बर्नीहाट की ओर जा रही कार (एएस-01बीजी-9260) को भी जब्त किया गया है। इस मामले में चार तस्करों को गिरफ्तार किया गया है।

सामागुरी में फिर हुई चुनावी हिंसा

नगांव (हिंस)। सामागुड़ी में फिर से चुनावी हिंसा देखने को मिली है। असम विधानसभा की पांच सीटों के लिए आगामी 13 नवंबर को होने जा रहे चुनाव के मद्देनजर सबसे अधिक तनावपूर्ण स्थिति सामागुड़ी विधानसभा में देखने को मिल रही है। मिली जानकारी के अनुसार बीती रात कांग्रेस के तीन अस्थायी कार्यालयों में तोड़-फोड़ किए जाने का आरोप लगाया जा रहा है। उपचुनाव की पूर्व संध्या पर, सामागुड़ी में उतेजनापूर्ण माहौल बन गया है। दिन-ब-दिन सामागुड़ी में हिंसा की खबरें सामने आ रही हैं। लोग सवाल कर रहे हैं कि क्या सामागुड़ी चुनाव का मतलब हिंसा है? सामागुड़ी में कभी किसी की पिटाई की घटनाएं घट रही हैं तो कभी गाड़ियां तोड़ी जा रही हैं। कांग्रेस द्वारा यह आरोप लगाया जा रहा है कि हमारे कई अस्थायी कार्यालयों को क्षतिग्रस्त किया गया है। कांग्रेस समर्थकों ने कहा है कि उपद्रवियों ने अस्थायी कार्यालय में तोड़फोड़ की और कांग्रेस आवास पर हमला किया। हमले में एक व्यक्ति घायल भी हो गया। ज्ञात हो कि चुनाव की घोषणा के बाद से हिंसा के तीन से चार मामले सामने आ चुके हैं। जिसमें कभी भाजपा ने कांग्रेस पर आरोप लगाया है तो कभी कांग्रेस ने।

अखिल भारतीय रेलवे यात्री उपयोगकर्ता सुविधा महासंघ की बैठक संपन्न

गुवाहाटी। अखिल भारतीय रेलवे यात्री उपयोगकर्ता सुविदा महासंघ की बैठक संपन्न हुई। उल्लेखनीय है कि रेलवे विभाग के तमाम घटनाओं को मद्देनजर उक्त विभाग द्वारा हाल ही में गुवाहाटी महानगर में एक अत्यंत गुरुत्वपूर्ण बैठक में राष्ट्रीय स्तर पर विचार विमर्श करने के अलावा कई गुरुत्वपूर्ण फैसले की गई एवं एक महासंध की भी गठन की गई। महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंडित संजीव नारायण दास की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस बैठक में महासंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मोलोय मुस्ताफी, महासचिव देबजीत सरकार ने बैठक का उद्देश्य व्याख्या की। इसके अलावा उक्त संगठन के नए राष्ट्रीय महासचिव देबाजीत सरकार भी रेलवे सुरक्षा हेतु कई गुरुत्वपूर्ण चर्चा करने के अलावा कुछ प्रस्ताव भी सामने रखे। जिसमें हमारा संगठन आम यात्रियों के व्यापक हित के साथ-साथ आम यात्रियों के स्वास्थ्य हित में राष्ट्व्यापी सेवा के लिए राष्ट्रीय रेलवे उपयोगकर्ता परामर्शदात्री परिषद में हमारे माननीय कार्यकारी राष्ट्रीय समिति के दो माननीय सदस्यों को शामिल करने की मांग करते हैं और यात्री भत्ता आयोग (पीएसी) (भारतीय रेलवे के संविधान

के तहत एक वैधानिक संगठन निकाय), दूसरी ओर हमारी मांग है कि हमारा संगठन भारतीय रेलवे के आम यात्रियों के हितों के लिए माननीय रेलवे मंत्रालय के समक्ष बैठकों में सीधे चर्चा हेतु सूचीबद्ध होना चाहिए क्योंकि हमारा संगठन अखिल भारतीय रेलवे यात्रियों की समस्याओं के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सेवाएं प्रदान करने के लिए काम कर रहा है। वहीं हमारी मांग है कि देश भर में जमीनी स्तर से लेकर आम यात्रियों के व्यापक हित के लिए जेडआरयूसीसी और डीआरयूसीस के विशेष हित सदस्यों की श्रेणी में पूरे भारत में क्षेत्रीय और मंडल स्तर पर हमारे माननीय कार्यकारी समिति के सदस्यों में से कम से कम तीन सदस्यों को शामिल किए जाए। इसके अलावा हमारा संगठन रेलवे यात्री सुविधाओं के लिए अच्छी सेवाओं की मांग करते है। वहीं हमारा संगठन अच्छी सुरक्षा की मांग को दृढ़ता और सख्ती से लेगा और आधिकारिक तौर पर ज्ञापन जारी करेगा ताकि भविष्य में भारतीय रेलवे में अवांछित घटना पूरी सदी में न घटे। हमारा संगठन भारतीय रेलवे की समय की पाबंदी को सही एवं सख्ती से बनाए रखने की मांग करते है। इसके आलावा सभी छोटे बड़े रेलवे स्टेशनों में शारीरिक विकलांगों के लिए व्हील चेयर उपलब्ध रहने की भी मांग करते है। हमारा संगठन रेलवे मंत्रालय से मांग करता है कि एक रेलवे स्टेशन से दूसरे रेलवे स्टेशन तक यात्रा के दौरान आम यात्री के जीवन और संपत्ति के हित में सुरक्षा के लिए कड़े कदम उठाए जाएं, ताकि कोई अवांछित घटना न घटे, 8. हमारा संगठन पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली और गुवाहाटी में रेलवे क्वार्टरों के किराए के आवंटन की मांग करता है।

दो झपटमार गिरफ्तार

गुवाहाटी (हिंस)। गुवाहाटी के फटासील आमबाड़ी पुलिस की टीम ने झटमारी में शामिल दो झपटमारों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने शुक्रवार को बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर चलाए गए अभियान के दौरान झटमारी में शामिल राहुल दास उर्फ राजा (20) और मोहम्मद अजान अहमद गिरफ्तार किया गया है। दोनों को साउथ प्वाइंट स्कूल के पास हुई एक झपटमारी में शामिल होने के आरोप में गिरफ्तार किया गया। दोनों गिरफ्तार आरोपी एक महिला से एक सोने की चेन, दो मोबाइल हैंडसेट, एक बैग और नगद 4390 झपट लिया था। गिरफ्तार दोनों आरोपियों के पास से छह मोबाइल फोन सेट, एक कटर और एक स्कूटी जब्त किया गया है। पुलिस दर्ज प्राथमिकी के आधार पर गिरफ्तार दोनों आरोपियों से सघन पूछताछ कर रही है।

No. DME/B.Pharm/2024/533996/2

ADMISSION NOTICE
PROVISIONAL ADMISSION INTO B. PHARM COURSE AT THE INSTITUTE OF PHARMACY ATTACHED TO ASSAM MEDICAL COLLEGE, DIBRUGARH FOR THE SESSION 2024

This is for information of all concerned that the provisional select list of candidate after the 2nd round offline counselling for admission into the 1st year **B. Pharm Course** in the institute of Pharmacy attached to Assam Medical College, Dibrugarh, Session 2024, has been published which is now available in the official website of this Directorate www.dme.assam.gov.in.

All selected candidates are hereby directed to report to the office of the Principal, Assam Medical College, Dibrugarh with all their original testimonials, 10+2 Marksheet, CEE-2024 Admit Card & Score Card, PRC, Caste Certificate wherever applicable, NCL certificate for OBC/MOBC category candidates and other relevant documents, on **14th November, 2024** for admission, with following conditions. If the candidates fail to get admitted within stipulated time, their allotted seat shall be cancelled.

- Candidates are to deposit the original Admit Cards, Marks Sheets, Pass Certificates of HSLC and H.S.SLC or Equivalent examination, Caste certificate, NCL certificate, E.W.S. certificate, etc. to the Principal, Assam Medical College, Dibrugarh at the time of admission.
- The admission of the candidates is subject to the satisfactory Medical fitness certificate issued by the Medical Board constituted by the Principal, Assam Medical College, Dibrugarh.
- All admissions are provisional.

Sd/-
-- Janasanyog /D/8463/24/9-Nov-24 **Director of Medical Education, Assam**

पृष्ठ एक का शेष

कश्मीर में लागू ...

के नेतृत्व में भाजपा-महायुति सरकार ने प्रगति को बहाल किया है। महाराष्ट्र ने विकास में अपना गौरव और विश्वास पुन: प्राप्त किया है। जहां भाजपा-महायुति है, वहां गति है, वहां महाराष्ट्र की प्रगति है। प्रधानमंत्री ने कहा कि एक विकसित महाराष्ट्र और एक मजबूत भारत के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जब महिलाएं आगे बढ़ती हैं, तो समाज आगे बढ़ता है। पिछले एक दशक में हमारी सरकार ने सभी बड़े फैसलों में महिलाओं को प्राथमिकता दी है। उन्होंने कहा कि महिला सशक्तीकरण के लिए हमारी सरकार के कदमों से कांग्रेस और उसके सहयोगी नाराज हैं। महायुति सरकार की *माझी लड़की बहिन योजना* को व्यापक सराहना मिली है, फिर भी कांग्रेस इसे बंद करने की साजिश कर रही है। महाराष्ट्र के किसानों को लेकर मोदी ने कहा कि डबल इंजन वाली सरकार के तहत महाराष्ट्र के किसानों को दोहरा लाभ मिल रहा है। फसल बीमा, सोलर पंप और रिकॉर्ड-हाई एमएसपी जैसी पहल कांग्रेस द्वारा छोड़ी गई कमी को पूरा कर रही हैं। भाजपा और महायुति की यह प्रतिबद्धता हमारे किसानों की समृद्धि और राष्ट्र की वृद्धि सुनिश्चित करती है।

कांग्रेस को वोट ...

ने पूरे देश में विकास का पुनर्जागरण किया है, जो कांग्रेस के शासन में केवल एक सपना था। 10 वर्षों के भीतर, यह मजबूत नीतियों, मजबूत विजन और मजबूत नेताओं के कारण हुआ है। कांग्रेस पार्टी 1960 के दशक से हमारे युवाओं पर क्रूरतापूर्वक अत्याचार करती रही है। एक समय वर्तमान बीटीआर क्षेत्र अशांति और हिंसा से ग्रस्त था। केंद्रीय मंत्री के साथ बीटीआर प्रमुख प्रमोद बोरो, असम सरकार के मंत्री यूजी ब्रह्म, अशोक सिंघल और योगेन मोहन, सांसद जयंत बसुमतारी, विधायक नव कुमार दलै और अजय रॉय, उम्मीदवार निर्मल कुमार ब्रह्म, भाजपा-अगप-यूपीपीएल गठबंधन के सहयोगी, असम सरकार के मंत्री रंजीत कुमार दास और यूजी ब्रह्म, लोकसभा सांसद फणीभूषण चौधरी, उम्मीदवार दीप्तिमय चौधरी और अन्य भाजपा-अगप पदाधिकारी और उत्साही कार्यकर्ता शामिल हुए।

लोकपाल ने सेबी ...

कि यह आदेश केवल एक प्रक्रिया का हिस्सा है और इसका मकसद किसी भी मामले पर राय व्यक्त करना नहीं है। लोकपाल ने माधबी पुरी बुच को चार हफ्ते के भीतर अपना जवाब दाखिल करने को कहा है। आदेश में यह भी कहा गया है कि शिकायतों में लगाए गए आरोपों के संबंध में बुच को जवाब देने का मौका दिया गया है, ताकि यह तय किया जा सके कि आरोपों की प्राथमिक जांच की जाए या नहीं। वह एक साथ तीनों शिकायतों का जवाब दे सकती हैं, ताकि पुनरावृत्ति न हो। लोकपाल अध्यक्ष जस्टिस ए.एम. खानविलकर और अन्य न्यायिक सदस्य जस्टिस एल. नारायण स्वामी, जस्टिस संजय यादव, जस्टिस ऋतु राज अवस्थी और सदस्य सुशील चंद्र व अजय तिर्की ने यह आदेश जारी किया है। आदेश में लिखा है, हम इसे उचित मानते हैं कि उन आरोपों के बारे में स्पष्टीकरण देने के लिए संबंधित सार्वजनिक कर्मचारी को बुलाया जाए, जो उनके खिलाफ शिकायतों में लगाए गए हैं। इसमें आगे कहा गया है, इससे पहले कि पीठ यह तय करे कि आरोपों की जांच करने की जरूरत है या नहीं, संबंधित सार्वजनिक अधिकारी को यह मौका लोकपाल अधिनियम की धारा 20 की उप धारा (1) के तहत दिया जा रहा है। हिंडनबर्ग रिसर्च ने अपनी रिपोर्ट में आरोप लगाया था कि माधबी पुरी बुच और उनके पति ने कुछ विदेशी फंड्स में हिस्सेदारी रखी थी, जो कथित रूप से अदाणी समूह के खिलाफ चल रही धनशोधन की जांच से जुड़े थे। हालांकि, बुच और उनके पति ने इन आरोपों को खारिज करते हुए कहा था कि हिंडनबर्ग ने उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुचाने के लिए यह हमले किए हैं। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की सांसद महुआ मोइत्रा ने 13 सितंबर को इस मामले में लोकपाल के पास शिकायत दर्ज कराई थी और मांग की थी कि इस मामले की प्रारंभिक जांच के लिए प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) या केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो को भेजा जाएगा।

राहुल पर हिमंत ने ...

झारखंड के कल्याण के लिए काम नहीं करते। इसीलिए तो हम लोग कहते हैं एकजुट रहो, सुरक्षित रहो। भाजपा नेता ने कहा कि झारखंड के मुख्यमंत्री और कांग्रेस-जेएमएम नेता अपनी रैलियों में जिस भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं, उससे साबित होता है कि वे घबराए हुए हैं। उन्होंने दावा किया कि यहां तक कि उन्होंने भी स्वीकार कर लिया है कि वे जीतने वाले नहीं हैं। हमें चुनाव प्रक्रिया या चुनाव आयोग, राज्य सरकार या केंद्र सरकार की भूमिका से कोई समस्या नहीं है। वहीं, आज कांग्रेस नेता राहुल गांधी आज झारखंड के सिमडेगा में चुनाव प्रचार करने पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने भाजपा पर जमकर निशाना साधा। राहुल ने कहा कि मैं आपको मणिपुर के बारे में बताता हूं। भाजपा ने मणिपुर को जला दिया और आज तक, भारत के प्रधान मंत्री ने वहां का दौरा नहीं किया है। इसका मतलब है कि उन्होंने इस बात को मान लिया है कि मणिपुर जैसा कोई राज्य नहीं है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि भाजपा की विचारधारा के कारण मणिपुर जला। राहुल ने भाजपा पर आरोप लगाया कि ये दलित और अल्पसंख्यकों के विरोधी हैं। उन्होंने कहा कि देश में दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों की कोई भागीदारी नहीं है। देश के दलित, पिछड़े और आदिवासी वर्ग के लोग सक्षम हैं। आप में कोई कमी नहीं है। आप हर तरह का काम कर सकते हैं, लेकिन आपके रास्ते को रोका जाता है। मैंने संसद में जातिगत जनगणना की बात उठाई तो नरेंद्र मोदी चुप हो गए। उन्होंने कहा कि भाजपा के लोग जहां भी जाते हैं, वो एक भाई को दूसरे भाई से, एक धर्म को दूसरे धर्म से, एक भाषा को दूसरी भाषा से लड़ाते हैं। इसलिए हमने *भारत जोड़ो यात्रा* की, जिसमें नारा था- *नफरत के बाजार में मोहब्बत की दुकान* खोलेंगे। जिससे हिंदुस्तान के लोग प्यार से एक साथ रहें।

हेमंत सरकार को ...

से 7000 रुपए भत्ता देने का वादा किया था, वह भी किसी को नहीं मिला। हेमंत सोरेन अपने पिता की झूठी कसम खाकर युवाओं को ठगा है। हिमंत विश्व शर्मा ने कहा कि हेमंत सोरेन ने महिलाओं को दो हजार चूल्हा खर्च देने का वादा किया था। गरीबों को 72000 देने का वादा किया था। कहा था बेटियों की शादी में सोने का सिक्का देंगे, गरीब परिवार को 51000 रुपए देंगे लेकिन ये सोने का सिक्का और झारखंड के गरीब परिवारों का 51,000 रुपए आलमगीर आलम खा गए। सीबीआई-ईडी ने आलमगीर आलम के घर से 35 करोड़ रुपए बरामद किए। कांग्रेस नेता धीरज साहू के घर से 350 करोड़ रुपए बरामद हुए। झारखंड के गरीबों का पैसा आलमगीर आलम और धीरज साहू मिलकर खा गए। शर्मा ने कहा कि हेमंत सोरेन ईडी सीबीआई पर सवाल उठाते हैं। यदि ईडी-सीबीआई नहीं आएगी तो झारखंड के गरीबों का जो कुछ भी बचा है उसे भी आलमगीर आलम और इरफान अंसारी लेकर चले जाएंगे, कुछ भी नहीं बचेगा। यह मोदी का झारखंड की जनता के विकास का पैसा था। वो पैसे कहां गए। आज राज्य में परीक्षा कराई जाती है लेकिन पेपर लीक हो जाता है। हेमंत सोरेन में भ्रष्टाचारी कुछ लोगों को नेपाल लेकर जाती है, वहां पहले ही परीक्षा प्रश्न दे दिया जाता है। झारखंड के युवाओं के हाथ में कुछ नौकरी नहीं मिलती है। जब युवा आंदोलन करते हैं, तो पुलिस उनको पीटती है।

उगते सूर्य को ...

धृति व रवि योग का संयोग बना रहा। व्रतियों ने जल में खड़े होकर पवित्रता के साथ फल, मिष्ठान, नारियल, पान-सुपारी, फूल, अर्कपात से भगवान सूर्य को अर्घ्य देकर परिवार की कुशलता के लिए प्रार्थना की। आज सुबह कार्तिक शुक्ल सप्तमी तिथि को सर्वार्थ सिद्धि योग व रवि योग में उदीयमान सूर्य को अर्घ्य देने के साथ चार दिवसीय पर्व संपन्न हुआ। अर्घ्य व पूजन करने के बाद व्रतियों ने घाट पर पारण कर पर्व का समापन किया।

मैं ट्रोल किए...

ज्ञान के सामने उजागर किया है। जब आप अपने जीवन को सार्वजनिक ज्ञान के सामने उजागर करते हैं, तो आप खुद को आलोचना के लिए भी उजागर करते हैं, खासकर आज के सोशल मीडिया के युग में। मेरे कंधे इतने चौड़े हैं कि हम उन सभी आलोचनाओं को स्वीकार कर सकते हैं, जिनका हमने सामना किया है। बार ने हमारे द्वारा उठाए गए सभी कदमों को जबरदस्त समर्थन दिया है। चीफ जस्टिस ने कहा कि जब मैं बचपन में बीमार होता तो मेरी मां कहती कि औषधि नारायण के हाथों से मिलती है। डॉक्टर नारायण का स्वरूप है। उन्होंने कहा कि मेरे पिताजी ने बार के कई महान वकीलों को भी पढ़ाया। वो काफी अनुशासित थे। उन्होंने पुणे में एक छोटा फ्लैट लिया। मैंने पूछा तो उनका उत्तर था कि इसे अपनी सेवा के अंतिम दिन तक रखना, क्योंकि कभी भी अपने सिद्धांतों की वजह से ऐसी कोई स्थिति आए तो तुम्हें भरोसा रहेगा कि तुम्हारे सिर पर छत है। चीफ जस्टिस ने कहा कि हमने दो दिन पहले राजस्थान में दो ऐसे दृष्टिहीन छात्रों को लेकर आदेश दिया, जिनको साक्षात्कार में शामिल नहीं होने दिया गया, जबकि वो प्रतिभाशाली थे, मेरिट में थे। आईआईटी, धनबाद में एक दलित प्रतिभाशाली बच्चे का दाखिला करवाया। उसके पास 17500 रुपए नहीं थे। चीफ जस्टिस ने कहा कि वकील मुकदमे लेने या ना लेने का फैसला कर सकते हैं, लेकिन जज बनने के बाद ऐसा नहीं किया जा सकता। इस डर की भावना से ऊपर उठना होता है। बार की अहमियत भी तभी पता चलती है। रोज नया ज्ञान और नया तौर तरीका सीखने को मिलता है। कॉलेजियम पर चीफ जस्टिस ने कहा कि हमने कॉलेजियम की बैठक में कई बार कठिन निर्णय लिया है। हमारे बीच कभी भी मतभेद नहीं रहा है। सभी बैठकें सुखद माहौल में हुईं। हमारे बीच कोई मतभेद नहीं रहा, क्योंकि हम यहां पर खुद के एजेंडे के साथ नहीं हैं, बल्कि संस्थान के हित और सेवा के लिए हैं। चीफ जस्टिस 10 नवंबर को रिटायर हो रहे हैं। चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ के अंतिम कार्य दिवस पर शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट में परंपरा के मुताबिक सेरेमोनियल बेंच बैठी। चीफ जस्टिस की अध्यक्षता वाली इस सेरेमोनियल बेंच में मौजूदा और अगले मुख्य न्यायाधीश साथ में बैठकर कुछ मामलों की सुनवाई करते हैं। अपने विदाई समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा कि जिस समय मैंने मुख्य न्यायाधीश के रूप में पदभार संभाला, मैंने पाया कि करीब 1,500 फाइलें रजिस्ट्रार की अलमारी में बंद पड़ी थीं। मैंने कहा कि इसे बदलना होगा। 09 नवंबर, 2022 और 1 नवंबर, 2024 के बीच 1.11 लाख मामले दर्ज किए गए। 05.33 लाख मामले सूचीबद्ध किए गए और 1.07 लाख मामलों का निपटारा किया गया। एक जनवरी, 2020 को सुप्रीम कोर्ट में 79,500 मामले लंबित थे, जिनमें वे भी शामिल हैं, जिन्हें हम अब अपंजीकृत या दोषपूर्ण मामले कहते हैं। एक जनवरी, 2022 को यह संख्या 93,000 मामलों तक पहुंच गई। एक जनवरी 2024 को यह संख्या घटकर 82,000 मामले हो गई है। अपंजीकृत मामलों की संख्या में पिछले दो वर्षों में 11,000 से अधिक की कमी आई है।

सीईसी ने अधिकारियों ...

भाषा पर नाराजगी जताई। बैठक में जिला चुनाव अधिकारी, पुलिस आयुक्त, पुलिस अधीक्षक, नगर निगम आयुक्त और रिटर्निंग अधिकारी मौजूद थे। सीईसी ने सभी सियासी दलों और उम्मीदवारों से अपील की है कि वे महिलाओं की गरिमा और सम्मान को ठेस पहुंचाने वाली किसी भी टिप्पणी से बचें। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि नेताओं या अन्य दलों के कार्यकर्ताओं के निजी जीवन के किसी भी पहलू की आलोचना नहीं की जानी चाहिए। विरोधियों को नीचा दिखाने के लिए किसी भी तरह के निम्न स्तरीय व्यक्तिगत हमले नहीं किए जाने चाहिए। राजीव कुमार ने यह भी कहा कि उम्मीदवारों या राजनेताओं द्वारा महिलाओं के सम्मान और गरिमा के खिलाफ की जाने वाली किसी भी टिप्पणी पर चुनाव आचार संहिता के प्रावधानों के तहत कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए। उन्होंने उम्मीद जताई कि सभी उम्मीदवार और पार्टी नेता अपने भाषणों और सार्वजनिक संवाद में महिलाओं के प्रति सम्मान दिखाते हुए अपना आचरण सुधारेंगे।

पाकिस्तान हिंदुओं पर ...

कैदियों की संख्या बढ़ रही है। समिति ने कहा कि विशेष रूप से साइबर अपराध कानूनों के तहत ऑनलाइन ईशनिंदा के आरोपित युवाओं को निशाना बनाया गया। संयुक्त राष्ट्र निकाय ने पाकिस्तान से धार्मिक अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा व भेदभाव के कृत्यों को रोकने और जांच करने का आग्रह किया। साथ ही इस तरह के कार्य करने वाले अपराधियों के खिलाफ तत्काल कदम उठाने की अपील की। समिति ने पाकिस्तान को अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार मानकों का पालन करने के लिए ईशनिंदा कानूनों को निरस्त करने या फिर महत्वपूर्ण संशोधन करने की सलाह भी दी है। समिति ने लोगों को जबरन उठाने, गायब करने, उनको यातना देने, हत्या करने और डराने-धमकाने की रिपोर्टों का हवाला देते हुए पत्रकारों और मानवाधिकार रक्षकों के साथ होने वाले व्यवहार पर भी चिंता व्यक्त की है। रिपोर्ट में इक्वाडोर, फ्रांस, ग्रीस, आइसलैंड और तुर्किये में मानवाधिकार का भी मूल्यांकन किया गया है।

गुजरात में 12 साल ...

पुरानी कार का अंतिम संस्कार किया। इसमें धार्मिक परंपराओं का निर्वाह करते हुए साधू, संतों समेत करीब 1500 लोग शामिल हुए, जिन्हें भोज कराया गया। इस आयोजन के बनाए वीडियो में पोलारा परिवार को 12 साल पुरानी वैगन आर कार की समाधि बनाने के लिए 15 फुट गहरा गड्ढा खोदा गया। अंतिम विदाई के दौरान कार को हरे कपड़े से ढंकने के साथ ही फूलों और मालाओं से सजाया गया। धार्मिक अनुष्ठान के बीच पुजारियों ने कार पर गुलाब की पंखुड़ियां छिड़कते हुए मंत्रोच्चार किया। अंत में एक्सकेवेटर मशीन से कार को गड्ढे में पहुंचा कर उस पर मिट्टी गिराकर समाधि बनाई गई। सूरत में कंस्ट्रक्शन बिजनेस के मालिक पोलारा ने बताया कि परिवार के लिए बेहद भाग्यशाली साबित हुई कार को भावी पीढ़ी की याद में कायम रखने का यह एक प्रयास है। यह कार उन्होंने करीब 12 साल पहले खरीदी थी। इसके आते ही घर में सुख-समृद्धि आ गई। कारोबार में सफलता और परिवार को भारी सम्मान मिला। इसलिए पोलारा ने चार लाख रुपए इस हिंदू रीति के अंतिम संस्कार के समारोह पर खर्च किए। उन्होंने बताया कि वह अपनी कार की समाधि के ऊपर एक पेड़ लगाने पर भी विचार कर रहे हैं। ताकि भावी पीढ़ियां इस लकी कार की छांव में बैठ सकें।

एक ओके से स्टेशन ...

जिससे घटनाओं की एक श्रृंखला शुरू हो गई। विशाखापत्तनम के रहने वाले स्टेशन मास्टर की शादी दुर्ग की एक महिला से हुई थी। अदालत के रिकॉर्ड के अनुसार, उनकी शादी 12 अक्तूबर, 2011 को पंजीकृत की गई थी। हालांकि, पिछले प्रेमी के लिए दुल्हन की भावनाओं के कारण वैवाहिक कलह पैदा हो गई। उसने अपने पति के सामने अपने भावनात्मक लगाव के बारे में कबूल किया था, जिससे उनके रिश्ते में तनाव पैदा हो गया था। पत्नी के माता-पिता के आश्वासन के बावजूद, उसने अपने पूर्व साथी के साथ संचार जारी रखा, यहां तक कि अपने पति की उपस्थिति में भी उससे बात करती रही। शादी पहले से ही अस्थिर स्थिति में थी जब एक रात, उसने स्टेशन मास्टर को उसकी शिफ्ट के दौरान बुलाया, जिससे एक और बहस शुरू हो गई। बातचीत समाप्त करने के लिए कहते हुए उसने जोर से कहा कि हम घर पर बात करेंगे, ओके? इस बात से अनभिज्ञ कि उनका माइक्रोफोन चालू था। उनके सहयोगी ने केवल ओके सुनकर,इसे प्रतिबंधित मार्ग पर मालगाड़ी को हटाने का सिग्नल समझ लिया। हालांकि कोई दुर्घटना नहीं हुई, लेकिन रात के समय प्रतिबंधों के उल्लंघन के कारण रेलवे को 3 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ।

ट्रंप की जीत से ...

पहुंचाने वाले पुरुषों के खिलाफ हल्ला बोला है। इस फोर बी मूवमेंट में शामिल महिलाओं ने ट्रंप को वोट देने वाले पुरुषों का अगले चार साल तक बायकॉट कर दिया है। यानी अगले चार साल तक महिलाएं इन पुरुषों को न तो डेट करेंगी, ना ही शादी करेंगे, ना सेक्स करेंगी और ना ही उनके साथ बच्चे पैदा करेंगी। इस मूवमेंट के तहत महिलाओं से डेटिंग ऐप भी डिलीट करने को कहा जा रहा है। 4बी मूवमेंट एक फेमनिस्ट कार्यक्रम 2017 और 2018 में दक्षिण कोरिया में शुरू हुआ गया था। इसकी जड़ें पहले के एस्केप द कॉर्सेट आंदोलन में भी पाई जाती हैं, जिसमें प्रतिभागियों से अपने बाल छोटे करने या अपना सिर मुंडवाने, मेकअप छोड़ने और खुले तौर पर स्त्रैण कपड़े त्यागने का आह्वान किया गया था। कोरियाई भाषा में बी का मतलब नहीं होता है। इस तरह 4 बी चार नो को दर्शाता है। इन चार नो में पुरुषों से डेटिंग, सेक्स, मैरिज और बच्चों पर मनाही है। अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में ट्रम्प की जीत के तुरंत बाद, पूरे अमेरिका में 4बी आंदोलन के लिए गूगल सर्च में तेजी से इजाफा देखने को मिला। इस शब्द के लिए 450 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जिसमें सबसे अधिक रुचि वाशिंगटन डीसी, कोलोराडो, वर्मोंट और मिनेसोटा से दर्ज की गई। कुछ अमेरिकी महिलाओं ने भी इसके बारे में पोस्ट करने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का सहारा लिया। ट्रम्प की जीत के बाद कई महिलाओं के मोहभंग और चिंता के कारण अमेरिकी महिलाओं के बीच 4बी आंदोलन के पक्ष में आवाजें बढ़ी हैं। वे चिंता व्यक्त करते हैं कि ट्रम्प की जीत से उनके प्रजनन अधिकार कम हो जायेंगे। अमेरिका में अबॉर्शन कानून को लेकर ट्रंप के रुख से भी महिलाएं खुश नहीं हैं। ऐसे में वह चाहती थी कि ट्रंप इस बार चुनाव नहीं जीते।

केजरीवाल वीवीआईपी कल्चर...

शीश महल में हैं। पार्टी मुख्यालय में आज आयोजित पत्रकार वार्ता में भाजपा नेता गौरव भाटिया ने हाल ही में पीडब्ल्यूडी की ओर से बनाई गई इन्वेंटरी के आधार पर आरोप लगाया कि अरविंद केजरीवाल वीवीआईपी कल्चर का सबसे बड़ा प्रतीक हैं। उन्होंने कहा कि एक समय में केजरीवाल दिल्ली की मुख्यमंत्री रही शीला दीक्षित के आवास पर 10 एसी होने का मुद्दा उठाते थे लेकिन अब उनके आवास में 250 टन के एसी लगे हैं। वे 1 करोड़ रुपये के समोसे खा जाते हैं। आवास में 88 इंच का टीवी है। इसके साथ ही भाटिया ने राहुल की सभा में संविधान की कथित तौर पर रिक्त पेजों वाली संविधान की प्रति वितरित करने का भी मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि संविधान की बात करने वाले इसके मूल सिद्धांतों से बहुत दूर भटक गए हैं। संविधान की शपथ लेने वाले विपक्ष के नेता राहुल गांधी भारत का संविधान लिखते हैं और जब इस पुस्तक को खोला जाता है तो यह सिर्फ कोरा कागज होता है। उन्होंने पूछा कि डॉ. बीआर अम्बेडकर ने भारत को केवल संविधान का आवरण दिया था? क्या विपक्ष के नेता को संविधान नहीं पढ़ना चाहिए?

पाकिस्तान के पंजाब ...

पंजाब सरकार ने आज से 17 नवंबर तक के लिए 19 जिलों के सार्वजनिक पार्कों, चिड़ियाघरों, खेल के मैदानों और संग्रहालयों में जनता के प्रवेश करने पर प्रतिबंध लगा दिया। एक दिन पहले लाहौर का वायु प्रदूषण अभूतपूर्व स्तर पर पहुंच गया। पिछले 48 घंटों में इसे दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर घोषित किया गया। पंजाब के सभी प्रमुख जिलों में घने कोहरे की चादर बिछी हुई है। लाहौर के कुछ क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता सूचकांक 1,000 से भी अधिक हो गया। यह स्तर सार्वजनिक स्वास्थ्य और सुरक्षा के लिए बेहद खतरनाक माना जाता है। सरकार ने कहा है कि यह प्रतिबंध लाहौर, शेखूपुरा, कसूर, ननकाना साहिब, गुजरांवाला, गुजरात, हफीजाबाद, मंडी बहाउद्दीन, सियालकोट, नरोवाल, फैसलाबाद, चिनिओत, झंग, टोबा टेक सिंह, मुल्तान, लोधरान, वेहारी और खानेवाल जिले में लगाया गया है। अगर कोई आदेश का उल्लंघन करता है तो उसे पीपीसी की धारा 188 के तहत दंडित किया जाएगा। इस बीच प्रांतीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने पंजाब राष्ट्रीय आपदा (रोकथाम और राहत) अधिनियम, 1958 की धारा 3 के तहत धुंध को आपदा घोषित किया है।

राज्यपाल ने माजुली सांस्कृतिक विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत समारोह में उपाधियां प्रदान कीं

गुवाहाटी (हिंस)। राज्यपाल लक्ष्मण प्रसाद आचार्य ने माजुली सांस्कृतिक विश्वविद्यालय के स्नातकों से नैतिक नेतृत्व करने और ईमानदारी और जिम्मेदारी के साथ समाज की सेवा करने का आह्वान किया। आज माजुली में माजुली सांस्कृतिक विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत समारोह के अवसर पर छात्रों को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने स्नातक छात्रों से अपनी प्रतिबद्धता में दृढ़ रहने और नैतिक रूप से समाज की सेवा करने तथा लाभ से अधिक सिद्धांत को प्राथमिकता देने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि माजुली सांस्कृतिक विश्वविद्यालय एकमात्र ऐसा विश्वविद्यालय है जो अकादमिक शिक्षा के अलावा भारतीय सांस्कृतिक और ज्ञान मूल्यों के प्रचार-प्रसार पर जोर देता है। विश्वविद्यालय विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के छात्रों के बीच विचारों के आदान-प्रदान और आपसी सम्मान और सद्भाव के विकास को बढ़ावा देने के लिए भी खड़ा है। उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय का वातावरण अद्वितीय है, जो एक ऐसा स्थान प्रदान करता है जहां अकादमिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को न केवल प्रोत्साहित किया जाता है, बल्कि मनाया भी जाता है। राज्यपाल ने विश्वविद्यालय से स्नातक करने वाले 182

छात्रों को बधाई देते हुए कहा कि छात्र विश्वविद्यालय का गौरव हैं, जो दुनिया भर में सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देने और फैलाने की जिम्मेदारी ले सकते हैं। यह कहते हुए कि दुनिया अभूतपूर्व परिवर्तनों से गुजर रही है, राज्यपाल ने छात्रों से जलवायु संकट, सामाजिक उथल-पुथल और आर्थिक असमानता जैसे मुद्दों को संबोधित करने में अग्रणी भूमिका निभाने को कहा। राज्यपाल ने कहा कि ये चुनौतियां कठिन लग सकती हैं, लेकिन छात्रों को इन्हें विकास और नवाचार के अवसर के रूप में देखना चाहिए। राज्यपाल आचार्य ने छात्रों से अनुरोध करते हुए कहा कि जैसे-जैसे वे अपनी पेशेवर यात्रा शुरू कर रहे हैं, उन्हें सहयोग और टीम वर्क के महत्व को याद रखना चाहिए। इसलिए उन्होंने छात्रों को अपने साथियों के साथ जुड़े रहने और व्यापक पूर्व छात्र नेटवर्क से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया। राज्यपाल ने कहा कि संबंध बनाना केवल संबंध बनाने के बारे में नहीं है; यह आपसी सम्मान और साझा लक्ष्यों के आधार पर बंधन को बढ़ावा देने के बारे में है। राज्यपाल ने विद्यार्थियों को सलाह देते हुए कहा कि पेशेवर जीवन में आगे बढ़ने के दौरान विद्यार्थियों को जीवन के सभी अनुभव, शिक्षा, ज्ञान, कौशल और मूल्यों को साथ लेकर चलना चाहिए, जो उन्होंने विश्वविद्यालय में रहने के दौरान प्राप्त किए हैं और अपने ज्ञान के साथ वैश्विक समाज की जटिलताओं को समझने का प्रयास करना चाहिए। राज्यपाल ने विद्यार्थियों में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को विकसित करने में सक्षम बनाने के लिए माजुली सांस्कृतिक विश्वविद्यालय की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि 16 अक्टूबर, 2017 को स्थापित यह विश्वविद्यालय *संस्कृति* पर केंद्रित केंद्र बन गया है। विश्वविद्यालय न केवल अपने विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में मदद करने में सफल रहा है, बल्कि उन्हें सांस्कृतिक विरासत सिखाने और आम जनता के बीच सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने में भी सफल रहा है। राज्यपाल ने साथ ही निवर्तमान स्नातकों से अपने विद्यालय, राज्य और राष्ट्र की सेवा करने को कहा। इस अवसर पर आचार्य ने प्रख्यात अभिनेता विष्णु खरगड़िया और प्रसिद्ध सत्रिया कलाकार करुणा बोरा को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए मानद डॉक्टरेट की उपाधि भी प्रदान की।

स्वतंत्रता सेनानी बाबू छबीलाल उपाध्याय की प्रतिमा स्थापित करेगी सरकार

गुवाहाटी (हिंस)। असम सरकार ने असम के गोरखा समुदाय के अग्रणी नेता और एक समर्पित स्वतंत्रता सेनानी बाबू छबीलाल उपाध्याय को सम्मानित करने के लिए गुवाहाटी में एक प्रमुख स्थान पर उनकी प्रतिमा स्थापित करने का निर्णय लिया है। इस संबंध में आज मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने गुवाहाटी महानगर विकास प्राधिकरण (जीएमडीए) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी को प्रतिमा के निर्माण के लिए गुवाहाटी में एक उपयुक्त और प्रमुख स्थान का चयन करने का निर्देश दिया। डॉ. शर्मा ने यह भी निर्देश दिया कि परियोजना को उनके दृष्टिकोण के अनुरूप सुनिश्चित करने के लिए योजना के चरणों के दौरान सम्मानित स्वतंत्रता सेनानी के परिवार के साथ चर्चा की जाए। एक बार स्थान और डिजाइन को अंतिम रूप दिए जाने के बाद, मुख्यमंत्री ने सीईओ को प्रतिमा के निर्माण की शुरुआत करने और इसकी प्रगति पर अपडेट प्रदान करने का निर्देश दिया।

जंगली हाथी के हमले में एक बुजुर्ग महिला की मौत

नगांव (हिंस)। नगांव के धिंग में जंगली हाथी के हमले में एक बुजुर्ग महिला की मौत हो गयी। बुजुर्ग महिला की पहचान जांगफली महेला के रूप में हुई है। घटना धिंग के शहरिया गांव की बताई गई है। स्थानीय लोगों ने बताया कि भोजन की तलाश में नगांव के लाओखोवा अभयारण्य से बाहर आया विशालकाय जंगली हाथी सोनारी गांव, शहरिया गांव और धिंग क्षेत्र के सलनाबादी गांव में उपद्रव मचा रहा है। जंगली हाथी ने धिंग के विभिन्न गांवों के खेतों में धान की फसल नष्ट करने के साथ ही धिंग के सालनाबाड़ी निवासी इकरामुल हुसैन नामक व्यक्ति के घर को क्षतिग्रस्त कर दिया है।

आठ वर्षीय बेटे की हत्या कर पिता ने की खुदकुशी

बिश्वनाथ (हिंस)। गहपुर थाना क्षेत्र के सोलेंगी में एक व्यक्ति ने अपने आठ साल के बेटे की तकिये से दबाकर हत्या करने के बाद स्वयं फंदे से लटककर खुदकुशी कर ली। मृतक पिता की पहचान सोलेंगी के अपोलो कंपनी के टायर के डीलर मृगांक सैकिया और मृतक बेटे की पहचान आयुष्मान (8) के रूप में की गई है। पुलिस ने आज बताया कि बेटे की हत्या के वक्त पुत्र आयुष्मान और उसका हत्यारा पिता घर पर ही थे। आयुष्मान की मां और दादा-दादी उस वक्त घर पर नहीं थे। हत्या करने के बाद मृगांक अपने बेटे को बिस्तर पर छोड़कर बरामदे में बैठा था। इसी बीच मृगांक के बहन-बहनोई आयुष्मान की खबर लेने पहुंचे। कुछ दिनों पहले आयुष्मान के एक कान की सर्जरी हुई थी। मृगांक ने खबर लेने आए अपने बहन-बहनोई को यह कहते हुए रोका कि आयुष्मान सो रहा है। उसी समय मृगांक की पत्नी घर पहुंची। पत्नी को देखते ही मृगांक घर से भाग निकला। मृगांक की पत्नी बेडरूम में प्रवेश करते ही अपने बेटे के शव को बिस्तर पर पड़ा पाया। आयुष्मान को शहीद कनकलता बरुवा सिविल अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

विप्र युवा असम ने गीता प्रेस साहित्य केंद्र का शुभारंभ

गुवाहाटी (विभास)। विप्र युवा असम ने छत्रीबाड़ी स्थित परशुराम सेवा सदन में गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित धार्मिक पुस्तकों के केंद्र का शुभारंभ किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में जीएसटी जॉइंट कमिश्नर मनोज शर्मा ने पुस्तक पूजन कर साहित्य केंद्र का विधिवत उद्घाटन किया। इस दौरान विशिष्ठ समाज सेवी दिनेश पारीक, गोपाल भारद्वाज, संपत मिश्र, अरुण गोठेचा, आनंद पारीक, ललित जोशी, सहित विप्र युवा, असम के अध्यक्ष अंकित पारीक, सचिव विकास पारीक, पूर्व अध्यक्ष अशोक शर्मा, राजेश शर्मा, विपिन पारीक, हेमंत शर्मा सहित समाज के गणमान्य लोग उपस्थित थे। इस मौके पर गीता प्रेस गोरखपुर के अधिकृत पुस्तक वितरक अशोक शर्मा ने बताया कि महानगर के मध्य

ऐसे स्टॉल की धर्मपरायण लोगों को बहुत जरूरत थी। अब समाज बंधुओ एवं मातृशक्ति को धार्मिक ग्रंथ सहज एवं सुलभ उपलब्ध होते रहेंगे। विप्र युवा, असम इसके संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

गहपुर में किशोरी के साथ दुष्कर्म आरोपी गिरफ्तार

बिश्वनाथ (हिंस)। गहपुर के हेलेम में एक 14 साल की किशोरी के साथ दुष्कर्म का मामला प्रकाश में आया है। आरोपी की पहचान बिनोद नरह (35) के रूप में हुई है। आरोपी उसी गांव का निवासी है। घर पर किशोरी के माता-पिता के नहीं होने का फायदा उठाकर उसके साथ दुष्कर्म किया गया। पीड़िता के माता-पिता दिहाड़ी मजदूर के तौर पर काम करने के लिए बाहर गए थे। शिकायत के आधार पर पुलिस ने बिनोद को गिरफ्तार कर लिया है। मामले में कानूनी प्रक्रिया शुरू की गई है। विभिन्न संगठनों के साथ ही स्थानीय नागरिकों ने आरोपी को कड़ी से कड़ी सजा देने की मांग की है।

बंगाईगांव में श्री सालासर हनुमानजी का विशाल उत्सव शुरू

बंगाईगांव। श्री सालासर हनुमान सेवा समिति चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित श्री सालासर हनुमान जी का पंचदशम वार्षिक महोत्सव की 8 नवंबर को शुरुआत हुई। प्रात: काल अखंड रामायण, हवन एवं अष्टप्रहर हनुमान चालीसा के पश्चात एक भव्य शोभायात्रा निकाली गई जो की मूलचंद विवाह भवन से शुरू होकर शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए नोर्थ बंगाईगांव स्थित बाबा के दरबार में संपन्न हुई। इस शोभायात्रा में कोलकोता के भास्कर एंड पार्टी द्वारा राम दरबार, शिव-पार्वती, राधाकृष्ण, लक्ष्मी नारायण की झांकियों ने अपनी प्रस्तुति दी, तथा स्थानीय गौड़िया मठ, इस्कॉन, बोडो नृत्य दल, नगाड़ा दल आदि भी शामिल रहे। इस शोभा यात्रा में काफी संख्या में पुरुष एवं महिलाओं ने हिस्सा लिया। शोभा यात्रा के अंत

में श्री सालासर बालाजी का सुसज्जित रथ आकर्षण का केंद्र रहा। पूरे रास्ते में बाबा की जय जयकार करते हुए सभी भक्त आगे बढ़ रहे थे। इस शोभायात्रा में श्री सालासर धाम के पुजारी विनोद जी एवं राजवीर मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल थे। उक्त तीन दिवसीय बाबा बजरंग बली का भव्य दरबार श्री सालासर धाम की थीम पर सजाया गया है। दोपहर को रुद्राभिषेक किया गया तथा महिला संगठन श्री बालाजी महिला मंडल द्वारा भजन कीर्तन का आयोजन किया गया। संध्याबेला स्थानीय गायक कलाकार नवीन अग्रवाल द्वारा संगीतमय सुंदरकांड पाठ प्रस्तुत किया गया तथा कोलकाता से पधारे भास्कर पार्टी द्वारा नृत्य नाटिका का मंचन किया। शनिवार और रविवार को दिनभर विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इस दौरान एक स्मारिका का विमोचन किया जाएगा। चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से संपत लाल सिंघी एवं मनोज सिंघी तथा श्री सालासर हनुमान उत्सव परिचालन समिति के अध्यक्ष डॉ बांकेलाल शर्मा एवं सचिव मोती शामसुखा ने सभी भक्तों से सभी कार्यक्रम में उपस्थित होने का आग्रह किया है। प्रथम दिन के कार्यक्रम को सफल करने में सभी सदस्यों का सक्रिय सहयोग रहा।

विश्वनाथ और होजाई में उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ ही चार दिवसीय छठ महापर्व संपन्न

विश्वनाथ /होजाई (विभास/निसं)। विश्वनाथ जिले में सूर्योपासना व आस्था का महापर्व छठ पूजा का आज प्रात: कालीन भास्कर को अर्घ्य देकर व्रतधारी ने चार दिवसीय छठ पूजा संपन्न की। साथ ही व्रतियों ने पारण कर 36 घंटा निर्जला व्रत का खंडन किया। प्रात: तीन बजे व्रतधारी घाट पहुंच कर छठ मईया की उपासना एवं उदय भास्कर को अर्घ्य देने के लिए पूजा अर्चना की। छठ घाट में व्रतियों ने कोसी भरने की परंपरा की छटा बिखेरी। विश्वनाथ चारिआलि के आमबाड़ी में स्थित केंद्रीय श्री श्री छठ पूजा समिति के पंडाल में श्रद्धालुओं का तांत लगा रहा है, सभी धर्मावलंबियों के लोगों ने छठ पूजा का आनंद उठाया। इस घाट में प्राय: चार सौ से अधिक व्रतधारी ने छठ पूजा करके उगते हुए आदित्य को विभिन्न ऋतु फलों, ठेकुआ, मिष्ठान से सजे सूप व टोकरी से अर्घ्य देकर भास्कर को दूध अर्पित किया।इस घाट में व्रतधारी के होठों से पारंपरिक मधुर छठ मईया को गुनगुनाते हुए देखा गया। इस मौके पर केंद्रीय श्री श्री छठ पूजा समिति के वरिष्ठ सलाहकार गेशर प्रसाद साहू, गया

प्रसाद गुप्ता, पूर्व अध्यक्ष राजु प्रसाद, पूर्व उपाध्यक्ष सत्यप्रकाश गुप्ता, पूर्व सचिव क्रमश: दिलीप सिंह, अखिलेश रौनियार, वर्तमान अध्यक्ष बलवीर राय,महासचिव अयोध्या प्रसाद गुप्ता, कोषाध्यक्ष सुधीर जयसवाल, अनिल साहू लव रौनियार, विश्व हिंदू परिषद विश्वनाथ जिलासचिव इंद्रजीत गुप्ता आदि मौजूद थे। विहिप जिलासचिव ने प्रात: कालीन सूर्य को अर्घ्य देकर भगवान् भास्कर से देश में सुख-शांति और मंगलमय की कामना की। यहां घाट दुल्हन की तरह सजी थी, जिसमें असंख्य श्रद्धालु मौजूद थे। साथ ही व्रतियों ने सूर्य देव को पूजा अर्चना कर देश की सुख समृद्धि कामना की। व्रतियों ने उदीयमान सूर्य को अर्घ्य अर्पित करने के बाद महिलाओं के माथे पर सौभाग्य सिंदूर लगाकर प्रसाद स्वरूप पकवान और फलों का वितरण किया गया। इधर विश्वनाथ चारालि स्थित पश्चिम चारालि छठ पूजा समिति फलफली बाकरी के तत्वावधान में छठ पूजा धूमधाम से मनाया गया। समिति के अध्यक्ष अरविंद गुप्ता, उपाध्यक्ष राजदेउ साहू, महासचिव रामकुमार ठाकुर,कोषाध्यक्ष बबलू गुप्ता आदि सदस्य के नेतृत्व में छठ घाट एक अहम पहचान बनाई है।बालिचागं में श्री श्री छठ पूजा उद्यापन समिति ने भी छठ घाट पर व्रतधारी के लिए सभी सुव्यवस्था किया था। सुबह व्रतधारी को पंक्तिबद्ध तरीके से पूजारी ने दूध से भास्कर को अर्घ्य अर्पित कराया। घाट पर छठ पूजा का छटा छाया रहा। उल्लेखनीय है कि असम -अरुणाचल सीमावर्ती डफलागढ़, बाघमारी, बिहाली, हेलम, बेदेती, बरगांग, मोनाबाड़ी, बाघमारी ,सोतिया, ईटाखोला और विश्वनाथ घाट में भी आस्था का महापर्व छठ की रौनक छाई हुई थी। **होजाई** से हमारे संवाददाता के अनुसार चार दिवसीय छठ महापर्व के तहत आज प्रात: भगवान भास्कर को दूसरा अर्घ्य देने के लिए व्रतधारी शिवबाड़ी स्थित पोखरी व नोतन बाजार स्थित पोखरी, आमतोला, मिल्क बस्ती आदि घाटों पर पहुंचे एवं भगवान भास्कर के उदय होने का इंतजार करने लगे। वहीं कई श्रद्धालुओं को पानी में खड़े होकर पूजा अर्चना करते देखा गया। ज्योंही भगवान सूर्य उदयमान हुए भक्तों ने अपना दूसरा अर्घ्य अर्पित करने के साथ-साथ 36 घंटे का निराहार व्रत पूर्ण किया। वहीं दूसरी और नोतून बाजार घाट पर महिलाओं द्वारा गाए जा रहे छठ के गीत से माहौल भक्तिमेय दिख रहा था। बच्चे रात्रि के समय में पटाखे छोड़ने में मस्त रहे। आत्मविश्वास के इस महापर्व की लोकप्रियता दिनों दिन बढ़ रही है फलस्वरूप बिहारीयों के अलावा बड़ी संख्या में मारवाड़ी, नेपाली, बंगाली, असमिया, पंजाबी आदि समुदाय के लोगों ने भी पूजा अर्चना की एवं प्रात: जाकर उदयमान सूर्य को अर्घ्य दिया। दोनों घाटों के आयोजन समिति ने व्रतधारीयों एवं दर्शनार्थीयों को छठ महापर्व के सफल आयोजन हेतु धन्यवाद दिया।

हेना बरभुइयां ने असम विवि, सिलचर से दर्शनशास्त्र में हासिल की डॉक्टरेट की डिग्री

गुवाहाटी। स्वर्गीय इकबाल हुसैन बरभुइयां और मजमुन नेसा बरभुइयां की बेटी हेना बरभुइयां ने असम विश्वविद्यालय, सिलचर के दर्शनशास्त्र विभाग से डॉक्टरेट की डिग्री हासिल करके एक असाधारण उपलब्धि हासिल की है। अरबिंदो और मां (मीरा अलफसा) की समग्र शिक्षा की अवधारणा: एक आलोचनात्मक अध्ययन शीर्षक से उनके डॉक्टरेट शोध की देखरेख प्रो. निर्मली बर्मन ने की थी। पीएचडी की डिग्री पूरी करने के अलावा, उन्होंने यूजीसी-नेट और एसएलईटी एनई दोनों को सफलतापूर्वक उत्तीर्ण किया है। उन्होंने कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में कई लेख और अध्याय प्रकाशित करके विद्वानों के विमर्श में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विभिन्न राष्ट्रीय संगोष्ठियों में उनकी सक्रिय भागीदारी उनके शोध और बौद्धिक विकास के जुनून को और भी रेखांकित करती है। वह कछार जिले के गुमरा के एक छोटे से गांव पैकन से आती हैं, जहां उन्होंने अपनी यात्रा की शुरुआत एक साधारण शुरुआत से की थी। वह अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार के निरंतर सहयोग को देती हैं-उनके दिवंगत पिता जो एक प्राथमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक थे, उनकी मां, उनकी दो बड़ी बहनें, उनका छोटा भाई और उनके पति अमीनुल हसन खान, जो वर्तमान में नर्सिंग एच.एस. स्कूल, सिलचर में पीजीटी (वनस्पति विज्ञान) के रूप में कार्यरत हैं।

कोकराझाड़ में सुअर पालन से जुड़ी सहकारी समिति बनेगी

विकसित भारत समाचार

कोकराझाड़। सहकारिता मंत्रालय के *सहकार से समृद्धि* (सहकारिता के माध्यम से समृद्धि) के दृष्टिकोण के अनुरूप और ग्रामीण भारत में सहकारी आंदोलन को मजबूत करने के लिए, सहकारिता विभाग, बीटीसी ने आज कोकराझाड़ के तितागुड़ी स्थित समाबाई भवन में एक बैठक आयोजित की। बैठक में कोकराझाड़ जिले के 32 सुअर किसान एकत्रित हुए, जो बोड़ोलैंड सुअर मिशन के तहत पंजीकृत हैं-बीटीआर के मुख्य कार्यकारी सदस्य (सीईएम) प्रमोद बोरो के नेतृत्व में एक प्रमुख पहल-जिले में सुअर पालन से जुड़ी सहकारी समिति के गठन पर चर्चा करने के लिए। बैठक की अध्यक्षता सहकारिता के सीएचडी जयंत खेरकटारी ने की, जिन्होंने सहकारी खेती मॉडल के कई लाभों पर प्रकाश

डाला। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सुअर पालन को सहकारी ढांचे में एकीकृत करने से इसे बड़े पैमाने पर आर्थिक गतिविधि में बदला जा सकता है, जिससे उत्पादन के लिए एक संगठित और वैज्ञानिक रूप से प्रबंधित दृष्टिकोण सुनिश्चित हो सकता है। चर्चा के दौरान, प्रतिभागियों ने क्षेत्र में सूअर के मांस की बढ़ती मांग को संबोधित किया। कोकराझाड़ में अधिशेष उत्पादन की प्रबल संभावना के साथ, उन्होंने जिले से परे बड़े बाजारों में विस्तार करने के अवसरों पर विचार करते हुए स्थानीय आपूर्ति बढ़ाने की रणनीतियों की खोज की। बैठक का समापन समुदाय द्वारा संचालित आर्थिक विकास के महत्व पर ध्यान केंद्रित करने के साथ हुआ। पिगरी एलाइड को-ऑपरेटिव सोसाइटी के गठन से कोकराझाड़ के सुअर किसानों के लिए दीर्घकालिक समृद्धि को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है, साथ ही स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और क्षेत्र के किसानों की आजीविका में सुधार होगा।

No.GMB.14/2023/343 *Dated the Goreswar 30th October, 2024*

NOTICE INVITING TENDER

Sealed tenders affixing non-refundable court fee stamp of Rs. 8.25 (Rupees eight and twenty five paise) only with validity period of 180 days , which will subsequently be converted and drawn up in F-2 form are invite from APWD registered contractors of Class-I (A), (B) & (C), class-II and class-III (Roads and Building) category of Assam PWD (Roads and Building) BTC, Irrigation Engineering Department Class-I (A), (B), (C), Class-II and class-III And registered contractor of Goreswar Municipal Board Class-I (A), (B), (C) and Class-II and class-III according to their eligibility for submitting tender of the works given below. **The tender will be received by the undersigned at his office up to 1.00 PM. Of 19th November, 2024 and will be opened on the same day at 2.00PM.** in presence of the intending Bidders or their authorized agents. If the office of the undersigned happens to be closed on the date of receipt of tenders, the tenders will be received and open in the same venue and time on the next working day . Earnest money as shown below in the form of NSC/D.D/FDR duly pledged to the Chairperson , Goreswar Municipal Board will have to be deposited along with each tender. In case of SC, ST, OBC or unemployed Graduate Engineer (Proof to be enclosed along with the tender) bidders, the earnest money will be 50% of the earnest money specified below. The detailed tender document may be obtained from the office of the undersigned by the intending bidders, on written request and payments of as per chart which is non-refundable, during office on before 4.00PM of 16th November, 2024.

Sl. No.	Name of Work	Estimated cost in Rs. (Approx)/ Tender Value	EMD@2% OF ESTIMATED cost (Amount in Rs.)	Time of completion	Cost of Bid Documents (Amount in Rs.)
1	Construction of Cremation House at Paddapara, Ward No-6, Goreswar under the SOPD fund for the year 2024-25	Estimate cost Rs. 12.00,000.00 Tender Value Rs. 12.00,000.00	Gen Rs. 24.000.00 ST, SC, OBC Rs. 12,000.00	2 months	1000.00

Sd/-
Chairman
Goreswar Municipal Board

IPR(BTC)/C/2024-25/834

Sd/-
Executive Officer
Goreswar Municipal Board

संपादकीय

सरकार के संज्ञान में देहरा

सुशासन की सियासी तीमारदारी के स्तंभ कमोबेश हर सत्ता के कक्ष से निकले और इन करवटों ने हिमाचल के भौगोलिक नक्शे पर कई प्रयोग किए। ताजा प्रयोग देहरा में मुख्यमंत्री कार्यालय का प्रवेश द्वार है। इससे पहले नादौन में मुख्यमंत्री का कैंप आफिस, सुशासन के अपने तरीके खोज लाया। हिमाचल के शासन में भौगोलिक खींचतान हमेशा रही है और इसी से निकले हैं कई प्रयोग। खास तौर पर पंजाब पुनर्गठन के बाद पहाड़ी क्षेत्रों में भौगोलिक सीमाओं को पढ़ते-पढ़ते कहीं न कहीं ऊपरी व निचले हिमाचल के वित्तीय विभेद सामने आए और इस रस्साकशी से उपजे विवादों से अलग होने की कोशिश हुई। स्व. वाई एस परमार के दौर से सुखविंदर सुक्खू के आधार तक पहुंचते-पहुंचते हिमाचल की करवटें अपने गीत सुनाती रहीं। स्व. ठाकुर रामलाल ने सरकार के कद को कांगड़ा की सोहबत में परखा तो पहली बार मंत्रिमंडल ने धर्मशाला में शिविर स्थापित करके नजदीकी के सेतु तलाशे जो बाद में फैलते हुए वीरभद्र सिंह के शीतकालीन प्रवास तक पहुंच गए। विवाद धर्मशाला में हिमाचल भवन पर उठा और धूमल सरकार ने कश्मीर हाउस को आजाद करवा कर पर्यटन निगम को सौंप दिया, लेकिन इसके बाद बाकायदा एक प्रशासनिक सचिवालय बना जहां शिमला के बाद कुछ मंत्री धर्मशाला आकर बैठने लगे। राजनीति के शिल्प को तेजधार देने में माहिर रहे स्व. वीरभद्र सिंह ने शीतकालीन प्रवास को विधानसभा के शीतकालीन सत्र तक पहुंचा कर तपोवन विधानसभा परिसर की स्थापना नहीं की, बल्कि शीतकालीन राजधानी का दर्जा भी दिया, जिसे बाद में आज तक तरजीह नहीं मिली। पिछले कुछ सालों से मुख्यमंत्री का शीतकालीन प्रवास भी गैरजरूरी होता जा रहा है, हालांकि जयराम सरकार ने अपनी पहली इनवेस्टमेंट मीट और सुक्खू सरकार ने अपनी पहली वर्षगांठ मनाने के लिए धर्मशाला में ही स्तंभ स्थापित किए।

ताजा प्रयोग देहरा में मुख्यमंत्री कार्यालय का प्रवेश द्वार है। इससे पहले नादौन में मुख्यमंत्री का कैंप आफिस, सुशासन के अपने तरीके खोज लाया। हिमाचल के शासन में भौगोलिक खींचतान हमेशा रही है और इसी से निकले हैं कई प्रयोग। खास तौर पर पंजाब पुनर्गठन के बाद पहाड़ी क्षेत्रों में भौगोलिक सीमाओं को पढ़ते-पढ़ते कहीं न कहीं ऊपरी व निचले हिमाचल के वित्तीय विभेद सामने आए और इस रस्साकशी से उपजे विवादों से अलग होने की कोशिश हुई। स्व. वाई एस परमार के दौर से सुखविंदर सुक्खू के आधार तक पहुंचते-पहुंचते हिमाचल की करवटें अपने गीत सुनाती रहीं। स्व. ठाकुर रामलाल ने सरकार के कद को कांगड़ा की सोहबत में परखा तो पहली बार मंत्रिमंडल ने धर्मशाला में शिविर स्थापित करके नजदीकी के सेतु तलाशे जो बाद में फैलते हुए वीरभद्र सिंह के शीतकालीन प्रवास तक पहुंच गए। विवाद धर्मशाला में हिमाचल भवन पर उठा और धूमल सरकार ने कश्मीर हाउस को आजाद करवा कर पर्यटन निगम को सौंप दिया, लेकिन इसके बाद बाकायदा एक प्रशासनिक सचिवालय बना जहां शिमला के बाद कुछ मंत्री धर्मशाला आकर बैठने लगे।

आखिर कुछ तो है जिसे शिमला के बाहर ढूंढते-ढूंढते सरकारें धर्मशाला तक पहुंचीं, लेकिन अब फेहरिस्त में क्षेत्रीय राजनीति का बदलाव मुख्यमंत्री के दो शिविर कैंप स्थापित कर रहा है। प्रो. प्रेम कुमार धूमल के बाद सुखविंदर सुक्खू के सामने सियासी दोहन की पारी हमीरपुर संसदीय क्षेत्र की जिरह को आबाद कर रही है और कहना पड़ता है कि सत्ता का शिखर और असर यही है। हमीरपुर संसदीय क्षेत्र के जिस पहलू में कांगड़ा का यह हिस्सा आ रहा है वहां सांसद अनुराग व भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा की निगरानी भी है। अनुराग ठाकुर जहां केंद्रीय विश्वविद्यालय को पहुंचा सकते थे, उससे कहीं आगे इसका देहरा परिसर पहुचं रहा है, जबकि धर्मशाला का प्रस्तावित जदरांगल परिसर अपने बुनियादी प्रश्नों से लड़ रहा है। बनखंडी का चिडियाघर अपने होने की इत्तिला दे रहा है, लेकिन धर्मशाला का टूरिस्ट विलेज, हिमुडा कालोनी, कानवेंशन परिसर, हाई आल्टीट्यूट स्पोट्र्स कांपलेक्स व यूनिटी मॉल अपने खोने की खबर बना रहा है। बहरहाल नई सियासी परंपराओं के आलोक में अगर मजमून को पढ़ा जाए, तो यह स्पष्ट हो रहा है कि देहरा के आवश्यक सवालों की मिट्टी पर सत्ता का ताकतवार घरौंदा खड़ा हुआ। ऐसे में देहरा को जिला स्तर तक की सहूलियतों में इसका कद न्याय प्राप्त करके अब पुरानी अलग जिला बनाने की मांग को इतिश्री कर दे। सुशासन की खोज व राजनीतिक स्वाभिमान के विमर्श में देहरा पिछले कई वर्षों से जिला मुख्यालय का मूलधन पाने की मांग करता रहा है, लेकिन अब उससे बड़ा और राज्य की राजधानी के सामने मुख्यमंत्री व अन्य कार्यालय प्राप्त करके जो हासिल कर रहा है, वहां भविष्य की सियासत के पैमाने जरूर बदलेंगे। देहरा अब पौंग विस्थापन के नए आयताकार परिदृश्य में उम्मीदों की फेहरिस्त में अव्वल व सरकार के संज्ञान में प्रथम दर्जा हासिल कर रहा है।

शिक्षण व प्रशिक्षण में शिक्षक व प्रशिक्षक की भूमिका का महत्व आज भी वही है, जैसा हजारों साल पहले था

ओलंपिक के लिए दावेदारी व खेल प्रशिक्षण

भूपिंदर सिंह

भारतीय ओलंपिक संघ ने अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक कमेटी को नयी दिल्ली आयोजन करवाने हेतु पत्र भेज कर पहला कदम उठा लिया है। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि इस स्तर पर भारत का प्रदर्शन भी उत्कृष्ट हो। इसलिए भारत में अच्छे प्रशिक्षकों को सही सुविधा व प्रबंधन देना बहुत ही जरूरी हो जाता है, क्योंकि खिलाड़ी से उच्च परिणाम केवल प्रशिक्षक ही दिलाता है। आज का अभिभावक खेलों में भी अपने बच्चों का कैरियर देख रहा है क्योंकि खेल आज अपने आप में एक प्रोफैशन है।

ओलंपिक 2036 भारत में आयोजित करवाने की बात पर भारतीय ओलंपिक संघ ने अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक कमेटी को नयी दिल्ली आयोजन करवाने हेतु पत्र भेज कर पहला कदम उठा लिया है। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि इस स्तर पर भारत का प्रदर्शन भी उत्कृष्ट हो। इसलिए भारत में अच्छे प्रशिक्षकों को सही सुविधा व प्रबंधन देना बहुत ही जरूरी हो जाता है, क्योंकि खिलाड़ी से उच्च परिणाम केवल प्रशिक्षक ही दिलाता है। आज का अभिभावक खेलों में भी अपने बच्चों का कैरियर देख रहा है क्योंकि खेल आज अपने आप में एक प्रोफैशन है। मानव ने विज्ञान में बहुत प्रगति कर प्रौद्योगिकी व चिकित्सा के क्षेत्र में नए-नए सफल शोध कर जीवनशैली को काफी आसान व सुविधाजनक बना लिया है, मगर शिक्षण व प्रशिक्षण में शिक्षक व प्रशिक्षक की भूमिका का महत्व आज भी वही है, जैसा हजारों साल पहले था। महाभारत में कृष्ण सारथी नहीं होते तो क्या अर्जुन भीष्म, कर्ण व अन्य अजेय महारथियों को हरा पाता? विश्व स्तर पर किसी खेल विशेष में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए क्षमतावान प्रशिक्षक का होना बेहद जरूरी होता है। हमारे यहां खेल प्रशिक्षण के लिए वह वातावरण ही नहीं बन पाया है जिसमें प्रशिक्षक खिलाड़ी से राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट परिणाम दिला सके। खेल प्रशिक्षण दस साल से भी अधिक समय तक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। इतनी समय अवधि खेल प्रशिक्षण को देकर ही खिलाड़ी अपने प्रदेश व देश को गौरव दिला पाता है। हिमाचल प्रदेश में लगातार प्रशिक्षण कार्यक्रम का कोई भी प्रावधान अभी तक नहीं बन पाया है। हिमाचल प्रदेश राज्य युवा सेवाएं एवं खेल विभाग के प्रशिक्षकों को कभी विभिन्न विभागों की भर्तियों में ड्यूटी, तो कभी मेलों व उत्सवों में हाजिरी भरनी पड़ती है। खेल प्रशिक्षक की नियुक्ति ही उच्च खेल परिणामों के लिए की गई होती है, मगर यहां पर प्रशिक्षकों को केवल मल्टीपर्पज कर्मचारी बना दिया गया है। हिमाचल प्रदेश के अधिकतर प्रशिक्षकों का कार्य उच्च खेल प्रशिक्षण से हट कर अपनी फिटनेस तथा सेना में भर्ती कराने तक सीमित हो गया है। हिमाचल प्रदेश के मेलों व उत्सवों में किसी और खेल का प्रशिक्षक किसी

और ही खेल की प्ले फील्ड में नजर आता है। इसी तरह पुलिस आदि विभागों की भर्तियों में एथलेटिक्स प्रशिक्षकों की ड्यूटी तो समझ आती है, मगर वहां हर खेल के प्रशिक्षक को भेज दिया जाता है। नियमानुसार इन भर्तियों के लिए एथलेटिक्स प्रशिक्षक ही सक्षम है, क्योंकि इस टैस्ट में केवल एथलेटिक स्पर्धाओं को ही रखा गया है। ऐसे में एथलेटिक्स प्रशिक्षक की ड्यूटी तो समझ आती है, मगर वहां अन्य खेलों- कुश्ती, मुक्केबाजी, हैंडबाल व वॉलीबाल आदि के प्रशिक्षक का क्या औचित्य है, इस बात का उत्तर किसी के भी पास नहीं है। विभिन्न सरकारों ने खेल ढांचे में काफी तरक्की भी की है, मगर क्षमतावान प्रशिक्षकों की नियुक्ति के बारे में हिमाचल में अभी तक कुछ भी नहीं हो पाया है। स्तरीय प्रशिक्षकों के बिना उत्कृष्ट प्रदर्शन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। जो प्रशिक्षक खेल प्रशिक्षण से दूर रह कर मौज-मस्ती कर रहा है, वह तो खुश रहता होगा, मगर जो सच ही में प्रशिक्षण करवा रहा होगा, वह जब कई दिनों तक खेल मैदान से दूर रहेगा तो फिर कौन अभिभावक अपने बच्चे को बिना प्रशिक्षक के मैदान में भेजेगा। हद तो तब हो जाती है, जब राज्य में चल रहे खेल छात्रावासों में नियुक्त प्रशिक्षकों की ड्यूटी भर्तियों में लगा दी जाती है और खेल छात्रावास में रह रहे खिलाडियों को भी खेल प्रशिक्षण से दूर कर दिया जाता रहा है। क्या प्रतिभा खोज से चयनित इन अति प्रतिभाशाली खिलाडियों को प्रशिक्षक से कुछ समय के लिए ही सही, इस तरह प्रशिक्षण कार्यक्रम से दूर करना कहां तक उचित है। खेल छात्रावासों में नियुक्त प्रशिक्षकों की ड्यूटी खेल प्रशिक्षण के सिवा और कहीं भी नहीं होनी चाहिए। आजकल हर शिक्षित मां-बाप के दो और कई जगह तो एक ही बच्चा है, ऐसे में वह उसे उस क्षेत्र में उच्चत्तम शिखर तक ले जाना चाहता है, जिसमें बच्चे की रुचि व उस क्षेत्र के लिए पर्याप्त प्रतिभा भी हो। आज का अभिभावक अपने बच्चों के कैरियर की खातिर ही सरकार की मुफ्त शिक्षा सुविधाओं को छोड़कर निजी क्षेत्र की महंगी, मगर अधिक गुणवत्ता वाली शिक्षा के लिए लाखों रुपए खर्च कर रहा है। आज लाखों प्रतिभाशाली विद्यार्थी निजी कोचिंग संस्थानों में डाक्टर व इंजीनियर बनने इसलिए जमा दो की परीक्षा से कई वर्ष पहले पहुंच रहे हैं। इसी तरह अब खेल क्षेत्र में भी हो रहा है। अभिभावक अपने बच्चों के लिए खेलों में भी कैरियर तलाश रहा है और इस सबके लिए अच्छी खेल सुविधाओं के साथ-साथ उच्च स्तरीय प्रशिक्षक भी लगातार कई वर्षों तक उसके बच्चों को मिलना चाहिए ताकि वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक विजेता बनने का सफर सफलतापूर्वक पूरा कर सकें। इसलिए देश में निजी खेल अकादमियों का चलन भी बढ़ रहा है। गोपीचंद बैडमिंटन अकादमी के विश्व स्तर के परिणाम सबके सामने हैं। यह सब लगातार अच्छे प्रशिक्षण कार्यक्रम का ही नतीजा है। इस समय विभिन्न खेलों के लिए देश में निजी स्तर पर कई अकादमियां शुरू हो चुकी हैं। इन खेल अकादमियों को अधिकतर पूर्व ओलंपियन चला रहे हैं और यहां से अच्छे खेल परिणाम भी मिल रहे हैं। इन अकादमियों में जो विशेष है, वह यह है कि यहां उच्च क्षमता वाला प्रशिक्षक लगातार उपलब्ध है। हिमाचल प्रदेश के पास आज विभिन्न खेलों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्ले फील्ड तैयार हैं, पर वहां पर या तो प्रशिक्षक हैं ही नहीं और जहां हैं भी, वे या तो प्रशिक्षण से बेरुख हैं या उनमें अच्छे स्तर के खेल परिणाम दिलाने की क्षमता ही नहीं है। क्या हिमाचल सरकार उड़ीसा व गुजरात आदि राज्यों की तरह उत्कृष्ट खेल परिणाम दिलाने वाले बढ़िया प्रशिक्षकों को यहां लगातार कई वर्षों के लिए अनुबंधित कर प्रदेश के खिलाडियों को राज्य में ही प्रशिक्षण सुविधा दिला कर खेल प्रतिभा का पलायन रोक सकती है।

दृष्टि कोण

प्रदेश सरकार की कारगुजारी का इम्तिहान

राजस्थान में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार को आगामी 13 नवंबर को होने वाले सात विधानसभा उपचुनावों से फिर चुनावी परीक्षा का सामना करना पड़ेगा। यह उपचुनाव भाजपा सरकार के 11 महीने के कार्यकाल का 'लिटमस टेस्ट' माना जा रहा है, जिसमें यह देखा जाएगा कि सरकार ने जनता को कौन सी योजनाओं का लाभ दिया और उनका कितना प्रभाव पड़ा। इन सात उपचुनावों में झुंझुनू, रामगढ़, दौसा, देवली-उनियारा, खींवसर, सलूंबर और चौरासी सीटें शामिल हैं, जिनमें से पांच सीटें लोकसभा चुनाव 2024 के बाद खाली हुई हैं। बता दें कि इन सात सीटों में से कांग्रेस का चार, बीएपी, आरएलपी और बीजेपी का एक-एक सीट पर कब्जा था। कुल 200 सदस्यों वाली विधानसभा में अभी भाजपा के 114 विधायक, कांग्रेस के 65, बीएपी-3, बसपा-2, आरएलपी-1, निर्दलीय 8, और रिक्त 7 हैं। इन उपचुनावों का महत्व इसलिए भी है क्योंकि ये भाजपा के कार्यकाल की उपलब्धियों का मूल्यांकन होगा। इन सीटों के लिए राजनीतिक दलों ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है, जहां परिवारवाद और सहानुभूति आधारित उम्मीदवारों की महत्वपूर्ण भूमिका है। उदाहरण के लिए, कांग्रेस ने रामगढ़ सीट पर भूतपूर्व विधायक जुबेर खान के बेटे आर्यन जुबैर को उम्मीदवार बनाया है। कांग्रेस ने इस सीट पर सहानुभूति को प्रमुख मुद्दा बनाते हुए अपने प्रत्याशी को उतारा है। वहीं भाजपा ने सुखवंत सिंह को टिकट दिया है, जो 2023 विधानसभा चुनाव में आजाद समाज पार्टी से हार चुके थे। झुंझुनू से बृजेंद्र ओला (सांसद) के पुत्र अमित ओला को टिकट दिया गया है, जबकि भाजपा ने राजेंद्र भम्भू को इस सीट पर मैदान में उतारा है। यह सीट ओला परिवार के लिए महत्वपूर्ण रही है, क्योंकि इस परिवार ने यहां पर कई चुनावों में सफलता हासिल की है। सलूंबर सीट पर भाजपा ने स्व. अमृतलाल मीणा की पत्नी शांता देवी मीणा को टिकट दिया है, जबकि कांग्रेस ने रेशमा मीणा को मैदान में उतारा है। यहां बीएपी प्रत्याशी जीतेश कटारा त्रिकोणीय मुकाबला बना रहे हैं। खींवसर सीट पर भाजपा और कांग्रेस दोनों ने अपने उम्मीदवारों को उतारा है। भाजपा ने रेवत राम डांगा को टिकट दिया है, जबकि कांग्रेस ने रतन चौधरी को मैदान में उतारा है। इस सीट पर पहले ही आरएलपी के हनुमान बेनीवाल का प्रभाव था, जिन्होंने नागौर लोकसभा सीट पर भी जीत हासिल की थी। इस सीट पर आरएलपी से हनुमान बेनीवाल की पत्नी कनिका प्रत्याशी हैं। दौसा सीट पर भाजपा ने किरोड़ीलाल मीणा के भाई जगमोहन मीणा को उम्मीदवार बनाया है, जबकि कांग्रेस ने दलित प्रत्याशी दीनदयाल बैरवा को टिकट दिया है। यह सीट मीणा और गुर्जर समुदायों के लिए महत्वपूर्ण है, जहां दोनों दल अपनी-अपनी जीत के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। दौसा सीट को लेकर दोनों दलों ने पूरी ताकत झोंक दी है क्योंकि यह सीट राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है। देवली-उनियारा और चौरासी सीटों पर भी जातीय और क्षेत्रीय समीकरण महत्वपूर्ण होंगे। चौरासी सीट पर बीएपी के अनिल कटारा, कांग्रेस के महेश रोट और भाजपा के करिलाल नैनोमा के बीच त्रिकोणीय मुकाबला होगा। चौरासी सीट पर आदिवासी मुद्दों का प्रभाव भी देखा जा सकता है, क्योंकि शिक्षा मंत्री मदन दिलावर का आदिवासी विरोधी बयान भाजपा को कुछ हानि पहुंचा सकता है, लोकसभा चुनाव 2024 में भाजपा को इस आदिवासी बेल्ट में नुकसान हुआ थ। देवली-उनियारा सीट पर कांग्रेस के केसी मीणा और भाजपा के राजेंद्र गुर्जर के बीच मुकाबला दिलचस्प होगा। इस सीट पर टोंक लोकसभा से जीते हरीश मीणा की प्रतिष्ठा भी दांव पर होगी। इस सीट पर राजनीतिक संघर्ष के साथ-साथ पार्टी के प्रभाव और उम्मीदवारों की छवि भी निर्णायक भूमिका निभा सकती है। यह उपचुनाव भाजपा के लिए एक चुनौतीपूर्ण स्थिति प्रस्तुत करता है, क्योंकि पिछले कुछ उपचुनावों में उसे हार का सामना करना पड़ा है, जैसे कि बागीडोरा और सरदारशहर सीटों पर। भाजपा को इन हारों से कुछ सीखने का अवसर मिला है और इस बार वह चुनाव में कुछ नया करना चाहती है। भाजपा ने अपने विकास के एजेंडे को प्रमुखता से रखा है, जिसमें ईस्टर्न राजस्थान कैनाल प्रोजेक्ट (ईआरसीपी), किसानों के लिए बेहतर एमएसपी और जनजातीय अधिकारों का मुद्दा प्रमुख हैं। हालांकि, भाजपा के अंदरूनी विवाद और बागी विधायकों का चुनावी हस्तक्षेप पार्टी के लिए मुश्किलें पैदा कर रहा है। पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे का प्रभाव और उनके समर्थकों की चुप्पी भी भाजपा को मुश्किल में डाल सकती है। इसके बावजूद, भाजपा राज्य के नेताओं, कार्यकर्ताओं को एकजुट करने की कोशिश कर रही है। भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में भाजपा उपचुनावों में जीत का दावा कर रही है। भाजपा के लिए यह उपचुनाव इसलिए भी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इसके परिणाम मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के भविष्य और मंत्रिमंडल विस्तार पर असर डाल सकते हैं। इसके अलावा, लोकसभा चुनाव 2024 में कई सीटों पर हुई हार का असर हो सकता है। राजस्थान में भाजपा और कांग्रेस दोनों की ओर से ये उपचुनाव प्रतिष्ठा और राजनीतिक भविष्य के लिए महत्वपूर्ण हैं।

कुछ अलग

सडक़ें चौड़ी हो गई हैं...

सुबह सुबह को बुलाया था मुख्यमंत्री ने, बोले-'देखो हम सडक़ें चौड़ी कर रहे हैं। आवागमन सुविधाजनक होता जा रहा है।' मैंने कहा-'सडक़ें ही क्यों, पुल बन रहे हैं और नए-नए फ्लाईओवर। शहर को आपने चमाचम कर दिया है। बिजली अबाधित है। थोड़ा सा गांवों पर भी ध्यान दें तो अगले चुनाव में नौका आसानी से किनारे जा लगेगी।' मेरी बात पर थोड़ा झुंझलाए, फिर सहज होकर बोले-'गांवों की और चुनावों की चिंता तुम छोड़ो। मैंने तुम्हें इसलिए बुलाया था कि तुमने देख लिया कि राजधानी में विकास किस गति से गतिमान है।' मैं बोला-'विकास की मत पूछिये। इसके नाम पर तो आपने गंगा बहा दी है। अतिक्रमण की समस्या लगभग समाप्त हो गई है। थोड़ा सा हाउसिंग सोसाइटीज पर ध्यान दे लेते तो और उत्तम रहता।' वे फिर बोले-'हाउसिंग सोसाइटीज को मारो गोली। विकास की बही गंगा पर एक 'राइटअप' लिख मारो।' मैंने कहा-'लिखने में कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन छपवाना जरा जटिल है।' वे बोले-'उसकी चिंता छोड़ो, सब मैनेज करा दूंगा। तुम तो अपना 'राइटअप' तैयार करो।' मैंने कहा-'सर, यह अकाल का क्या लफड़ा है? आये दिन चला आता है।' वे बोले-'जरा धीरे बोलो, अकाल को कन्टीन्यु करने दो। यह बहुत जरूरी है। काफी लोग जूझ रहे हैं। काफी लोग काम कर रहे हैं। इस तरह काफी लोग खा रहे हैं। काफी लोग जीविका जुटा रहे हैं। अकाल बहुत जरूरी है हमारे लिए। बारिश शुरू तो हो गई है, लेकिन इससे बात बनी नहीं है। राइटअप में अकालों को तो सब साइड ही कर देना। इसे आवश्यकता हुई तो बाद में देखेंगे। तुम तो हमने जो सडक़ें चौड़ी की हैं, उस पर गौर करो। कुल मिलाकर विकास की गंगा बह निकली है, उसे केंद्रबिंदु बनाना है।' मैं बोला-'सडक़ों पर तो लिखना ही पड़ेगा। वाकई सडक़ें बहुत चौड़ी हो गई हैं। मकान-दुकान तोडक़र भी इन्हें चौड़ा किया गया है। लेकिन सर इधर सडक़ बनकर तैयार होती है और उधर दूसरे ही दिन इन्हें खोद दिया जाता है। कभी सीवर लाइन के लिए और कभी टेलीफोन के लिए?' 'इसे भी छोड़ो, इसे मैं देख लूंगा, राइटअप में इसका भी जिक्र नहीं करना है। मैंने कहा न, सडक़ें पैरिस का मुकाबला कर रही हैं। इस पर ध्यान देना है तुम्हें।' वे बोले तो मैंने कहा-'मैं मानता हूं। सडक़ों के मामले में हम पैरिस से आगे जा रहे हैं। परंतु महंगाई सुरसा की तरह फैलती जा रही है।' इस बार उन्होंने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लिया। बालों को खींचा, आसमान को देखा और फिर मुझे घूरकर बोले-'तुम क्यों नहीं बात का मर्म समझ रहे। महंगाई से मेरा लेना-देना क्या है? सुनो, भूख से कोई मर जाए, लेकिन महंगाई से मरते मैंने किसी को नहीं देखा। इधर कलर टीवी हमने सस्ता किया है। खरीदने वालों का तांता लगा हुआ है। इसलिए महंगाई की बात बेमानी है। 'राइटअप' में महंगाई का जिक्र तो 'भूले' से भी नहीं करना है, मैंने कहा न, सडक़ें बहुत चौड़ी हो गई हैं। विकास की गंगा बह रही है।' 'सर, मैं दोनों ही बातों से इंकार नहीं करता, परंतु गरीबों को दिया जाने वाला सस्ता राशन अभी तक दुकानों पर नहीं पहुंचा है। वहां कतारें लंबी हो रही हैं। गरीबी हटाने के मुद्दे से तो आप मुकर नहीं सकते।' मैंने कहा तो इस बार वे लगभग चिल्लाकर बोले-'शर्मा समझो। गरीबी नहीं मिटाना हमारी विवशता है। कहना और करना दो अलग-अलग बातें हैं और हम उस पर अमल कर रहे हैं। इसलिए इस बात को भी अलग रखो। सडक़ें चौड़ी हो गई हैं, बस इसी बात पर फोकस करो।'

देश दुनीया से

जन सहयोग से हो कारगर नीतियों का क्रियान्वयन

राजधानी दिल्ली में प्रदूषण की समस्या गंभीर हो गई है। सुप्रीम कोर्ट ने इस पर केंद्र और राज्य सरकारों की कार्रवाई को नकारते हुए कहा कि मौजूदा कानून प्रभावी नहीं हैं। कोर्ट ने यह भी कहा कि स्वच्छ वातावरण में रहना हर नागरिक का मौलिक अधिकार है, जिसे सरकार को सुनिश्चित करना चाहिए। निःसंदेह, प्रदूषण बढ़ने के प्रमुख कारणों में आतिशबाज़ी, किसानों द्वारा पराली जलाना, हवा की रुकावट, बढ़ती धूल और वाहनों का धुआं शामिल हैं। विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट के अनुसार, दिल्ली में पीएम 2.5 की सघनता विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों से कहीं अधिक है, जिससे यह दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में शामिल हो गया है। यहां की हवा में ज़हरीले तत्वों की अधिकता की वजह से ही स्थानीय लोग सालभर वायु और ध्वनि प्रदूषण के गंभीर प्रभावों का सामना करते हैं। इस समस्या को दूर करने के लिए दिल्ली सरकार ने कई प्रयास किए हैं, जैसे कि बाहरी वाहनों के प्रवेश पर रोक, पटाखों की बिक्री पर प्रतिबंध, किसानों को आर्थिक सहायता देने, एनसीआर में उद्योगों को पाइप्ड नेचुरल गैस (पीएनजी) मुहैया कराना और कई अन्य कदम जैसे बदरपुर बिजली संयंत्र बंद करना और निर्माण अपशिष्ट प्रबंधन नियम लागू करना शामिल है। इसके बावजूद, प्रदूषण की समस्या जस की तस बनी हुई है, जिसके कारण लोगों की जीवन प्रत्याशा घट रही है। इसके अतिरिक्त, प्रदूषण के कारण प्राकृतिक संसाधन और पर्यटन स्थल भी प्रभावित हो रहे हैं। ध्वनि प्रदूषण भी न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है। दिल्ली में प्रदूषण की स्थिति और भी विकट हो गई है, खासकर त्योहारों के दौरान। कुल 3.3 करोड़ की जनसंख्या में से बड़ी संख्या में अधिकांश लोग किसी न किसी रूप में प्रदूषण फैलाने के लिए जिम्मेदार हैं, लेकिन न कोई ठोस जागरूकता अभियान चलाया गया है। सुप्रीम कोर्ट ने बार-बार कानून के तहत त्योहार मनाने की दिशा में आदेश दिए, लेकिन इनका पालन नहीं होता। पुलिस महज औपचारिकता निभाती है और आम जनता प्रदूषण के प्रति जागरूक नहीं है। समस्या का समाधान तभी संभव है जब सरकार और नागरिक दोनों पर्यावरण के प्रति संवेदनशील हों। दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण का सबसे गंभीर प्रभाव लोगों की सेहत पर पड़ रहा है,

खासकर नई-नई बीमारियों के रूप में। ठंड के मौसम में प्रदूषण के कारण सांस संबंधी बीमारियां बढ़ रही हैं और बड़ी संख्या में मौतें हो रही हैं। दिल्ली में एयर क्वालिटी इंडेक्स 500 तक पहुंच जाता है, जो विश्व स्वास्थ्य संगठन की सीमा से 100 गुना अधिक है। इस प्रदूषण का असर जीवन प्रत्याशा पर भी पड़ रहा है; शिकागो विश्वविद्यालय के अनुसार, दिल्ली में रहने वालों के जीवनकाल में औसतन 11.9 साल की कमी आई है। प्रदूषण के कारण दिल, फेफड़े, आंत, आंख, हड्डी और यकृत से जुड़ी बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं। मानसिक स्वास्थ्य पर भी इसका गहरा असर हो रहा है, विशेष रूप से बच्चों में याददाश्त और गणितीय क्षमताओं में गिरावट देखी जा रही है। दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण केवल वायु तक सीमित नहीं है, जल, ध्वनि, मिट्टी और प्रकाश प्रदूषण भी तेजी से बढ़ रहा है। यमुना जैसे प्रमुख जलस्रोतों का पानी प्रदूषित हो चुका है, जिससे न केवल जल का उपयोग मुश्किल हो गया है, बल्कि आवारा जानवरों और पक्षियों में बीमारियों का संक्रमण बढ़ा है, और मवेशियों व पक्षियों की मौतें हो रही हैं। एक अमेरिकी शोध के अनुसार, भारत के बड़े शहरों में बढ़ता मिट्टी, जल और ध्वनि प्रदूषण पर्यावरण और जैव विविधता के लिए गंभीर खतरे का संकेत है। राष्ट्रीय कैंसर रजिस्ट्री कार्यक्रम के अनुसार, पिछले तीस वर्षों में दिल्ली में कैंसर के मरीजों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है, विशेष रूप से 0 से 14 साल के बच्चों में। दिल्ली की हवा में मौजूद खतरनाक गैसें जैसे कार्बन मोनोआक्साइड, नाइट्रिक आक्साइड, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड और ओजोन स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरे पैदा करती हैं। इसके अलावा, पीएम 2.5 (अल्ट्रा फाइन पार्टिकुलेट मैटर) प्रदूषण का एक और प्रमुख कारण है, जो मोटर वाहनों, बिजली संयंत्रों, फैक्टरियों और पटाखों से निकलता है। पीएम 2.5 के संपर्क में आने से दिल और फेफड़ों की बीमारियों का खतरा बढ़ता है, जो कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का कारण बन सकता है। डाउन टू अर्थ की रिपोर्ट और साल 2018 से 2023 के अक्तूबर महीने के बीच 25 शोधों के अनुसार, भारत के बच्चों पर वायु प्रदूषण का असर केवल उत्तर भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि देश के तमाम बड़े शहरों में यह समस्या बढ़ रही है। इसके कारण नवजात बच्चों का जन्म के वक्त वजन में कमी, समय से पहले प्रसव और मृत जन्म दर वृद्धि हो रही है। यूनाइटेड नेशन की रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में करोड़ों बच्चे एनीमिया से ग्रस्त हैं और प्रदूषण के कारण एंटीबायोटिक दवाओं का प्रभाव भी कम हो रहा है। एनसीआर में वाहनों की संख्या और धूल की समस्या बढ़ने के कारण भविष्य में स्वास्थ्य पर गंभीर असर पड़ने की आशंका है। प्रदूषण से निपटने के लिए सरकार के उपायों और कोर्ट के आदेशों के साथ-साथ आम आदमी की सक्रिय भागीदारी भी जरूरी है। इलेक्ट्रिक वाहनों का उपयोग बढ़ाना, धूल नियंत्रण में जनसहयोग और पराली जलाने से होने वाले प्रदूषण को रोकने के लिए एनसीआर के सटे राज्यों के किसानों को भी जागरूक करना आवश्यक है।

आप का नजरीया

अमरीका का 'ट्रंप कार्ड'

डोनाल्ड ट्रंप अमरीका के 47वें राष्ट्रपति होंगे। उनके पक्ष में अभी तक 295 इलेक्टोरल वोट हैं, जबकि कमला हैरिस 223 इलेक्टर्स के साथ काफी पिछड़ गई हैं। ट्रंप की टीम का आकलन है कि उन्हें 300 से अधिक इलेक्टर्स का समर्थन मिल सकता है। यह संपादकीय लिखने तक मतगणना जारी थी। अमरीका के लोकतंत्र ने एक बार फिर ट्रंप के नेतृत्व में विश्वास जताया है, नतीजतन उनके पक्ष में 51 फीसदी से अधिक जनादेश है। ट्रंप दूसरी बार अमरीका के राष्ट्रपति बन रहे हैं। बीच में चार साल का अंतराल था, जब जो बाइडेन राष्ट्रपति पद पर रहे। बाइडेन ने बेहद करीबी मुकाबले में ट्रंप को पराजित किया था। बहरहाल इस बार ट्रंप की जीत ऐतिहासिक, चमत्कारिक और अविश्वसनीय मानी जानी चाहिए। खुद ट्रंप ने भी ऐसा माना है। दरअसल उद्योगपतियों का एक वर्ग, संघीय नौकरशाहों की एक जमात, प्रमुख मीडिया समूह और दुष्प्रचार का एक प्रायोजित अभियान ट्रंप के खिलाफ था। वे वामपंथी सोच और सियासत के लोग थे और ट्रंप के खिलाफ लगातार प्रचारित कर रहे थे कि वह कमला हैरिस से पिछड़ रहे हैं। फिर प्रायोजित सर्वे भी प्रकाशित किए जाते रहे कि मुकाबला कांटेदार है, लेकिन जिस तरह इलेक्टर्स को जनादेश मिला है, वह स्पष्ट करता है कि इस बार अधिकांश अमरीका ने ट्रंप को ही चुनने का मन बना लिया था। औपचारिक तौर पर 6 जनवरी, 2025 को 538 निर्वाचित प्रतिनिधि राष्ट्रपति के लिए वोट करेंगे और उसी के बाद ट्रंप आधिकारिक तौर पर 'सुपर पॉवर' देश के 'सुपर बॉस' घोषित किए जाएंगे। नए राष्ट्रपति 20 जनवरी को शपथ ग्रहण करेंगे और उसके बाद अमरीका का 'ट्रंप काल' शुरू होगा। ट्रंप ने उसे 'स्वर्णिम दौर' माना है। बेशक अमरीका में एक बड़ा बदलाव सामने आया है, लेकिन ट्रंप के 'व्हाइट हाउस' में प्रवेश के बाद विश्व-व्यवस्था भी बदलेगी। रूस के राष्ट्रपति पुतिन नए राष्ट्रपति की नीति और नीयत का आकलन करेंगे, उसके बाद ही बधाई देंगे। संभव है कि रूस पर अमरीकी पाबंदियों में कमी आए या उनमें ढील दी जाए! ईरान के सर्वोच्च धार्मिक नेता और अफगानिस्तान की तालिबानी सरकार जरूर चिंतित होंगे। ट्रंप के पहले कार्यकाल में भी अमरीका घोर ईरान-विरोधी था। इजरायल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू बल्लियों उछल रहे होंगे, क्योंकि वह ट्रंप के ही पक्षधर, समर्थक रहे हैं। अमरीका में यहूदी लॉबी भी बहुत ताकतवर है। भारत के प्रधानमंत्री मोदी के 'गहरे दोस्त' ओबामा और बाइडेन भी थे। पुतिन भी हैं और ट्रंप तो पहले से ही 'प्रिय दोस्त' रहे हैं, लेकिन द्विपक्षीय संबंध और कूटनीति ऐसी 'दोस्ती' के सहारे नहीं चला करतीं। बेशक राष्ट्रपति के तौर पर ट्रंप का बुनियादी लक्ष्य होगा कि अमरीका को दोबारा 'महान' बनाया जाए। 'अमरीका सर्वप्रथम' की नीति लागू की जाए। उनके सामने 100 फीसदी जीडीपी के कर्ज वाली अर्थव्यवस्था, महंगाई, बेरोजगारी, अवैध शरणार्थी सरीखी ज्वलंत समस्याएं हैं, लेकिन राष्ट्रपति ट्रंप की अंतरराष्ट्रीय भूमिका भी कमतर नहीं है।

हरियाणा में दो लाख लोगों को मिलेंगे सौ-सौ गज के प्लॉट : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ने की हाउसिंग फॉर ऑल विभाग की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता

चंडीगढ़ (हिंस)। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि जल्द ही गांवों में दो लाख लोगों को एक सौ-एक सौ गज के प्लॉट वितरित किए जाएंगे। इसके साथ ही प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के तहत इन लाभार्थियों को मकान बनाने के लिए वित्तीय सहायता भी उपलब्ध करवाई जाएगी। मुख्यमंत्री शुक्रवार की शाम चंडीगढ़ में हाउसिंग फॉर ऑल विभाग की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। इस अवसर पर विकास एवं पंचायत मंत्री कृष्ण लाल पंवार और शहरी स्थानीय निकाय मंत्री विपुल गोयल भी उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि 100-100 गज के प्लॉट शहरों की तर्ज पर सभी बुनियादी सुविधाओं से सुसज्जित विकसित कॉलोनियों में दिए जाएंगे, जिनमें पक्की सड़कें,

बिजली, स्वच्छ पेयजल, स्ट्रीट लाइट, सौर ऊर्जा, पार्क और ओपन ग्रीन स्पेस जैसी सभी भौतिक सुविधाएं उपलब्ध होंगी। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि मुख्यमंत्री शहरी आवास योजना के तहत फ्लैट लेने के लिए पंजीकृत आवेदकों लाभार्थियों को प्लॉट आवंटित किए गए थे, उन्हें प्रधानमंत्री आवास योजना से जोड़कर मकान बनाने के लिए 2.50 लाख रुपए की वित्तीय सहायता भी उपलब्ध करवाई जाएगी। इतना ही नहीं, इन 14 शहरों में लगभग 170 करोड़ रुपए की लागत से इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कार्यों का शुभारंभ जल्द ही किया जाएगा। हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण द्वारा इस कार्य के लिए अनुमान तैयार किए जा चुके हैं। बैठक में जानकारी दी गई कि सेक्टर 23 जगाधरी में को पहले चरण में 8 जिलों में निजी डेवलपर्स द्वारा ईडब्ल्यूएस श्रेणी के लिए बनाए गए 6618 फ्लैट्स का आवंटन भी शीघ्र किया जाएगा। नायब सिंह सैनी ने कहा कि मुख्यमंत्री शहरी आवास योजना के अंतर्गत 14 शहरों में जिन मुख्यमंत्री शहरी आवास योजना के 2000 लाभार्थियों को मकान निर्माण शुरू करने हेतु प्लॉट का कब्जा दिया जाएगा। हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण द्वारा यहां सभी भौतिक सुविधाएं उपलब्ध करवा दी गई हैं।

कश्मीर में धारा 370 की बहाली को लेकर कांग्रेसी नेताओं का दोहरा चरित्र हुआ उजागर : कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़

जयपुर (हिंस)। कैबिनेट मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने शुक्रवार को भारतीय जनता पार्टी प्रदेश कार्यालय में प्रेसवार्ता को संबोधित करते जम्मू -कश्मीर विधानसभा में धारा 370 बहाली को लेकर इंडी अलायंस और कांग्रेस पर सवाल उठाए। कर्नल राठौड़ ने कांग्रेसी नेताओं को भारत का विभाजन करने वाला और अलगाववादी विचारधारा को बढ़ावा देने वाला बताते हुए कहा कि राहुल गांधी और इनके नेताओं द्वारा लगातार पिछले कई सालों से भारत को तोड़ने करने का प्रयास किया जा रहा है, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह ने इनके प्रयासों को विफल कर दिया। कांग्रेस और इनके गठबंधन वाली राजनीतिक पार्टियां 370 को बहाल करने के लिए चाहे जितने प्रयास कर लें, लेकिन पीएम मोदी ने धारा 370 का अंतिम संस्कार कर दिया है ये धारा अब वापस खड़ी होने वाली नहीं है। कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने कांग्रेसी नेताओं पर सवाल दागा कि राहुल गांधी और इनकी पार्टी के नेता ये स्पष्ट कर दें कि वे धारा 370 को हटाने के पक्ष में है या उसे बहाल करने के पक्ष में है। देश की जनता के सामने कांग्रेसी नेताओं को स्पष्टीकरण देना चाहिए। कर्नल राठौड़ ने कहा कि देश की कांग्रेस पार्टी हमारे आने वाली पीढ़ी को खंडित और बंटा हुआ भारत देना चाहती है। कांग्रेस पार्टी सत्ता हासिल करने के एवज में देश को बांटने के लिए और खंडित तक करने के लिए तैयार है। कांग्रेस की देश को खंडित करने की मानसिकता धारा 370 वापस लाने की नाकामयाब प्रयास से सामने आ गई है। इनके नेताओं का दोहरा चरित्र देश के सामने आ गया है। कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने बताया कि राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी ने आज पहली बार देश को विभाजित करने का प्रयास नहीं किया है, इससे पहले भी इन्होंने भारत को तोड़ने वाली ताकतों के साथ हाथ मिलाया है। 2010 में जब राहुल गांधी जम्मू-कश्मीर गए थे तो इन्होंने अलगाववादी सोच वाले नेताओं से वार्ता की, जब ये यूरोप और अमेरिका जाते है तो वहां विश्वविद्यालय के अंदर भारत के लोकतंत्र को एक खतरा बताते है, और यूरोप-अमेरिका को भारत में दखल देने के लिए न्यौता देते है। राहुल गांधी ने जेएनयू में टूकड़े-टूकड़े गैंग का समर्थन किया, इतना ही नहीं, देश की आतंकी घटनाओं में हिन्दू टेरर का नाम दिया, वहीं दूसरी ओर सेना के सर्जिकल स्ट्राइक पर भी इन्होंने सवाल उठाए। इसी कांग्रेस पार्टी ने अब जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाने के लिए नेशनल क्रॉन्फ्रेंस के साथ समर्थन दिया। कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने कहा कि ऐसे में कांग्रेसी नेताओं को यह स्पष्ट करना चाहिए कि क्या बाबा भीमराव अंबेडकर द्वारा बनाया गया संविधान जम्मू-कश्मीर में लागू नहीं होना चाहिए?

लव जिहाद: प्रेम जाल में फंसाकर नाबालिग से बनाए संबंध,शादी के लिए धर्म परिवर्तन का बनाया दबाव

जयपुर (हिंस)। जयपुर में कथित लव जिहाद का मामला सामने आया है। एक मुस्लिम युवक ने पहले नाम बदलकर एक नाबालिग को प्रेम जाल में फंसाया और फिर शादी का झांसा देकर उसके साथ होटल में सम्बंध बनाए। जब पीड़िता ने आरोपी से शादी करने की बात कहीं तो उसने खुद को मुस्लिम बताया और कहा कि तू हिंदू है मैं तेरे से कैसे शादी कर सकता हूं। शादी के लिए तूझे मुस्लिम धर्म ग्रहण करना पड़ेगा। इस पर पीड़िता ने सारी आपबीती परिजनों को बताई। इस पर परिजन उसे लेकर माणक चौक थाने पहुंचे और मामला दर्ज करवाया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मामले की जांच एसीपी माणक चौक पीयूष कविया कर रहे है। पुलिस के अनुसार संजय बाजार निवासी एक 15 साल की बालिका ने मामला दर्ज करवाया कि जमीर अफरीदी ने नाम बदलकर उससे दोस्ती गांठी और फिर एक दिन मिलने बुलाकर होटल में ले जाकर उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए। आरोपी ने उससे शादी करने की बात कहीं। जब पीड़िता ने लगातार उस पर शादी के लिए दबाव बनाया तो उसने कहा कि वह मुस्लिम है और तू हिंदू। दोनों की शादी नहीं हो सकती है।

प्रदेश अध्यक्ष की मंजूरी के बिना कांग्रेस नेता वायनाड में नहीं कर सकेंगे प्रचार

चंडीगढ़ (हिंस)। हरियाणा के कांग्रेस नेता प्रदेश के नेतृत्व को बाईपास करके चुनाव प्रचार करके केरल के उपचुनाव में पहुंच रहे हैं। इस पर आपत्ति जताते हुए प्रदेश अध्यक्ष उदयभान ने बिना स्वीकृति के प्रदेश के कांग्रेस नेताओं के केरल जाने पर रोक लगा दी है। दरअसल, केरल की वायनाड लोकसभा सीट से कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी चुनाव लड़ रही हैं। हरियाणा कांग्रेस के कई नेता प्रचार के लिए वायनाड में चुनाव प्रचार के लिए पहुंच रहे हैं। इन प्रदेश स्तरीय नेताओं ने प्रदेश कांग्रेस को भी विश्वास में नहीं लिया। महिला पहलवान एवं विधायक विनेश फोगाट और लोकसभा सांसद दीपेंद्र हुड्डा वायनाड पहुंच गए हैं। वे वहां प्रियंका गांधी के लिए वोट मांग रहे हैं। इस बीच हरियाणा कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष उदयभान ने एक पत्र जारी करके कहा है कि वायनाड में हो रहे उपचुनाव में हरियाणा से कार्यकर्ता अपने स्तर पर प्रचार करने के लिए न जाएं।

हरियाणा के सरकारी कार्यालयों पर लगेंगे बिजली के प्रीपेड मीटर

चंडीगढ़ (हिंस)। हरियाणा में घरेलू व कृषि उपभोक्ताओं की ओर से बिजली के प्री-पेड मीटरों का विरोध किए जाने के बाद केंद्र सरकार ने पहले सरकारी कार्यालयों पर प्रीपेड मीटर लगाने का फैसला लिया है। इसी क्रम में हरियाणा में भी सरकारी कार्यालयों में प्रीपेड मीटर लगेंगे। बिजली विभाग की ओर से इसकी योजना तैयार कर रहा है। शुक्रवार को केंद्रीय ऊर्जा, आवास एवं शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल की अध्यक्षता में हरियाणा में चल रहीं बिजली विभाग की योजनाओं का रिव्यू किया गया। इस बैठक में सरकारी कार्यालयों पर प्रीपेड बिजली मीटर लगाने का निर्देश जारी किया गया। दाअसल, हरियाणा में 30 लाख प्रीपेड मीटर लगाने का लक्ष्य रखा गया था, लेकिन विरोध के कारण प्रोजेक्ट अधर में ही लटका हुआ है। पंचकूला, पानीपत, करनाल, फरीदाबाद और गुरुग्राम में पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर 10 लाख प्रीपेड मीटर लगाने का लक्ष्य था, जिसके लिए केंद्र व राज्य सरकार की ओर से राशि की भी स्वीकृति दे दी थी। केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल ने कहा कि प्री-पेड मीटरों का विरोध किया जा रहा है, ऐसे में सबसे पहले सरकारी कार्यालयों पर प्रीपेड मीटर लगाए जाएंगे। इसके बारे रियायती दरों पर कमर्शियल, औद्योगिक संस्थानों के साथ शिक्षण संस्थानों में प्रीपेड मीटर लगेंगे। इसके बाद उन उपभोक्ताओं को प्रीपेड मीटर लगाए जाएंगे, जो अग्रिम भुगतान करने में सक्षम होंगे, इसके बाद साधारण उपभोक्ताओं को प्रीपेड मीटर का लाभ पता चलेगा और वे खुद आगे आएंगे। जून 2026 तक पांच शहरों में यह मीटर लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि हरियाणा में गर्मी के पीक सीजन में 14 हजार 662 मेगावाट बिजली की डिमांड होती है, डिमांड के मुताबिक बिजली की सप्लाई की जाएगी। हरियाणा की बिजली कंपनियों को पब्लिक लिस्टिंग किया जाएगा। केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल की अध्यक्षता में हुई बैठक में प्रदेश में चल रहे मेट्रो प्रोजेक्टों पर चर्चा हुई। हरियाणा सरकार की ओर से केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल के समक्ष नई मेट्रो की मांग उठाई गई। इनमें अंबाला शहर से अंबाला छावनी और यमुनानगर व जगाधरी में मेट्रो प्रोजेक्ट की मांग रखी गई।

भाजपा सरकार में किसानों की समृद्धि और तकलीफों को दूर करने के लिए कोई कार्य नहीं हुआ : डोटासरा

जयपुर (हिंस)। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा दौसा एवं रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र के चुनावी दौरे पर रहे तथा आज दौसा जिले की दौसा विधानससभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी दीनदयाल बैरवा के समर्थन में दौसा में आयोजित जनसभा को संबोधित किया। तत्पश्चात उन्होंने अलवर जिले के रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी श्री आर्यन जुबेर के समर्थन में बड़ौदामेव में आयोजित जनसभा को संबोधित किया। जनसभा को संबोधित करते हुए गोविंद सिंह डोटासरा ने कहा कि प्रदेश में भाजपा सरकार बनने के पश्चात किसानों की समृद्धि, उनकी आय बढ़ाने, उनके दु:ख तकलीफों को दूर करने के लिए कोई कार्य नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने एमएसपी कानून बना कर देने का वादा किया था वह भी पूरा नहीं हुआ, जबकि किसानों ने 15 माह तक सड़कों पर बैठकर आंदोलन किया था और आज भी आंदोलन करना पड़ रहा है लेकिन सरकार सुन नहीं रही। उन्होंने कहा कि किसानों को एमएसपी का कानून तो बनाकर नहीं दिया लेकिन तीन काले कानून तो दिए थे, जो किसान आंदोलन

के बाद केंद्र सरकार को वापस लेने पड़े। उन्होंने कहा कि आज किसान संघर्ष नहीं करते, केंद्र की तानाशाह सरकार के समक्ष खड़े नहीं होते तो किसानों की खेती और खेत में उपज भाजपा के चहेते उद्योगपतियों के घर में होता। उन्होंने कहा कि भाजपा ने अपने घोषणा पत्र में बाजरे की एमएसपी पर खरीद करने का वादा किया था किंतु प्रदेश में कहीं भी बाजरे की एमएसपी पर खरीद नहीं की गई।

देश से लुप्त हो रही कलाओं को पुन: जनमानस तक पहुंचाया जाए : राज्यपाल

कानपुर, (हिंस)। भारतीय पारम्परिक कारीगरों को अपनी कला को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करने का मंच प्रदान करने वाली संस्था ग्रामश्री विगत कई वर्षों से कार्य कर रही है। संस्था की पहल पर कानपुर के लाजपत भवन में पांच दिवसीय क्राफ्टरूट्स प्रदर्शनी लगी है। ऐसी प्रदर्शनी लगवाने से लोगों को रोजगार के साथ-साथ भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखा जा सकेगा। हमारा दायित्व है कि देश से लुप्त हो रही कलाओं को पुन: जनमानस तक पहुंचाया जाए, इसके लिए सभी को इन कलाओं से जुड़े कारीगरों को प्रोत्साहित करना चाहिये। यह बातें शुक्रवार को कानपुर पहुंची प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कही।

लाजपत भवन मातीझील में आयोजित क्राफ्टरूट्स प्रदर्शनी का उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने उद्घाटन कर विभिन्न राज्यों से आये कारीगरों का उत्साहवर्धन किया। इस प्रदर्शनी में देश के लगभग 22 राज्यों के 100 से अधिक कारीगर 70 से अधिक हस्तकलाओं का प्रदर्शन किया जा रहा है। इसमें राजस्थान की लाख की चूड़ियां व मिनिएचर पेंटिंग, ओडिशा के पट्ट, यूपी के कांच का सामान, कश्मीर के गर्म कपड़े, फैशन परिधान, कालीन आदि के स्टॉल लगाए गये हैं। राज्यपाल ने कहा कि यह क्राफ्टरूट्स प्रदर्शनी कानपुर में 08 से 12 नवम्बर तक आयोजित की जा रही है। उन्होंने कहा कि हमारे बीच में कानपुर नगर के औद्योगिक जगत, शिक्षा जगत के वरिष्ठ लोग व समाज सेवी संस्थानों एवं देश भर के निपुण कारीगरों की उपस्थिति में क्राफ्टरूट्स प्रदर्शनी लगाई गई है, इसके लिए सभी बधाई के पात्र हैं। इस दौरान आईआईटी कानपुर एवं क्राफ्टरूट्स संस्था के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर भी किए गये। राज्यपाल ने इस पर कहा कि नई पीढ़ी भी इन कलाओं से प्रेरित होकर इनकी ओर आकर्षित हो रही है।

सपा का नाम लेना भी बन सकता है पाप का कारण : योगी आदित्यनाथ

गाजियाबाद (हिंस)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी अदित्यनाथ शुक्रवार को गाजियाबाद पहुंचे। नेहरू नगर स्थित सरस्वती शिशु विद्या मंदिर परिसर में पन्ना प्रमुख सम्मेलन को संबोधित किया और कार्यकर्ताओं को विधानसभा उपचुनाव में जीत का मंत्र दिया। उन्होंने कहा कि भाजपा प्रत्याशी की जीत तो निश्चित है,अब कार्यकर्ताओं को अपने परिश्रम से इसे ऐतिहासिक बनाना है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री समाजवादी पार्टी पर हमलावर रहे। उन्होंने यहां तक कह दिया कि सपा का नाम लेना भी पाप का कारण बन सकता है। उन्होंने कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि वे समाजवादी पार्टी के लोगों को सत्ता से जितना दूर रखोगे उतना समाज व प्रदेश की जनता के लिए अच्छा है। योगी ने सपा पर हमलावर होते हुए कहा कि सपा आपकी सुरक्षा में सेंध लगाती है, आपकी

आस्था के साथ खिलवाड़ करती है। समाजवादी पार्टी बेटी और बहन की सुरक्षा के लिए खतरा बनी हुई है। समाजवादी पार्टी लोगों की आस्था से खेलने वाली पार्टी है। यह व्यापारियों की सुरक्षा में सेंध लगाने वाली पार्टी है। योगी ने कहा कि समाजवादी पार्टी का नाम लेना भी पाप का कारण बन सकता है। इसलिए उसका नाम ना लें। हालांकि अपने पूरे भाषण में उन्होंने ना तो कांग्रेस और ना ही बसपा का नाम लिया लेकिन समाजवादी पार्टी पर तीखे हमले किए। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी की सरकारों में केवल सैफई का ही विकास होता था। आम जनता परेशान रहती थी। लेकिन भाजपा सरकार बनने के बाद उत्तर प्रदेश का चहुंमुखी विकास हो रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विरासत और विकास के संगम को डबल इंजन सरकार ने उत्तर प्रदेश की दशा दिशा दोनों बदले हैं। योगी अदित्यनाथ ने कहा कि जब उपचुनाव की तारीख बदली तो सपा खफा हुई। पहले उपचुनाव चुनाव 13 नवंबर को था, लेकिन फिर तारीखें टाल दी गईं क्योंकि सभी राजनीतिक दलों ने कार्तिक पूर्णिमा स्नान को ध्यान में रखते हुए 15 नवंबर के बाद तारीख तय करने का चुनाव आयोग से अनुरोध किया था। चुनाव आयोग ने आस्था का सम्मान करते हुए चुनाव की तारीख टाल दी। उन्होंने कहा कि अक्सर देखा गया है कि चांद न दिखे तो ईद की छुट्टी बदल दी जाती है और सरकार उस हिसाब से छुट्टी घोषित करती है, गुरु पर्व पर भी ऐसा ही होता है। लेकिन जब संवैधानिक संस्था द्वारा हिंदू आस्था के पर्व की महत्ता को ध्यान में रखते हुए तारीख बदली गई तो जनता तो खुश हुई, लेकिन समाजवादी पार्टी ने इसका विरोध किया। मुख्यमंत्री ने पन्ना प्रमुखों से कहा कि वे उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी संजीव शर्मा को ऐतिहासिक जीत हासिल करने के लिए अपनी पूरी शक्ति झोंक दें। कार्यक्रम में सांसद अतुल गर्ग, कैबिनेट मंत्री सुनील शर्मा, ऐतिहासिक दूधेश्वर नाथ मंदिर के महंत नारायण गिरी आदि मौजूद रहे।

डंपर व बाइक की भिड़ंत में तीन युवकों की मौत

जयपुर (हिंस)। हरमाड़ा थाना इलाके में शुक्रवार को डंपर ने बाइक को टक्कर मार दी। इससे बाइक सवार तीन युवकों की मौत हो गई। टक्कर के बाद तीनों युवक डंपर के टायर के नीचे आ गए। एक युवक का सिर फट गया और मांस के लोथड़े सड़क पर गिर गए। सड़क पर खून ही खून फैल गया। हादसे के बाद मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। जानकारी मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शवों को कांवटिया अस्पताल के मुर्दाघर में रखवाया। एसआई भरत लाल ने बताया कि हरमाड़ा में न्यू लोहा मंडी रोड माचड़ा के पास हुआ। डंपर बजरी को खाली कर कांटे पर जा रहा था। इसी दौरान सामने से तेज रफ्तार बाइक आई। डंपर और बाइक में आमने-सामने से टक्कर हो गई। तीनों युवक डंपर के टायरों के नीचे आ गए और उनकी मौके पर ही मौत हो गई। लोगों की सूचना पर 108 मौके पर आई। एसआई भरत लाल ने बताया कि हादसे में दौसा के महवा के रहने वाले सुरेंद्र (21) पुत्र रवि कुमार, जयपुर के जोरावर नगर में रहने वाले दिनेश (22) पुत्र सुरेंद्र कुमार और मुरलीपुरा के रहने वाले कन्हैया (18) पुत्र रूपनारायण बैरवा की मौत हो गई है। सुरेंद्र भी फिलहाल जयपुर के जोरावर नगर में रह रहा था। तीनों युवक मजदूरी का काम करते थे।

उगते हुए सूर्य को अर्घ्य अर्पण के साथ चार दिवसीय छठ महापर्व संपन्न

हरसा (हिंस)। लोक आस्था का महापर्व छठ का समापन उगते हुए सूर्य को अर्घ्य अर्पण के साथ शुक्रवार को संपन्न हो गया। शहर के विभिन्न छठ घाटों पर देर रात से ही भक्तों की भीड़ देखी गयी। नगर निगम क्षेत्र के शंकर चौक, गांधी पथ, पूरब बाजार, हटिया गाछी,सराही, मसोमात पोखर, मत्स्य पोखर, मत्स्यगंधा समेत अन्य छठ घाटों पर हजारों की संख्या में छठ व्रती सूर्योदय होने के साथ ही भगवान भास्कर को अर्घ्य देने के लिए तत्पर होकर प्रतीक्षारत रहे। छठ घाटों पर व्रती आधी रात के बाद से ही इकट्ठा हो गए। रात के अंधेरे में छठ घाट दीयों की रोशनी से जगमग हो गया। उदयांचल सूर्यट यानी उगते हुए सूरज को अर्घ्य देकर छठ व्रती अपने 36 घंटे के निर्जला उपवास को पूरा किया। इसी के साथ चार दिवसीय छठ पूजा का समापन हो गया। इससे पहले कल शाम में छठ व्रतियों ने अस्ताचल गामी यानी डूबते हुए सूरज को अर्घ्य दिया था। छठव्रती छठ घाटों पर प्रसाद के सूप और डालों को सजाकर लोग रखते गए। छठ व्रत करने वाले व्रती पानी में उतर कर भगवान भास्कर के उगने का इंतजार करते दिखे और इस दौरान छठव्रती सूर्य की उपासना करते नजर आये। इस दौरान नदी एवं तालाबों में भी काफी भीड़ पहुंची थी। इस दौरान छठ घाटों पर पूजा समितियों ने सभी घाट को बेहतर ढंग से सजाया था। रंगीन बल्बों और झालरों से सजा छठ घाट काफी आकर्षक नजर आ रहा था। छठ व्रत के चौथे दिन उदीयमान सूर्य को अर्घ्य देने के बाद इस व्रत के पारण का विधान है। चार दिनों तक चलने वाले इस कठिन तप और व्रत के माध्यम से हर साधक अपने घर-परिवार और विशेष रूप से अपनी संतान की मंगलकामना करता है। भगवान भास्कर का अर्घ्य देने के बाद घाट पर उपस्थित श्रद्धालुओं ने व्रतियों से ठेकुआ केला सहित अन्य प्रसाद ग्रहण किया। गांधी पथ निवासी सुशील गुप्ता ने बताया कि कोरोना काल में जब सामूहिक भीड़ पर प्रतिबंध था। उस समय छठ पर्व के लिए मकान के छत पर वैकल्पिक व्यवस्था की गई। तबसे हर वर्ष मेरी माँ के द्वारा छत पर ही छठ पूजा का आयोजन किया जाता है। छठ पर्व पर जिला प्रशासन की तत्परता सें यातायात एवं सुरक्षा व्यवस्था चुस्त दुरुस्त रही। वही कई छठ घाट पर नाव एवं गोताखोर की भी व्यवस्था की गई थी। छठ पूजा के अवसर पर मत्स्यगंधा एवं शिवपूरी बायपास रोड में भगवान भास्कर की प्रतिमा बनाकर धूमधाम से पूजा अर्चना की गई। इस अवसर पर महिलाओ ने सिंदूर से मांग भरकर अखंड सुहाग की कामना की। साथ ही परिवार समाज राष्ट्र एवं विश्व मंगल की कामना की गई।

पप्पू यादव को फिर मिली जान से मारने की धमकी

पूर्णिया (हिंस)। बिहार के पूर्णिया लोकसभा से सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव के निजी सचिव मोहम्मद सादिक आलम ने कनॉट प्लेस थाने में शिकायत दर्ज कराई है। शिकायत के अनुसार सांसद को जान से मारने की धमकी मिली है। 7 नवंबर को रात 2:25 बजे और सुबह 9:49 बजे सांसद के व्हाट्सएप नंबर 9958228380 पर 7357853054 नम्बर से व्हाट्सएप चैट के माध्यम से धमकी दी गई है। इस नंबर पर *कौड़ी भाई* लिखा हुआ है और व्हाट्सएप प्रोफाइल पर लॉरेंस विश्नोई का फोटो लगा हुआ है। शिकायत में कहा गया है कि इससे पहले भी सांसद को कई अन्य नंबरों से जान से मारने की धमकी मिली थी। इस संबंध में पूर्णिया (बिहार) में भी लिखित शिकायत दर्ज कराई गई है। निजी सचिव ने थाने में शिकायत दर्ज कराते हुए मामले की गंभीरता को देखते हुए तुरंत कार्रवाई करने की मांग की है। पुलिस ने शिकायत दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

बिना लाइव सेविंग जैकेट के ही एसडीआरएफ के बोट पर बैठे सांसद ,कार्रवाई के जद में आई एसडीआरएफ टीम

अररिया (हिंस)। लोक आस्था के महापर्व के चौथे दिन शुक्रवार को उदीयमान सूर्य को अर्घ्य दिए जाने से पहले सांसद प्रदीप कुमार सिंह और राष्ट्रीय परशुराम परिषद के अध्यक्ष अजय कुमार झा अपने सुरक्षा गार्ड और समर्थकों के साथ एसडीआरएफ के बोट पर बैठकर छठव्रतियों और श्रद्धालुओं का अभिवादन करते हुए आशीर्वाद लिया लेकिन इस दौरान एसडीआरएफ की टीम से एक चूक हो गई और यह चूक अब कार्रवाई के जद में आ गई है। दरअसल परमान नदी के त्रिसुलिया घाट पर सांसद और राष्ट्रीय परशुराम परिषद के अध्यक्ष अजय कुमार झा अपने समर्थकों के साथ एसडीआरएफ के बोट पर सवार हुए लेकिन किसी ने लाइफ सेविंग जैकेट नहीं लगाया और बिना लाइफ सेविंग जैकेट के ही एसडीआरएफ की टीम ने मोटर बोट से सांसद और अन्य को सैर करवा दिया। इस तरह का फोटो और वीडियो आने के बाद जिला प्रशासन ने मामले को गंभीरता से लिया और इसे बड़ा लापरवाही माना। जिला प्रशासन के निर्देश पर अब अनुमंडल प्रशासन ने इसे गंभीर मानते हुए कार्रवाई का मन बना लिया है। एसडीआरएफ के जिस मोटर बोट पर सांसद

और अन्य सवार थे। उस मोटरबोट पर संचालन के साथ अन्य एसडीआरएफ के जवान भी सवार थे। सवार एसडीआरएफ के जवान भी खुद लाइफ सेविंग जैकेट को नहीं पहना हुआ था। हालांकि एसडीआरएफ के जवान आपदा को लेकर प्रशिक्षित होते हैं। बावजूद इसके मोटर बोट पर अन्य सवारों को लाइफ सेविंग जैकेट का पहनना अनिवार्य होता है लेकिन यह चूक एसडीआरएफ टीम के साथ साथ मोटर बोट पर सवार होने वाले सांसद और उनके साथ सवार अन्य के द्वारा भी हो गई। मामले को गंभीरता से लेते हुए सदर अनुमंडल पदाधिकारी अनिकेत कुमार ने इसे गंभीर लापरवाही माना। एसडीओ ने कहा कि एसडीआरएफ की ओर से बरती गई इस लापरवाही के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। मामले की विभिन्न पहलुओं को लेके जांच की जाएगी।

टायरों की उम्र बढाने का उपाय है हवा का सही प्रैशर रखना

नई दिल्ली

अगर बाइक के टायर की उम्र को बढ़ाना है तो सबसे आसान उपाय टायर में हवा का सही प्रैशर रखना है। अगर आप बाइक के टायर में हवा का सही प्रैशर नहीं रखते हैं तो इससे न सिर्फ टायर की उम्र कम होती है बल्कि बाइक चलाते हुए फिसलने का खतरा भी बढ़ जाता है।

इसके अलावा बाइक की हैंडलिंग पर भी इसका बुरा असर होता है। कम हवा के कारण इंजन को भी ज्यादा क्षमता से काम करना पड़ता है जिसमें ईंधन की खपत भी बढ़ जाती है और बाइक का माइलेज कम हो जाता है। कोशिश करें कि बाइक में कंपनी की जानकारी के मुताबिक ही हवा का प्रैशर रखें। बाइक एक दो पहिया वाहन है और इसे ड्राइवर सहित सिर्फ दो लोगों के लिए बनाया गया है।

अगर आप बाइक पर दो से ज्यादा सवारियों के साथ सफर करते हैं या फिर बाइक पर ज्यादा सामान रखकर चलते हैं तो भी इससे टायर पर बुरा असर होता है। इसलिए कोशिश करें कि बाइक पर क्षमता से ज्यादा सामान या सवारियों के साथ सफर न करें।

बाइक को कभी भी सीधी धूप में पार्क नहीं करना चाहिए। इससे न सिर्फ पेंट को नुकसान पहुंचता है बल्कि इससे टायर भी जल्दी खराब हो जाते हैं। बाइक के टायर की उम्र को बढ़ाने के लिए कोशिश करनी चाहिए कि जब भी बाइक को पार्क करें हमेशा छायादार जगह या कवर्ड पार्किंग में पार्क करें।

इससे टायर पर सीधी धूप नहीं पड़ेगी और टायर की रबर जल्दी सूखेगी नहीं, जिससे इनकी उम्र बढ़ जाएगी। युवाओं को बाइक चलाने का काफी शौक होता है। कई युवा बाइक्स को तेज स्पीड में चलाने के साथ ही स्किड करवाते हैं। ऐसा करने से भी रबर काफी जल्दी घिसने लगती है।

वहीं ऐसा करने से हादसा होने का खतरा भी बढ़ जाता है। इसलिए, कोशिश करें कि बाइक को तय लिमिट के अंदर ही चलाएं और स्किड करने की कोशिश न करें।

कार की तरह बाइक के टायर की उम्र को बढ़ाने का आसान उपाय इनकी अलाइनमेंट का ध्यान रखना है। अगर आप समय पर बाइक के पहियों का अलाइनमेंट करवाते हैं तो भी टायर की उम्र को आसानी से बढ़ाया जा सकता है। बता दें कि भारत में रोजाना बड़ी संख्या में लोग बाइक का उपयोग एक जगह से दूसरी जगह आने जाने के लिए करते हैं।

इन मामूली लेकिन महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखकर बाइक के टायर्स की उम्र को आसानी से बढ़ाया जा सकता है।

न्यूज ब्रीफ

अमेरिका के बाद अब चीन करेगा राहत पैकेज की घोषणा, दबाव में आ सकता है भारत का शेयर बाजार

मुंबई। अमेरिका के बाद अब चीन ने भारत के लिए एक बड़ा कदम उठाया है। फेडरल रिजर्व बैंक ने ब्याज दरों में कटौती की है, जो अमेरिका में महंगाई को नियंत्रित करने के लिए किया गया है। चीन में नेशनल पीपुल्स कांग्रेस की बैठक अब समाप्त होने वाली है और राहत पैकेज का ऐलान हो सकता है। चीन की ओर से 10 लाख करोड़ रुपए के और राहत पैकेज की संभावना है। यह कदम भारत के लिए बड़ी चुनौती बना सकता है और शेयर बाजार दबाव में आ सकता है। विदेशी निवेशक चीन की ओर बढ़ सकते हैं और भारतीय शेयर बाजार को नुकसान हो सकता है। पिछले महीने विदेशी निवेशकों ने भारतीय शेयर बाजार से बड़ी राशि निकाली थी, जिससे उतार-चढ़ाव देखा जा रहा है। अमेरिका में ब्याज दर कम होने से वैश्विक शेयर बाजार में तेजी आई है, जो भारत के शेयर बाजार को भी प्रभावित कर सकता है। इस संदर्भ में भारतीय रिजर्व बैंक भी रेपो रेट में कटौती करने का विचार कर सकता है। इस तरह की कटौती से भारतीय अर्थव्यवस्था को भी तरक्की मिल सकती है।

एफएसएसएआई ने अधिकारियों से कहा- ई-कॉमर्स कंपनियों के गोदामों में निगरानी बढ़ाएं

नई दिल्ली। खाद्य नियामक एफएसएसएआई ने सरकारी अधिकारियों से ई-कॉमर्स कंपनियों के गोदामों की निगरानी बढ़ाने और उपभोक्ताओं तक सुरक्षित भोजन पहुंचाने के लिए आपूर्ति कर्मचारियों के बारे में मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) जारी करने को कहा। एक आधिकारिक बयान के अनुसार भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) की 45वीं केंद्रीय सलाहकार समिति (सीएसी) की बैठक में यह निर्देश दिया गया। इस बैठक में राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों से नवंबर से मार्च तक के मुख्य पर्यटन सत्र की तैयारी में उच्च सुरक्षा मानकों को सुनिश्चित करने के लिए लोकप्रिय पर्यटन स्थलों पर निगरानी बढाने का आग्रह किया गया। लोकप्रिय पर्यटन स्थलों पर घरेलू और अंतरराष्ट्रीय सैलानियों की भारी भीड़ को ध्यान में रखते हुए राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को वहां फूड सेफ्टी ऑन व्हील्स मोबाइल लैब का उपयोग करने की सलाह दी गई। उन्होंने विभिन्न राज्यों के खाद्य आयुक्तों से ई-कॉमर्स मंचों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले गोदामों और अन्य सुविधाओं पर निगरानी बढ़ाने को कहा।

आईआरबी इंफ्रा का टोल राजस्व संग्रह अक्टूबर में बढ़कर 540 करोड़ हुआ, आईआरबी ने बताया कि उनके 17 टोलों में सर्वाधिक राजस्व महाराष्ट्र में हुआ

नई दिल्ली। आईआरबी इंफ्रास्ट्रक्चर ने अपने टोल संग्रह में अक्टूबर माह में वृद्धि की जानकारी दी और बताया कि इसे पिछले वर्ष की तुलना में 21 प्रतिशत बढ़कर 539.6 करोड़ रुपये हो गया है। यह एक पॉजिटिव संकेत है कि कंपनी अपनी दिशा में मजबूत बनी जा रही है। आईआरबी ने बताया कि उनके 17 टोलों में सर्वाधिक राजस्व महाराष्ट्र में हुआ है, जहां आईआरबी एमपी एक्सप्रेसवे ने 142.6 करोड़ रुपये का संग्रह किया। इसके बाद आईआरबी अहमदाबाद वडोदरा सुपर एक्सप्रेस टोलवे ने 66.2 करोड़ रुपये का योगदान दिया। कंपनी ने इस योजना में सीजी टोलवे से 32.7 करोड़ रुपये संकलित किए हैं। आईआरबी इन्फ्रास्ट्रक्चर के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि उन्हें इस तरीके के रुझान से बड़ी उम्मीदें हैं और वे उम्मीद कर रहे हैं कि यात्रियों की संख्या में आगे भी वृद्धि होगी।

मांग में कमी और वैश्विक दबाव के कारण सोने-चांदी में गिरावट, ट्रंप की जीत से बदला गोल्ड मार्केट का रुझान

नई दिल्ली

घरेलू सर्राफा बाजार में जबरदस्त कमजोरी नजर आ रही है। सोना और चांदी दोनों चमकीली धातुओं ने जोरदार गिरावट के साथ कारोबार की शुरुआत की है। सोना की कीमत में 1,800 रुपये प्रति 10 ग्राम तक की और चांदी की कीमत में 3,000 रुपये प्रति किलोग्राम तक की गिरावट आ गई है। इसके पहले सर्राफा बाजार में इतनी तेज गिरावट आम बजट में आए सोने पर इंपोर्ट ड्यूटी को घटाने के बाद देखी गई थी। माना जा रहा है कि अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप की जीत के बाद सोने की मांग में कमी होने की आशंका बन गई है, जिसकी वजह से वैश्विक दबाव में सोना और चांदी के भाव में गिरावट आ गई है।

मार्केट एक्सपर्ट्स के मुताबिक अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप की जीत के बाद सेफ इन्वेस्टमेंट की जगह निवेशक ज्यादा जोखिम वाले निवेश की ओर आकर्षित हुए हैं। खासकर निवेशकों ने बिटकॉइन जैसी बड़ी क्रिप्टो करेंसी में कैपिटल फ्लो बढ़ा दिया है। इसकी वजह से बिटकॉइन जहां ऑल टाइम हाई लेवल पर पहुंचकर ट्रेड कर रहा है, वहीं सोने की मांग में अचानक गिरावट आ गई है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सेंटीमेंट कमजोर होने के कारण सोने की आयात पर निर्भर करने वाले भारत जैसे कई देशों के बुलियन मार्केट में भी सोना कमजोर हुआ है। मार्केट सेंटीमेंट कमजोर होने और ज्वेलरी सेक्टर में मांग में आई गिरावट के कारण भी सोने पर दबाव की स्थिति बन गई है।

बुलियन मार्केट एक्सपर्ट मयंक मोहन के अनुसार दिवाली के बाद ज्यादातर सर्राफा बाजारों में हाजिर सोने की मांग में गिरावट आई है। ये गिरावट शादी का सीजन शुरू होने तक जारी रह सकती है। शादी का सीजन शुरू होने के बाद भारतीय सर्राफा बाजारों में सोने चांदी की मांग में एक बार फिर तेजी आने की उम्मीद है, लेकिन यदि अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने की कीमत पर दबाव बना रहा, तो भारत में भी खरीदारों को राहत मिल सकती है।

इसी तरह जगदंबा सिक्योरिटीज एंड कमोडिटीज सर्विसेज के सीईओ नमन अग्रवाल के अनुसार धनतेरस और दिवाली का त्योहार बीतने के बाद सिक्का निर्माताओं की ओर से भी मांग में कमी आई है। इसके साथ ही ज्वेलरी सेक्टर में भी खरीदारी घटी है। वेडिंग सीजन के लिए बड़ी संख्या में लोगों ने पहले से ही बुकिंग कर रखी है। इसलिए शादी ब्याह के दौरान भी मांग में बहुत अधिक तेजी आने की संभावना काफी कम है। इसी तरह चांदी की मांग में भी लगातार कमी आई है। खासकर, इंडस्ट्रियल डिमांड में बड़ी गिरावट दर्ज की गई है। यही वजह है कि कुछ दिन पहले एक लाख रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर को पार कर जाने वाली चांदी लुढ़क कर 93 हजार रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर से भी नीचे आ गई है।

जानकारों का कहना है कि भारत में सोने और चांदी की कीमत में पिछले कुछ समय से जारी रिकॉर्ड तोड़ तेजी की सबसे बड़ी वजह अंतरराष्ट्रीय बाजार में इसकी मांग में जोरदार बढ़ोतरी होना रहा है। मिडिल ईस्ट के तनाव और अमेरिक में बनी राजनीतिक अनिश्चितता के कारण निवेशकों पिछले कुछ समय से सेफ इनवेस्टमेंट के रूप में सोना और चांदी में ही निवेश कर रहे थे, जिसकी वजह से 30 अक्टूबर को कॉमेक्स पर सोना 2,802 डॉलर प्रति ऑन्स के सर्वोच्च स्तर पर पहुंच गया था, वहीं चांदी की कीमत भी 38 डॉलर के स्तर के ऊपर पहुंच गई थी, लेकिन अब स्थिति बदल गई है। नमन अग्रवाल का कहना है कि अमेरिका के चुनाव परिणामों में डोनाल्ड ट्रंप की जीत के बाद राजनीतिक अनिश्चितता खत्म हो गई है, जिसकी वजह से निवेशकों ने सेफ इनवेस्टमेंट का रास्ता छोड़कर रिस्क लेना शुरू कर दिया है। इसीलिए दो दिन में ही बिटकॉइन जैसी क्रिप्टो करेंसी रिकॉर्ड 76,300 डॉलर के स्तर से भी ऊपर चली गई, वहीं सोना और चांदी गिरावट का शिकार हो गए। इन दो दिनों ही सोना 2,680 डॉलर प्रति ऑन्स के स्तर के करीब पहुंच गया है। इसी तरह चांदी के भाव में भी 38 डॉलर प्रति ऑन्स से फिसल कर 31 डॉलर प्रति ऑन्स से भी नीचे आ गए हैं। अगर अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों में अधिक परिवर्तन नहीं हुआ तो सोने चांदी में गिरावट का सिलसिला कुछ और समय तक जारी रह सकता है। लेकिन अगर ईरान और इजरायल के बीच एक बार फिर हमले का दौर शुरू हुआ तो निवेशक दोबारा गोल्ड मार्केट की ओर लौट सकते हैं, जिससे इन दोनों चमकीली धातुओं में एक बार फिर तेजी आ सकती है।

इमामी का तिमाही मुनाफा 19 प्रतिशत बढ़ा, पिछले वर्ष की समान तिमाही के मुकाबले 19 प्रतिशत ज्यादा

नई दिल्ली

एफएमसीजी कंपनी इमामी लिमिटेड ने दूसरी तिमाही में अपने शानदार नतीजे जारी किए हैं। उसके चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में शुद्ध मुनाफा इसके पिछले वर्ष की समान तिमाही के मुकाबले 19 प्रतिशत बढ़कर 213 करोड़ रुपए पर पहुंच गया है। इससे कंपनी ने उत्कृष्ट कार्यक्षमता का प्रदर्शन किया है।

कंपनी के निदेशक मंडल ने जारी बयान में बताया कि वित्त वर्ष 2024-25 की जुलाई-सितंबर तिमाही में भी एफएमसीजी कंपनी ने अच्छे नतीजे प्राप्त किए हैं। उसके शुद्ध मुनाफे में 19 प्रतिशत का इजाफा हुआ और यह बढ़कर 213 करोड़ रुपए पर पहुंच गया है। अधिकारियों का कहना है कि इस अवधि में परिचालन से उसका राजस्व तीन प्रतिशत की बढ़ोतरी लेकर 891 करोड़ रुपए हो गया है। इस बड़े वृद्धि के पीछे उसके प्रोडक्ट लाइन का विस्तार और क्वालिटी निरंतरता में सुधारों का होना बड़ी भूमिका निभाई है।

एफएमसीजी कंपनी के प्रतिपादन में बड़ी वृद्धि आई है जिससे कारोबार में नया उत्साह दिखा है। यह नतीजे कंपनी के भविष्य के लिए उम्मीदवारी को मजबूत करने में मददगार साबित हो सकते हैं और उसके विनिवेशकों को भी आत्मविश्वास दिलाने में सहायक हो सकते हैं।

जीडीपी आंकड़ों को जारी करने का समय अब शाम चार बजे हुआ

नई दिल्ली

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (एमओएसपीआई) ने जारी किए गए अपने आर्थिक आंकड़ों में बदलाव की घोषणा की है। शुक्रवार को घरेलू उत्पाद का अनुमान प्रकाशित करने के समय को चार बजे कर दिया गया है, जो कि पहले की साढ़े पांच बजे का समय था। मंत्रालय ने यह निर्णय लिया है कि जीडीपी आंकड़ों के प्रकाशन में और अधिक पारदर्शिता और सुगमता लाने के लिए होने बाले बंद होने वाले बाजारों के समय के अनुरूप हो।

यह सुनिश्चित करेगा कि जीडीपी आंकड़ों का प्रकाशन किसी भी कारोबार में बाधा न डाले। इस नए समय सुनिश्चित करने के लिए गुरुवार को वित्त वर्ष 2024-25 की दूसरी तिमाही जुलाई-सितंबर के लिए जीडीपी अनुमानों की प्रेस विज्ञप्ति 29 नवंबर 2024 को शाम चार बजे जारी की जाएगी। यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि यह विशेष घोषणा संवेदनशीलता और पारदर्शिता में सुधार करेगा। सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय ने इसी माह में औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) और उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) की जानकारी भी जारी की है। इस तरह के सुधार भारतीय वित्तीय बाजारों के प्रति आपूर्ति समय की वृद्धि करेंगे।

सुप्रीम कोर्ट का बड़ा फैसला, जेट एयरवेज के निवेशकों को लगा बड़ा झटका

डूब जाएगा 1.43 लाख निवेशकों का पैसा, साढ़े 5 साल से बंधी थी उम्मीद

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को जेट एयरवेज की पुनरुद्धार योजना को खारिज कर दिया और कंपनी के परिसमापन का आदेश जारी किया। यह फैसला 1.43 लाख निवेशकों के लिए बड़ा झटका है, जिनके पैसे अब डूबने का खतरा है। ये निवेशक पिछले साढ़े पांच साल से कंपनी के पुनरुद्धार की उम्मीद कर रहे थे, लेकिन सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद उनके पैसे पूरी तरह डूबने की संभावना जताई गई है। कोर्ट ने नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल (एनसीएलटी) के फैसले को पलट दिया और निर्देश दिया कि जेट एयरवेज की संपत्ति बेची जाए और उसके लेनदारों को भुगतान किया जाए। इसके अतिरिक्त, अदालत ने कालरॉक कंसोर्टियम की पुनरुद्धार योजना को खारिज कर दिया क्योंकि कंसोर्टियम ने अब तक कंपनी में कोई फंड नहीं लगाया था। इस निर्णय के बाद जेट एयरवेज के शेयरों में भारी गिरावट देखी गई, स्टॉक करीब 5 फीसदी गिरकर 34 रुपये पर बंद हुआ। 2 लाख रुपये से कम निवेश वाले निवेशकों में, जिनकी संख्या लगभग 1.43 लाख है, उनका कुल निवेश लगभग 19.29 फीसदी है। विशेषज्ञों का मानना है कि अब उनके निवेश के पूरी तरह डूब जाने का जोखिम बढ़ गया है। जेट एयरवेज के विमान अप्रैल 2019 से ही उड़ान नहीं भर रहे हैं, और तब से कंपनी के पुनर्गठन के प्रयास अधर में लटके हुए हैं। आखिरी उम्मीद कलरॉक कंसोर्टियम पर टिकी थी, जिसने अपनी पुनरुद्धार योजना में सार्वजनिक शेयरधारिता को 0.21 फीसदी कम करने का प्रस्ताव रखा था। इसका मतलब सार्वजनिक शेयरधारकों के लिए बाजार मूल्य का अंत होता, लेकिन वे अपना पैसा वापस पाने की उम्मीद कर रहे थे। अब, सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के बाद, जेट एयरवेज के शेयरों को एक्सचेंज से हटा दिए जाने का जोखिम है, जैसा कि पहले डीएचएफएल के साथ हुआ था।

ग्लोबल मार्केट से पॉजिटिव संकेत, एशिया में मिला-जुला कारोबार

नई दिल्ली

अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा ब्याज दरों में कटौती करने का असर ग्लोबल मार्केट पर साफ-साफ नजर आ रहा है। ब्याज दरों में कटौती की बात से उत्साहित अमेरिकी बाजार पिछले सत्र के दौरान मजबूती के साथ कारोबार करने के बाद बंद हुए। डाउ जॉन्स फ्यूचर्स भी बढ़त के साथ कारोबार करता हुआ नजर आ रहा है। यूरोपीय बाजार में भी पिछले सत्र के दौरान लगातार तेजी बनी रही। हालांकि आखिरी वक्त में हुई बिकवाली के कारण यूरोपीय बाजार मिले-जुले परिणाम के साथ बंद हुए। एशियाई बाजार में भी मिला-जुला कारोबार होता हुआ नजर आ रहा है।

अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने पहले दिए गए संकेत के मुताबिक ही ब्याज दरों में 0.25 प्रतिशत की कटौती कर दी। फेडरल ओपन मार्केट कमेटी ने बयान जारी करके कहा कि रोजगार और महंगाई लक्ष्यों को प्राप्त करने के जोखिम लगभग संतुलन में हैं। कमेटी अपने ड्यूल मैंडेट के दोनों पक्षों के जोखिमों को लेकर चौकस है। अमेरिकी फेडरल रिजर्व के इस फैसले का बाजार पर सकारात्मक असर पड़ा, जिसकी वजह से वॉल स्ट्रीट के सूचकांकों में तेजी आ गई। एसएंडपी 500 इंडेक्स 0.74 प्रतिशत की तेजी के साथ 5,973.12 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह नैस्डेक ने 285.89 अंक यानी 1.51 प्रतिशत उछल कर 19,269.36 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। वहीं डाउ जॉन्स फ्यूचर्स फिलहाल 0.08 प्रतिशत की बढ़त के साथ 43,763.34 अंक के स्तर पर कारोबार करता नजर आ रहा है। यूरोपीय बाजार पिछले सत्र के दौरान तेजी के साथ कारोबार करने के बाद अंत में हुई बिकवाली की वजह से मिले-जुले परिणाम के साथ बंद हुए। एफटीएसई इंडेक्स 0.32 प्रतिशत की गिरावट के साथ 8,140.74 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसके विपरीत सीएसी इंडेक्स ने 0.75 प्रतिशत उछल कर 7,425.60 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। इसके अलावा डीएएक्स इंडेक्स 323.21 अंक यानी 1.67 प्रतिशत की मजबूती के साथ 19,362.52 अंक के स्तर पर बंद हुआ। एशियाई बाजारों में भी मिलाजुला कारोबार होता नजर आ रहा है। एशिया के 9 बाजारों में से 5 के सूचकांक बढ़त के साथ हरे निशान में कारोबार कर रहे हैं, जबकि 4 सूचकांक गिरावट के साथ लाल निशान में बने हुए हैं। गिफ्ट निफ्टी 0.07 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 24,261 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह सेट कंपोजिट इंडेक्स 0.38 प्रतिशत लुढ़क कर 1,464.08 अंक के स्तर पर पहुंचा हुआ है। इसके अलावा हैंग सेंग इंडेक्स अभी तक के कारोबार में 185.70 अंक यानी 0.89 प्रतिशत की गिरावट के साथ 20,767.64 अंक के स्तर पर और शंघाई कंपोजिट इंडेक्स 0.50 प्रतिशत फिसल कर 3,453.24 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहे हैं। दूसरी ओर, निक्केई इंडेक्स 0.25 प्रतिशत की मजबूती के साथ 39,478.57 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह ताइवान वेटेड इंडेक्स 147.18 अंक यानी 0.63 प्रतिशत की तेजी के साथ 23,556 अंक के स्तर पर बना हुआ है। स्ट्रेट्स टाइम्स इंडेक्स ने बड़ी छलांग लगाई है। फिलहाल ये सूचकांक 1.56 प्रतिशत की बढ़त के साथ 3,730.94 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसके अलावा जकार्ता कंपोजिट इंडेक्स 0.88 प्रतिशत उछल कर 7,307.46 अंक के स्तर पर और कोस्पी इंडेक्स 0.03 प्रतिशत की मामूली बढ़त के साथ 2,565.38 अंक के स्तर पर कारोबार करते नजर आ रहे हैं।

कप्तान शाई होप के साथ मैदान पर विवाद के बाद अल्जारी जोसेफ दो मैचों के लिए निलंबित

बारबाडोस

वेस्टइंडीज की इंग्लैंड पर 2-1 से सीरीज जीत के बाद, तेज गेंदबाज अल्जारी जोसेफ को टीम के कप्तान शाई होप के साथ मैदान पर तीखी बहस के बाद दो मैचों के लिए निलंबित कर दिया गया है।

यह घटना बारबाडोस में तीसरे एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच के दौरान हुई, जिसमें जोसेफ मैदान से बाहर चले गए। क्रिकेट वेस्टइंडीज (सीडब्ल्यूआई) ने गुरुवार को जोसेफ के व्यवहार को वेस्टइंडीज का प्रतिनिधित्व करने वाले खिलाड़ियों से अपेक्षित मानकों से कम बताते हुए निलंबन की घोषणा की।

मैच के बाद, जोसेफ ने सीडब्ल्यूआई के माध्यम से एक बयान जारी किया, जिसमें उन्होंने अपनी गलती स्वीकार की और अपने कप्तान, टीम के साथियों, प्रबंधन और प्रशंसकों से माफ़ी मांगी।

जोसेफ ने कहा, मैं मानता हूं कि मेरा जुनून मुझ पर हावी हो गया। मैंने व्यक्तिगत रूप से कप्तान शाई होप और अपने साथियों और प्रबंधन से माफ़ी मांगी है। मैं वेस्टइंडीज के प्रशंसकों से भी अपनी ईमानदारी से माफी मांगता हूं। मैं समझता हूं कि निर्णय में थोड़ी सी भी चूक का दूरगामी प्रभाव हो सकता है और मुझे किसी भी निराशा के लिए गहरा खेद है।

केंसिंग्टन ओवल में मैच के चौथे ओवर में यह स्थिति सामने आई। जोसेफ, जो पहले से ही फील्ड प्लेसमेंट को लेकर निराशा के लक्षण दिखा रहे थे, ने एक शानदार विकेट मेडन फेंका था, लेकिन होप के साथ बहस के बाद वह स्पष्ट रूप से उत्तेजित हो गए। ओवर जारी रखने के बजाय, तेज गेंदबाज ने बिना किसी को सूचित किए अचानक मैदान छोड़ दिया, ड्रेसिंग रूम में वापस चले गए और अपने साथियों को कुछ समय के लिए मैदान पर केवल दस खिलाड़ियों के साथ छोड़ दिया।

जोसेफ कुछ ही देर बाद वापस लौटे और पारी में आगे भी गेंदबाजी करते रहे। हालांकि, वेस्टइंडीज ने इंग्लैंड के खिलाफ आठ विकेट से जीत हासिल करते हुए वनडे सीरीज 2-1 से अपने नाम कर ली।

वेस्टइंडीज के मुख्य कोच डेरेन सैमी, जिन्होंने मैच के बाद के साक्षात्कार में जोसेफ के व्यवहार को पहले ही अस्वीकार्य करार दिया था, ने युवा गेंदबाज के व्यवहार पर अपनी निराशा व्यक्त की।

न्यूज ब्रीफ

चैंपियंस ट्रॉफी के बाद वनडे से संन्यास लेंगे मोहम्मद नबी

नई दिल्ली। अफगानिस्तान के स्टार ऑलराउंडर मोहम्मद नबी आगामी चैंपियंस ट्रॉफी के बाद वनडे क्रिकेट से संन्यास लेने वाले हैं। अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड (एसीबी) के मुख्य कार्यकारी नसीब खान ने शुक्रवार को इस बात की पुष्टि की। नसीब ने कहा, हां, नबी चैंपियंस ट्रॉफी के बाद वनडे से संन्यास ले रहे हैं और उन्होंने बोर्ड को अपनी इच्छा से अवगत करा दिया है। उन्होंने मुझे कुछ महीने पहले बताया था कि वह चैंपियंस ट्रॉफी के बाद अपना वनडे करियर खत्म करना चाहते हैं और हम उनके फैसले का स्वागत करते हैं। चैंपियंस ट्रॉफी के बाद, मुझे लगता है कि उनसे अपने टी20 करियर को जारी रखने की उम्मीद है और अब तक यही योजना है। नबी ने अफगानिस्तान के लिए अपना पहला वनडे 2009 में स्कॉटलैंड के खिलाफ खेला और अपने डेब्यू मैच में अर्धशतक बनाकर अपनी छाप छोड़ी। उन्होंने 165 वनडे में 27.30 की औसत से 3549 रन बनाए और 171 विकेट भी लिए। शारजाह में चल रही तीन मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला के बांग्लादेश के खिलाफ पहले मैच में नबी ने शानदार 82 रन बनाए और अपनी टीम को 235 रन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जवाब में बांग्लादेशी टीम 143 रन पर सिमट गई। अफगानिस्तान की तरफ से अल्लाह गजनफर के छह विकेट लिए।

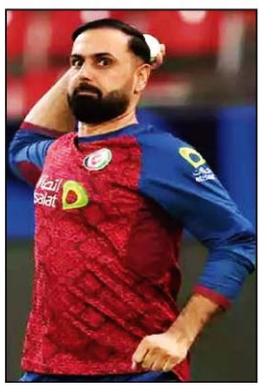

लेवांडोव्स्की की नजर 100वें चैंपियंस लीग गोल पर

वारसॉ। एफसी बार्सिलोना के स्ट्राइकर रॉबर्ट लेवांडोव्स्की, जिन्होंने बुधवार शाम को रेड स्टार बेलग्रेड पर 5-2 की जीत में अपना 98वां और 99वां चैंपियंस लीग गोल किया, की निगाहें अब अपने 100वें चैंपियंस लीग गोल पर हैं। लेवांडोव्स्की ने पहले हाफ में दो गोल किए। ब्रेक के बाद, पोलिश खिलाड़ी के पास हैट्रिक बनाने और चैंपियंस लीग में अपना 100वां गोल करने का मौका था, लेकिन वह लक्ष्य से चूक गए। 36 वर्षीय खिलाड़ी ने गुरुवार को पोलिश मीडिया से कहा, मैच के दौरान, मैंने यह नहीं सोचा कि मैंने पहले ही कितने गोल किए हैं। मैंने हैट्रिक बनाने का एक अच्छा मौका गंवा दिया, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि मेरे पास गोल करने के अवसर थे। मैच के बाद, कोच हंसी फ्लिक ने मुस्कुराते हुए कहा कि यह बेहतर होगा यदि मैं बार्सिलोना में हमारे स्टेडियम में प्रतियोगिता में अपना 100वां गोल करूं। लेवांडोव्स्की ने कहा, हमें इस बात से थोड़ी तकलीफ़ हुई कि हमने दो गोल खाए। हम उन परिस्थितियों में बेहतर प्रदर्शन कर सकते थे। लेकिन हम तीन अंक पाकर खुश हैं। बेलग्रेड में जीत के बाद, एफसी बार्सिलोना नौ अंकों के साथ चैंपियंस लीग ग्रुप स्टेज वर्गीकरण में छठे स्थान पर पहुंच गया। 26 नवंबर को, क्लब फ्रेंच टीम और सरप्राइज पैकेज ब्रेस्ट की मेजबानी करेगा।

चोंगकिंग महिला गोल्फ ओपन : झोउ, सरनपोर्न ने पहले दौर में बढ़त हासिल की

बीजिंग। 14 वर्षीय स्थानीय गोल्फ खिलाड़ी झोउ शियुआन ने गुरुवार को 2024 कोव चाइना स्पोर्ट्स लॉटरी चोंगकिंग महिला ओपन के पहले दौर के बाद चार अंडर 68 का कार्ड खेला और थाईलैंड की सरनपोर्न कटेसुवान के साथ शीर्ष पर पहुंच गईं। झोउ ने लगातार नौ पार के साथ शुरुआत करके स्थानीय प्रशंसकों को रोमांचित किया। फिर उसने बैक नाइन पर पांच बर्डी लगाई और केवल एक बोगी दर्ज की। झोउ ने कहा, यह एक शानदार दिन है, जिसमें शानदार स्कोर रहा, जो मेरी उम्मीदों से बढ़कर है। जीत के बारे में कुछ कहना अभी जल्दबाजी होगी, लेकिन मुझे पूरा भरोसा है। सरनपोर्न ने भी पांच बर्डी और एक बोगी दर्ज की। 19 वर्षीय खिलाड़ी सरनपोर्न ने कहा, मैंने खुशनुमा गोल्फ खेलने की कोशिश की, चीजों की अधिक उम्मीद नहीं की। मैंने बहुत सारे अच्छे पुट और अच्छे सेव किए। उन्होंने कहा, अगले दो दिनों के लिए मेरी रणनीति एक ही है, खुद से खुश रहना, गोल्फ़ खेलने में खुशी मनाना, कोई अति-अपेक्षा नहीं करना। अनुभवी चीनी गोल्फ़र पैन यानहोंग और 19 वर्षीय झांग युनक्सुआन ने 69 के स्कोर के साथ एक स्ट्रोक पीछे रहकर दिन समाप्त किया। ली मेंघन ने 70 का स्कोर करके पाँचवाँ स्थान प्राप्त किया, जबकि ली डोंगमेई, जू यिंग और लिन कियानहुई सहित खिलाड़ियों के एक समूह ने 71 का स्कोर करके दिन का समापन छठे स्थान पर किया।

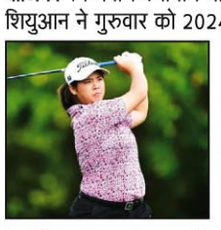

हैदराबाद में तेलुगू टाइटन्स के प्रशंसकों के सामने खेलना याद रहेगा : पवन सेहरावत

हैदराबाद

प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) सीजन 11 के हैदराबाद चरण के अंत के करीब पहुंचने के साथ, घरेलू पसंदीदा, तेलुगु टाइटन्स, जिनकी कप्तानी कप्तान पवन सेहरावत कर रहे हैं, ने हाल ही में जीत की हैट्रिक दर्ज करते हुए शानदार प्रदर्शन किया है। पीकेएल सीजन 11 में हैदराबाद में उनका अंतिम मुकाबला गत विजेता और तालिका में शीर्ष पर चल रही पुनेरी पलटन से होगा।

अपनी टीम के लिए शानदार फॉर्म में चल रहे पवन सेहरावत ने कहा कि युवा टीम भी अच्छा प्रदर्शन कर रही है, इसमें और सुधार की गुंजाइश है, और उन्होंने यह भी कहा कि वह खेल का काफी आनंद ले रहे हैं। उन्होंने कहा, हमने हाल के खेल जीते हैं, लेकिन हम यहाँ-वहाँ की गई छोटी-छोटी गलतियों को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते, और हम प्रशिक्षण में इस पर काम करेंगे। लेकिन पिछले 3-4 मैचों से मैं वास्तव में इसका लुत्फ़ उठा रहा हूँ। अपने दिमाग में दबाव के साथ खेल खेलना एक बात है, और दूसरी बात यह है कि खेल को इसलिए खेलना क्योंकि आप वास्तव में इसका आनंद लेते हैं, और मेरे लिए, हाल ही में यह बाद वाली बात रही है। तेलुगू टाइटन्स और खुद के लिए किस तरह से बदलाव आया, इस बारे में विस्तार से पवन ने कहा, जिस तरह से हमारे कोच (कृष्ण कुमार हुड्डा) ने हमें लगातार प्रेरित किया है, उससे टीम को और मुझे बहुत मदद मिली है। कई बार, एक वरिष्ठ खिलाड़ी और कप्तान के तौर पर, आप खेल के बारे में सोचते हैं और आपको पता होता है कि मैट पर चीजें गलत भी हो सकती हैं। लेकिन कोच ने मुझसे कहा कि उन्हें हम पर पूरा भरोसा है और उन्होंने हमें खुलकर खेलने को कहा। इससे हमें मैच से पहले तनाव से राहत मिली और इससे मुझे अच्छा महसूस हुआ और हम स्पष्ट दिमाग के साथ खेल में उतरने में सक्षम हैं और इससे बहुत मदद मिलती है। जब भी तेलुगू टाइटन्स पीकेएल सीजन 11 के दौरान मैट पर उतरी हैं, हैदराबाद के गाचीबोवली में जीएमसीबी इंडोर स्टेडियम में मौजूद प्रशंसकों ने उनका उत्साहवर्धन किया है, भले ही स्कोर घरेलू टीम के पक्ष में न रहा हो। समर्थन के बारे में तेलुगु टाइटन्स के कप्तान ने कहा, जब हम सीजन का पहला चरण पूरा करेंगे तो मैं निश्चित रूप से हैदराबाद की भीड़ के सामने खेलना मिस करूंगा क्योंकि प्रशंसक वास्तव में अच्छे हैं। यहां तक कि जब हम जीत नहीं रहे थे, तब भी उन्होंने हमारा समर्थन किया, चाहे वह स्टेडियम में हो या सोशल मीडिया पर, और मुझे हैदराबाद के लोगों का शुक्रिया अदा करना होगा। यहां तक कि नोएडा में भी हमारे बहुत सारे प्रशंसक हैं, और मुझे विश्वास है कि वे भी बड़ी संख्या में आएंगे।

गत चैंपियन स्विएटेक डब्ल्यूटीए फाइनल्स से बाहर; क्रेजिकोवा सेमीफाइनल में

रियाद। विश्व की दूसरे नंबर की खिलाड़ी इगा स्विएटेक गुरुवार को डब्ल्यूटीए फाइनल्स से बाहर हो गईं, जबकि बारबोरा क्रेजिकोवा ने कोको गॉफ को हराकर सेमीफाइनल में अपना स्थान सुरक्षित कर लिया। चेक विंबलडन चैंपियन ने गॉफ पर 7-5, 6-4 से जीत दर्ज की, जिससे स्विएटेक की खिताबी जीत की उम्मीद खत्म हो गई, जिन्हें ग्रुप स्टेज से आगे बढ़ने के लिए क्रेजिकोवा की हार की जरूरत थी। राउंड-रॉबिन प्ले के आखिरी दिन में एक जीत और एक हार के साथ, स्विएटेक की डारिया कसाटकिना पर 6-1, 6-0 की जीत ने उनके क्वालीफिकेशन के अवसरों पर कोई असर नहीं डाला। गॉफ यदि क्रेजिकोवा को हरातीं तो स्विएटेक सेमीफाइनल में पहुंच सकती थीं। हालांकि यह परिणाम नहीं हुआ और क्रेजिकोवा ने पहली बार डब्ल्यूटीए फाइनल के सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की की। ऑरेंज ग्रुप की विजेता के रूप में क्रेजिकोवा आगे बढ़ीं और शुक्रवार के अंतिम-चार चरण में झेंग किनवेन का सामना करेंगी, जबकि यूएसए की गॉफ उपविजेता के रूप में आगे बढ़ेंगी और सेमीफाइनल में उनका मुकाबला विश्व की नंबर एक खिलाड़ी आर्यना सबालेंका से होगा। मैच के बाद क्रेजिकोवा ने कहा, निश्चित रूप से यह मेरे लिए एक बड़ी जीत है। मैं अपने खेल और अपने प्रदर्शन से बहुत खुश हूं। यह वास्तव में एक बड़ा मैच था।

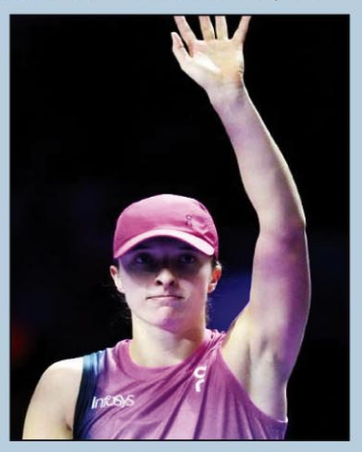

कोरिया मास्टर्स 2024: ताकुमा ओबायाशी को हराकर सेमीफाइनल में पहुंचे किरण जॉर्ज

नई दिल्ली

भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी किरण जॉर्ज ने शुक्रवार को जापान के ताकुमा ओबायाशी को हराकर कोरिया मास्टर्स बैडमिंटन टूर्नामेंट के पुरुष एकल सेमीफाइनल में प्रवेश किया। 24 वर्षीय भारतीय ने क्वार्टर फाइनल में पांचवें वरीय जापानी प्रतिद्वंद्वी को 39 मिनट तक चले मैच में 21-14, 21-16 से हराया।

इससे पहले, विश्व के 44वें नंबर के खिलाड़ी जॉर्ज ने दूसरे दौर में चीनी ताइपे के तीसरे वरीय ची यू जेन को 21-17, 19-21, 21-17 से हराया था।

जॉर्ज शनिवार को सेमीफाइनल में थाईलैंड के शीर्ष वरीय और विश्व के पांचवें नंबर के खिलाड़ी कुनलावुत विटिडसार्न से भिड़ेंगे, जिन्होंने चीन के लियू लियांग के खिलाफ 21-15, 21-11 से जीत दर्ज की।

1-1 स्कोरलाइन के बाद, पहले गेम में जॉर्ज हमेशा आगे रहे। जब जॉर्ज ने 15-6 की बढ़त हासिल की, तो ओबायाशी ने थोड़ा प्रतिरोध किया, जिससे अंतर 12-16 हो गया। लेकिन जापानी खिलाड़ी इतना ही कर पाए, क्योंकि जॉर्ज ने लगातार चार अंक हासिल करके पहला गेम जीत लिया।

दूसरा गेम काफी करीबी रहा, क्योंकि दोनों ने एक-दूसरे पर दबाव बनाया।

जॉर्ज पहले 7-3 से आगे थे, लेकिन ओबायाशी ने वापसी करते हुए स्कोर 8-8 कर दिया। उसके बाद, मुकाबला बराबरी का हो गया। लेकिन 17-16 से जॉर्ज ने लगातार चार अंक हासिल करके दूसरा गेम और मैच अपने नाम कर लिया। जॉर्ज इस टूर्नामेंट में भाग लेने वाले एकमात्र भारतीय शटलर हैं।

भारत के खिलाफ मैच के लिए प्रधानमंत्री एकादश के मुख्य कोच नियुक्त हुए टिम पेन

नई दिल्ली

क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) ने शुक्रवार को पूर्व ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर टिम पेन को 30 नवंबर से मनुका ओवल में भारत के खिलाफ होने वाले मैच के लिए प्रधानमंत्री एकादश टीम का मुख्य कोच नियुक्त किया है। पेन को कैनबरा के स्थानीय खिलाड़ी एरिन ओसबोर्न और जेसन मैकनेली का समर्थन प्राप्त होगा।

39 वर्षीय पेन ने 2018 से 2021 तक ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट टीम की कप्तानी की। दाएं हाथ के शीर्ष क्रम के बल्लेबाज और विकेटकीपर, पेन ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट का अभिन्न अंग थे। 2018 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ बॉल टैंपरिंग विवाद के बाद स्टीव स्मिथ से पदभार संभालने के बाद पेन ने ऑस्ट्रेलिया की कप्तानी की।

पेन ने क्रिकेट एसीटी से बातचीत में कहा, मुझे लगता है कि मेरे जैसे युवा कोच के लिए टीम का नेतृत्व करने का कोई भी मौका एक शानदार अवसर होता है, इसलिए मैं इसके लिए उत्सुक हूं। मैं ऑस्ट्रेलिया के कुछ सबसे प्रतिभाशाली युवा क्रिकेटरों के साथ काम करने के लिए भी उत्सुक हूं, इसलिए यह बहुत मजेदार होगा।

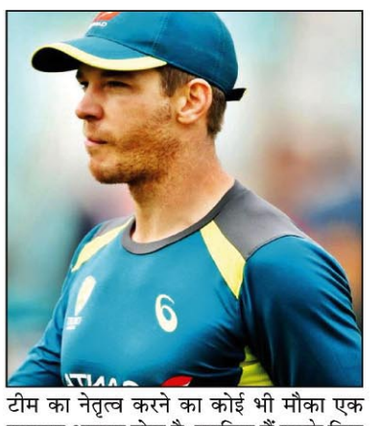

न्यूजीलैंड से करारी हार झेलने के बाद, भारत वापसी करने और खुद को सुधारने के लिए उत्सुक होगा। यह मैच 6 दिसंबर से एडिलेड ओवल में शुरू होने वाले बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी श्रृंखला के दूसरे टेस्ट से पहले आयोजित किया जाएगा।

कुश मैनी ने एक और सफल फॉर्मूला 1 टेस्ट पूरा किया, भारतीय एफ1 ड्रीम के करीब पहुंचे

दोहा

भारत के मोटरस्पोर्ट सनसनी कुश मैनी गुरुवार को कतर के लुसैल इंटरनेशनल सर्किट में फिर से एक्शन में दिखे। युवा ड्राइवर ने बीडब्ल्यूटी अल्पाइन एफ1 टीम के साथ अपने फ़ॉर्मूला 1 परीक्षण के हिस्से के रूप में ट्रैक पर कदम रखा, जो साओ पाउलो में सप्ताहांत के ग्रैंड प्रिक्स से डबल पोडियम पर आ रही है। गुरुवार का परीक्षण मैनी के लिए पिछले 6 महीनों में चौथा था। उन्होंने अब ऑस्ट्रिया, इटली, अबू धाबी और कतर में टीम के साथ उनकी फ़ॉर्मूला 1 कार में परीक्षण किया है।

कतर के बिल्कुल नए सर्किट में कई दिनों तक चले टेस्ट में मैनी ने पहली बार ट्रैक पर रेस लगाई, जहाँ वे अपने फॉर्मूला 2 सीज़न के आखिरी चरण के लिए जल्द ही फिर से एक्शन में आएँगे।

मैनी अबू धाबी में यास मरीना सर्किट में अपने टेस्ट के कुछ हफ़्ते बाद अपनी एफ1 कार में वापस आए, जहाँ उन्होंने एक और शानदार प्रदर्शन किया। बीडब्ल्यूटी अल्पाइन एफ1 टीम कार के साथ उनकी निरंतरता ने उन्हें एनस्टोन आधारित संगठन के लिए रिजर्व सीट के लिए शीर्ष दावेदार बना दिया है। इस साल के एफ2 वर्ग से एफ1 में तीन पुष्ट स्नातकों के साथ, कुश मैनी निकट भविष्य में इस बेहद प्रतिभाशाली पूल में एक और जोड़ हो सकते हैं।

इस महीने के अंत में, कुश अपनी फॉर्मूला 2 रेस के लिए कतर लौटेंगे। 2024 सीज़न में सिर्फ़ दो रेस बची हैं, कुश की इनविक्टा रेसिंग टीम कंस्ट्रक्टर्स चैंपियनशिप को सुरक्षित करने की स्थिति में है। इससे कुश फॉर्मूला रेसिंग चैंपियनशिप जीतने वाले पहले भारतीय बन जाएँगे। इस साल एक रेस जीत सहित 5 पोडियम के साथ, कुश ने अपनी टीम को इस स्थान पर पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अपने इस सीज़न के साथ, भारत को आखिरकार 13 साल के लंबे अंतराल के बाद एफ1 ग्रिड पर एक ड्राइवर मिल सकता है।

एमपीएस, आरएसडी, सेंट मीरा और बोनी ऐनी की टीमें जीतीं

मुरादाबाद

दिल्ली रोड स्थित मॉडर्न पब्लिक स्कूल में चार दिवसीय ब्रॉससिटी सहोदय इंटर स्कूल अंडर 19 क्रिकेट टूर्नामेंट का शुक्रवार को तीसरे दिन का शानदार प्रदर्शन रहा। मैच का शुभारंभ मुख्य अतिथि के रूप में सीआरपीएफ के कमांडर राजेंद्र कुमार द्वारा किया गया। स्कूल के प्रशिक्षक शाहवेज अली ने बताया कि प्रतियोगिता की शुरुआत बहुत ही रोमांचक रूप से हुई।

दूसरे दिन का पहला क्वार्टर फाइनल मुकाबला आर एस डी एकेडमी और सेंट मैरी कॉन्वेंट स्कूल के बीच खेला गया जिसमे सेंट मैरी कान्वेंट स्कूल ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया और आर एस डी एकेडमी ने 12 ओवर में 62 रनों का लक्ष्य दिया, लक्ष्य का पीछा करने उतरी सेंट मैरी कॉन्वेंट स्कूल की टीम 11 ओवर में शेष 42 रन पर आल आउट हो गई।

दूसरा मैच शिरडी साईं पब्लिक स्कूल बनाम मॉडर्न पब्लिक स्कूल के बीच खेला गया जिसमें मॉडर्न पब्लिक स्कूल की टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया बल्लेबाजी करने उतरी मॉडर्न पब्लिक स्कूल की टीम ने 12 ओवर में 163 रनों का लक्ष्य दिया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी शिरडी साई की टीम 4 विकेट के नुक्सान पर 12 ओवर में 88 रन ही बना पाई। एमपीएस की टीम को विजय प्राप्त कर सेमीफाइनल में प्रवेश किया।

तीसरा मैच बोनी ऐनी पब्लिक स्कूल बनाम शिरडी साई विंग 2 के बीच खेला गया। जिसमे शिरडी साई की टीम ने टॉस जीतते हुए पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया, जिसमें निर्धारित 12 ओवर में 135 रन का टारगेट दिया, लक्ष्य का पीछा करने उतरी बोनी ऐनी की टीम ने 12 ओवर में 136 रन बनाकर 1 विकेट के साथ मैच में जीत हासिल कर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। चौथा मैच गांधी नगर पब्लिक स्कूल और सेंट मीरा एकेडमी के मध्य खेला गया, जिसमे सेंट मीरा एकेडमी ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी की व 12 ओवर में 139 रन बनाकर 140 रन का लक्ष्य दिया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी गांधी नगर की टीम 11.2 ओवर में 114 रन पर ऑल आउट हो गई। सेंट मीरा एकेडमी ने सेमीफाइनल में प्रवेश किया।

पांचवां मैच एस बी एस स्कूल और आर एस डी एकेडमी के मध्य खेला गया जिसमें आरएसडी एकेडमी ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी की और 12 ओवर में 133 रन का लक्ष्य दिया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी एसबीएस स्कूल की टीम ने चक्कों के साथ जोरदार शुरुआत की, परंतु लक्ष्य को प्राप्त किए बिना ही 12 ओवर में 88 रन ही बना पाई।

आयोजन मंडल में सौरभ शर्मा, सलीम खान, कीर्ति पाल, निहाल इब्राहिम उपस्थित रहे। इस अवसर पर प्रधानाचार्य शकील अहमद का विशेष रूप से सहयोग रहा।

हिमाचल में एक महीने बाद मनाई जाती है बूढ़ी दिवाली

देश और दुनिया में दिवाली का पर्व मनाया जा चुका है लेकिन भारत में ऐसे कई इलाके हैं, जहां दिवाली अभी एक महीने बाद मनाई जाएगी। हिमाचल प्रदेश के कुछ इलाकों में दिवाली का जश्न अभी बाकी है। सिरमौर के गिरिपार इलाके, शिमला के कुछ गांवों और कुल्लू के निरमंड में बूढ़ी दिवाली मनाई जाती है। इस बार यह त्योहार 4 दिसंबर दिन बुधवार को मनाया जाएगा। इसी से जुड़ा निरमंड का ऐतिहासिक बूढ़ी दिवाली मेला भी काफी मशहूर है। इस बार यह मेला एक से चार दिसंबर तक लगेगा। जिन इलाकों में बूढ़ी दिवाली का त्यौहार मनाया जाता है, वहां सर्दियों में बेशुमार बर्फ पड़ती है और तापमान माइनस में चला जाता है। ऐसे में वहां बेहद मुश्किल हालातों में लोग रहते हैं और बर्फबारी के बाद आज भी उनका संपर्क बाकी दुनिया से काफी हद तक सीमित हो जाता है। माना जाता है कि इन जगहों पर भगवान राम के अयोध्या पहुंचने की खबर एक महीना देरी से मिली थी। पहाड़ी लोगों ने जब यह सुखद समाचार सुना तो उन्होंने देवदार और चीड़ की लकड़ियों की मशालें जलाकर रोशनी की और खूब नाच-गाना करके अपनी खुशी जाहिर की। तभी से यहां बूढ़ी दिवाली मनाने की परंपरा चल पड़ी। लोग आज भी दिवाली की अगली अमावस्या को इस त्योहार को मनाते हैं। गिरिपार में बूढ़ी दिवाली को *मशराली* के नाम से मनाया जाता है। बूढ़ी दिवाली पर यहां नाटियां, रासा, विरह गीत भयूरी, परोकेड़िया गीत, स्वांग के साथ हुड़क नृत्य करके जश्न मनाते हैं। पहाड़ों के कुछ गांवों में बूढ़ी दिवाली पर बढ़ेचू नृत्य करने की भी परंपरा है। कुछ जगहों पर आधी रात में आग जलाकर बुड़ियात नृत्य किया जाता है। इसके बाद लोग एक दूसरे को सूखे व्यंजन मूड़ा, शाकुली, चिड़वा, अखरोट बाटकर बूढ़ी दिवाली की बधाई देते हैं। यहां पर शिरगुल देवकी की गाथा भी गाई जाती है और इस मौके पर पुरेटुआ का गीत गाना जरूरी माना जाता है। हिमाचल के कुछ गावों में यह त्योहार एक सप्ताह तक मनाया जाता है। बूढ़ी दिवाली में दीपक जलाने के साथ साथ हाथों में जलती हुई मशालें लेकर यह उत्सव मनाया जाता है। इस दिन लोग अपने यहां के लोक गीत गाते हैं और छोटे बड़ों का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। साथ ही यहां ट्रेडिशनल डांस भी किया जाता है और कई खास पकवान का आनंद भी लेते हैं। तीन से पांच दिन तक चलने वाले इस त्योहार में मेहमानों की खूब खातीरदारी की जाती है। बूढ़ी दिवाली के पर्व पर इन पंचायतों में पुरातन संस्कृति की झलक देखने को भी मिलती है। बूढ़ी दिवाली मनाने की परंपरा सतयुग से चली आ रही है और इसका वर्णन श्रीमद्भगवद्गीता में देखने को मिलता है। श्रीमद्भगवद्गीता कथा के अनुसार, वृत्तासुर नामक राक्षस के अत्याचार से परेशान होकर सभी देवी देवता ब्रह्माजी के पास पहुंचे थे। ब्रह्माजी ने कहा कि इस राक्षस का वध महर्षि दधीची के अस्थि पिंजर से बने अस्त्र से हो सकता है। तब सभी महर्षि दधीची के पास पहुंचे और महर्षि ने अपने योगबल से प्राण त्यागे। फिर देवताओं ने महर्षि दधीची के अस्थि पिंजर से दिव्यास्त्र बनाकर हिमाचल की पहाड़ियों के ऊपर वृत्तासुर का अंत किया। इससे प्रसन्न होकर मार्गशीर्ष अमावस्या के दिन मशालें जलाकर नाचना शुरू कर दिया, तभी से यहां बूढ़ी दिवाली मनाने की परंपरा चली आ रही है।

द साबरमती रिपोर्ट का ट्रेलर रिलीज होते ही कर रहा है ट्रेंड

भारत के इतिहास को नया मोड़ देने वाली एक घटना की सच्चाई जानने के लिए तैयार हो जाइए। द *साबरमती रिपोर्ट* का मोस्ट अवेटेड ट्रेलर रिलीज हो चुका है और यूट्यूब पर 24 घंटे से ज्यादा समय से ट्रेंड कर रहा है। साथ ही इसे सभी प्लैटफॉर्म पर 16 मिलियन से ज्यादा व्यूज हासिल चुके हैं। फिल्म में विक्रांत मैसी, राशी खन्ना और रिद्धि डोगरा ने सच की तलाश में जुटे पत्रकारों की भूमिकाओं को गहराई और सच्चाई के साथ निभाया है। उनके पात्र न्याय की खोज में लगे ऐसे लोगों के रूप में पेश किए गए हैं, जो घटना की सच्चाई उजागर करने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं। मैसी, खन्ना और डोगरा की शानदार परफॉर्मेंस और ट्रेलर की दमदार प्रस्तुति से ऐसा लग रहा है कि द साबरमती रिपोर्ट इस घटना की एक दिल को छू लेने वाली, लेकिन असल सच्चाई पेश करेगी।

पश्चिम बंगाल में पत्नी को घुमा लाएं ये तीन रोमांटिक जगहें, खुश हो जाएंगी आपकी पार्टनर

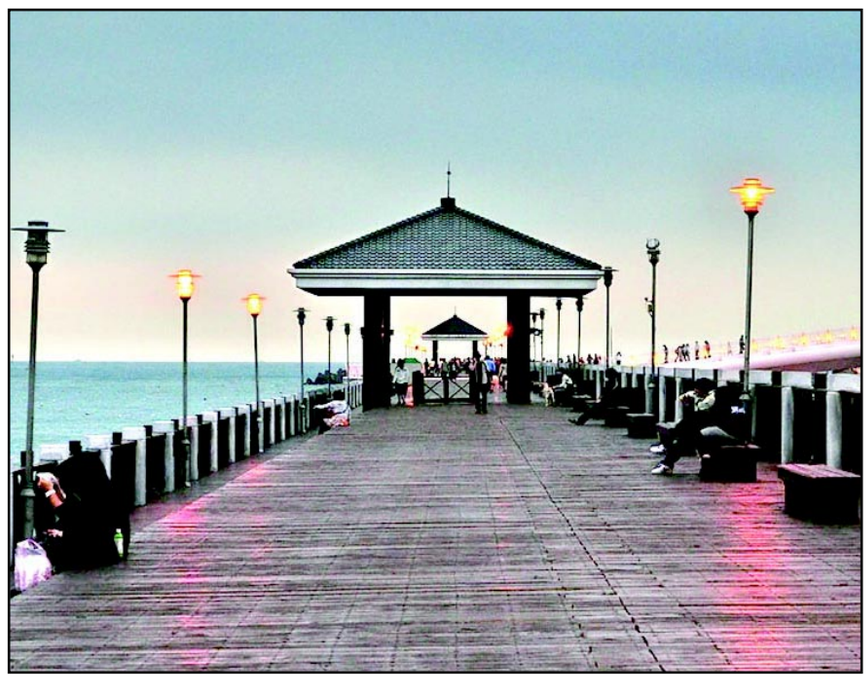

भारत का पश्चिम बंगाल बेहद खूबसूरत राज्य है। यहां पर घूमने के लिए कई फेमस जगहें हैं। जहां पर आप अपनी पत्नी के साथ अकेले क्वालिटी टाइम बिता सकते हैं। अक्सर पत्नियों को यह शिकायत रहती है कि उनके पति कहीं घुमाने नहीं ले जाती हैं। ऐसे में पत्नियां हर वीकेंड पर अपने पति के साथ घूमने जाने की जिद करती हैं। लेकिन अब आपकी पत्नी को आपसे कोई शिकायत नहीं होगी। क्योंकि आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको पश्चिम बंगाल की कुछ रोमांटिक जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पर आप अपनी पत्नी के साथ जा सकते हैं।

शंकरपुर : अगर आपके रिश्ते में सुकून और शांति की जरूरत है, तो आपको अपनी पत्नी के साथ शंकरपुर जाने का प्लान बनाना चाहिए। क्योंकि इससे अच्छा ऑप्शन नहीं होने वाला है। शंकरपुर में स्थित समुद्रतट आपके रिश्ते में और भी जान भर देंगे। यहां पर आप अपने पार्टनर के साथ सुकून के पल बिता सकते हैं। पत्नी के साथ आप यहां पर वीकेंड पर जाने का प्लान बना सकते हैं। आपको भी यह जगह बहुत पसंद आएगी। पश्चिम बंगार अपनी अपार प्राकृतिक सुंदरता के लिए भी जाना जाता है। यहां के सुंदर और शांत समुद्र तटों की चर्चा पूरे भारत में होती है। यहां पर वीकेंड में समुद्र किनारे समय बिताना बहुत पसंद करते हैं। यह जगह शाम के समय घूमने के लिए अच्छी जगह है।

रवींद्र सरोवर : इसके अलावा आप वीकेंड पर पत्नी के साथ घूमने के लिए रवींद्र सरोबर भी बेस्ट जगह है। यहां का ढाकुरिया झील देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। लेकिन अगर आप शहर में हैं, तो फिर आपको यहां पर जरूर आना चाहिए। शहर की सड़कों के शोर-शराबों से दूर यह झील सुकून का एहसास करवाती हैं। यहां की हरियाली और शांति लोगों को बहुत पसंद आती हैं। ऐसे में आप यहां पर अपने परिवार के साथ आने का प्लान बना सकते हैं।

नलबन : आप अपनी पत्नी के साथ कोलकाता का नलबन झील भी देखने जा सकते हैं। झील के किनारे की यह जगह हरियाली और मनमोहक नजारों से भरा है। आप यहां पर सुकून के कुछ पल बिता सकते हैं। नलबन को कपल्स के लिए रोमांटिक जगहों में से एक माना जाता है। आप यहां के खूबसूरत नजारों को देखने के साथ ही नाव की सवारी का भी लुत्फ उठा सकते हैं।

অসম চৰকাৰ

মুকলি হ'ল মিছন বসুন্ধৰা ৩.০

মোৰ মাটি, মোৰ অধিকাৰ

সেৱা প্ৰসাৰিত ৰূপত শ্ৰেণী পৰিৱৰ্তন

বিশেষত্বসমূহ

- কৃষিভূমিৰ পৰা অনাকৃষিভূমি শ্ৰেণীৰ পৰা তথা এটা অনাকৃষিভূমিৰ শ্ৰেণীৰপৰা আন এটা শ্ৰেণীলৈ সহজভাৱে পৰিৱৰ্তনৰ সুবিধা
- এখন আৱেদনৰ জৰিয়তেই একক পট্টাৰ অন্তৰ্ভুক্ত একাধিক দাগৰ শ্ৰেণী পৰিৱৰ্তনৰ সুবিধা
- শ্ৰেণীসমূহৰ পৰিৱৰ্তনৰ ক্ষেত্ৰত নতুনকৈ নিৰ্ধাৰিত প্ৰিমিয়ামৰ হাৰ

কিদৰে সুবিধা লাভ কৰিব ?

sewasetu.assam.gov.in
প'ৰ্টেলৰ জৰিয়তে লগ ইন কৰি আধাৰ আৰু পান কাৰ্ডৰ সহায়ত e-KYC সম্পন্ন কৰি আৱেদন সম্পূৰ্ণ কৰিব পাৰে

অথবা নিকটৱৰ্তী ৰাজহুৱা সুবিধা কেন্দ্ৰলৈ গৈ আৱেদন কৰিব পাৰে

দাখিল কৰিবলগীয়া বাধ্যতামূলক নথিসমূহ

- খাজনা আদায়ৰ ৰচিদ
- শপতনামা
- বিক্ৰেতা আৰু ক্ৰেতাৰ স্থিৰচিত্ৰ

আৱেদনৰ অন্তিম তাৰিখ

৩১ ডিচেম্বৰ, ২০২৪

বি:দ্ৰ: উপ-নিৰ্বাচনৰ বাবে চলি থকা এমচিচিৰ পৰিপ্ৰেক্ষিতত এই সেৱাসমূহ নগাঁও, বঙাইগাঁও, বিশ্বনাথ আৰু কাছাৰ জিলাত প্ৰযোজ্য নহয়

ৰাজহ আৰু দুৰ্যোগ ব্যৱস্থাপনা বিভাগ, অসম চৰকাৰ

তথ্য আৰু জনসংযোগ সঞ্চালকালয়, অসমৰ দ্বাৰা প্ৰচাৰিত

Connect with us @diprassam dipr.assam.gov.in

অসম বার্তা ছাবস্ক্রাইব কৰিবলৈ ৭৬৩৬৮৩৪৯৪৩ ত Assam লিখি ৱাটছএপ কৰক

-- Janasanyog /D/8520/24/09 November 2024

मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश शर्मा द्वारा अजय त्यागी के लिए ईको प्रिंटिंग प्रेस, पोस्ट एवं पीएस : गड़चुक, कटाबाड़ी मस्जिद के पास, कामरूप (मेट्रो), गुवाहाटी-35 से मुद्रित एवं **गुड लक पब्लिकेशंस, हाउस नं. 30, डी. नेउग पथ, डोना प्लैनेट के नजदीक, एबीसी, जीएस रोड गुवाहाटी-5 से प्रकाशित।**
संपादक : राकेश शर्मा, मोबाइल : 94350-14771, 97070-14771 ● **कार्यकारी संपादक : डॉ. आसमां बेगम ● फोन : 0361-2960054 (संपादकीय)** e-mail : viksitbharatsamacharghy@gmail.com, **(सभी विवाद सिर्फ गुवाहाटी न्याय क्षेत्र के अधीन)**